सोना-उगले मिट्टी

देश की सर्वाधिक लोकप्रिय कृषि पत्रिका

अप्रैल व मई, 2026 (संयुक्त अंक)

मूल्य : 25/– रूपये

insecticides (INDIA) LIMITED

medisquad CLASSES INDORE

JAIN Jain Irrigation Systems Ltd.

TRACTOR BRAND IIL

CHAPERONE

सैफरॉन

करे फसल की

POWER ON

insecticides (INDIA) LIMITED | हर क़दम, हम क़दम

खरीफ फसल विशेष

62 वर्षों से

स्थापना 1963

500 से अधिक प्रकार की

ऑटोमैटिक मशीनें

ग्राइंडर • मिक्सर • इम्पेक्ट पल्वराइजर

M.S. and S.S.

3000 से अधिक शहरों एवं विदेशों में कार्यरत हैं

• ऑल ग्राइंडिंग (गीली/सूखी) • आटा चक्की (पत्थर/बिना पत्थर)
• ग्रेडर छालना (बड़े/छोटे) • कोल ब्रिकेट्स • वाइब्रेटिंग सिफ्टर (छालना) • पेलेट
• राईस मिल • पोल्ट्री फीड प्लांट्स • ऐलीवेटर • चर्म • डिस्टोनर • डिकार्टिकेटर
• मावा • आमरस • रोस्टर • पापड़ • बूंदी-लड्डू मेकिंग • पैकिंग • लकड़ी गैस भट्टी
• नमकीन • सुपारी • सर्फ-साबुन • मैग्नेटिक डिस्टोनर मशीनें

पेपर कटिंग भेजने पर 5% स्पेशल डिस्काउंट

निर्माता एवं विक्रेता : सभी मशीनों के कैटलॉग एवं रेटलिस्ट निःशुल्क मंगवाएं

पंजाब इंजीनियरिंग इन्दौर

ऑफिस/फैक्ट्री: 251/1, इंदिरा नगर वाली गली, लाबरिया भेरू, धार रोड, इन्दौर (म.प्र.)-452 002
ऑफिस: 26, खालसा स्टेडियम, धार रोड, इन्दौर, E-mail : punjabei@gmail.com

98260 53289 | 94253 20160 | 93292 05352

Amba Plastolite

Wide Array of High Quality HDPE Bottles

... copyright and design registered with us ...

we serve bottles with

Adm. Office
71 Anand Nagar,
Behind Sapna Sangeeta,
Indore, 452001
M.P. - India

Works
128 Bardana Mandi,
Patthar Mudla Road,
Palda, Indore, 452001
M.P. - India

Contact :
+91 98260 68066

Whatsapp :
+91 98260 68066

Website: www.ambaplastolite.com | email : ambaplasto@gmail.com

Dr. N.N. Jain
Padma Shri Awardee
Soya Man of the Millennium
Founder Chairman PRESTIGE Group

NAAC A++

PRESTIGE IS ABOVE ALL

#PRESTIGE HAIN HUM

HIGH QUALITY EDUCATION

MBA	BBA	BBA Foreign Trade	BCA
BCOM	MA	BA	LLM
LLB	BA LLB	BBA LLB	MMC Digital Media
	BAJMC	PhD	

PIMR INDORE JOINS INDIA'S ELITE UNIVERSITIES
BRINGING GLOBAL **TOP-20** STANDARDS TO A **32- YEAR** ACADEMIC LEGACY

PRESTIGE
INSTITUTE OF MANAGEMENT AND RESEARCH
PIMR, INDORE
DEEMED TO BE

78699 99297 www.pimrindore.ac.in

AGRO VISION
Workshops, National Expo & Conference

JOIN THE FUTURE OF FARMING AT CENTRAL INDIA'S LARGEST AGRI SUMMIT

November 27-30, 2026
Nagpur

Why Exhibit at Agrovision 2026 ?

- Massive Farmer Outreach.
- High-Impact Networking.
- Product Launches.
- Specialised Pavilions.

As the premier platform for agricultural transformation, Agrovision offers an unparalleled opportunity for your brand to connect with the heart of India's farming community.

Following the record-breaking success of our 2025 edition, which welcomed over **3.25 lakh farmers** and **500+ participating organisations,** we invite you to be a part of the milestone **17th edition.**

Join 500+ Organisations Transforming Indian Agriculture.

Contact us to know about the Sponsorship and Exhibiting Opportunities.

| **Nagpur:** +91 97647 96709 | +91 88060 70903 | **New Delhi:** +91 98992 08916 | +91 83838 53534
| **Mumbai:** +91 98187 08445 | **Pune:** +91 99232 02884 | **Nashik:** +91 99580 36410

: agrovision@agrovisionindia.in : www.agrovisionindia.in

Media Partner सोना-उगले मिट्टी

Scan For Enquiry

#Agrovision2026 Follow / @agrovisionindia 8383853534

Organised By
AGROVISION FOUNDATION MM ACTIV Sci-Tech Communications

Supported by

Shri Shivaji Education Society, Amravati

Shri Shivaji Agriculture College, Amravati

is organizing

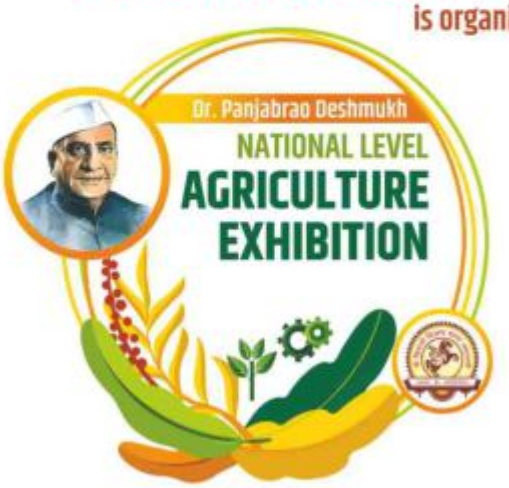

Dr. Panjabrao Deshmukh NATIONAL LEVEL AGRICULTURE EXHIBITION 2

25th to 28th December, 2026

On the Occasion of "128th Birth Anniversary of Dr. Panjabrao Alias Bhausaheb Deshmukh"

Venue

Shri Shivaji Agriculture College Farm, Morshi Road, Amravati (MS) - 444603

Organizers

- Shri Shivaji Agriculture College, Amravati
- Shri Shivaji Horticulture College, Amravati
- Shri Shivaji College of Agril. Biotech., Amravati
- Janata Krushi Vidyalaya, Amravati
- Rural Institute, Amravati

CO-ORGANISER :

KRUSHI BHARAT GROUP, AMRAVATI.

9657725751, 7875713975, 9673153367

Media Partner
सोना-उगले मिट्टी

कृषि उद्यानिकी, वानिकी, घरेलू बागवानी, मत्स्य पालन, पोल्ट्री, पशु पालन, खाद्यान्न, कृषि मशीनरी एवं यंत्र, स्वास्थ्य शिक्षा, बैंकिंग, परिवहन एवं ग्रामीण विकास पर आधारित सम्पूर्ण ग्राम्य पत्रिका

सोना - उगले मिट्टी
कृषि पत्रिका

सोना-उगले मिट्टी

ई.ए.–188, स्कीम नं. 94, रिंग रोड़,
भारत पेट्रोल पंप के सामने, इन्दौर–452010 (म.प्र.)
फोन : 0731–7965405, मो. : 9826055852, 7224943188
E-mail : devrajchaudhary@rediffmail.com, info@sonauglemitti.com
sonauglemitti25@gmail.com website : www.sonauglemitti.com

वर्ष–16 | अप्रैल–मई, 2026 | अंक :180-181 |

प्रधान संपादक : **देवराज चौधरी** –098260 55852

संरक्षक मण्डल

कर्नल हर्ष कौल
पं. राजेंद्रप्रसाद पाठक (बाबई वाले)
श्रीमती काजल दीक्षित
नाहर सिंह
भारत गुप्ता

सम्पादकीय सलाहकार (कृषि विशेषज्ञ, तकनीकी लेख)

डॉ. एस.एस. तोमर
डायरेक्टर रिसर्च, ज. ने. कृ. वि. विद्यालय, जबलपुर
मो. 94254-69184

डॉ. विनोदलाल एन. श्रॉफ
वरिष्ठ कृषि विशेषज्ञ, पूर्व डीन, कृषि महाविद्यालय, इन्दौर
फोन : 0731-2490730, मो. 94259-00896

श्री एस.एस. भटनागर 'कृषिरत्न'
सलाहकार, म.प्र. राज्य सहकारी बीज महासंघ,
पूर्व क्षेत्रीय प्रबंधक, राष्ट्रीय बीज निगम, भारत सरकार
(म.प्र. एवं छत्तीसगढ़)
मो. 94256-02483

श्री जी.पी. सक्सेना (पूर्व डायरेक्टर सोपा)
पूर्व प्रबन्ध निदेशक, म.प्र. राज्य बीज प्रमाणिकता
फोन : 0731-4003978, मो. 91790-84550

डॉ. ओ.आर. मिश्रा मो. 094250–59127
कृषि विशेषज्ञ, से.नि. प्रोफेसर, कृषि महा. वि., इन्दौर

डॉ. ए.एम. राजपूत डीन, कृषि महाविद्यालय, इंदौर
फोन : 0731-2591739, मो. 94253-46029
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर

डॉ. आर.के. बघेरवाल
प्रोफेसर, पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महा.वि. महू, जि. इन्दौर
फोन : 07324-274150, मो. : 94250-57170

डॉ. ए.आर. वर्मा
प्रोफेसर, पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महा.वि., महू, जि. इंदौर
फोन : 07324-275098, मो. 99260-29370

भानुप्रतापसिंह
पूर्व वरिष्ट वैज्ञानिक एवं प्रियासिंह शस्य विज्ञानी,
कृषि क्लीनिक केन्द्र शहडोल (म.प्र.) मो. 9300240113

मैग्जीन डिजाइन एवं ग्राफिक्स
गुफरान अंसारी
मो. : 88713 71449

विशेष मार्गदर्शक
राजेन्द्र सिंह भदौरिया
मो. : 99263 23857

अनुक्रमणिका

हमारे प्रतिनिधि	04
संपादकीय	05
पत्र सम्पादक	06
सोयाबीन की नवीन प्रजातियां	07
कपास की उन्नत खेती	09
मक्का की खेती	11
धान की उन्नत खेती	12
बीजोपचार	13

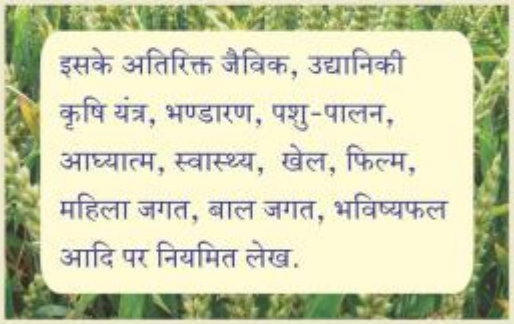

इसके अतिरिक्त जैविक, उद्यानिकी कृषि यंत्र, भण्डारण, पशु-पालन, आध्यात्म, स्वास्थ्य, खेल, फिल्म, महिला जगत, बाल जगत, भविष्यफल आदि पर नियमित लेख.

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक : देवराज चौधरी के लिए
स्पूतनिक प्रिंटिंग प्रेस, बी–9, फिरोज गांधी प्रेस परिसर,
इन्दौर (म.प्र.) से मुद्रित
ई.ए.–188, स्कीम नं. 94, रिंग रोड़,
भारत पेट्रोल पम्प के सामने, इन्दौर–452010 (म.प्र.)
सम्पादक : देवराज चौधरी, मो. : 9826055852, 7224943188

हमारे कार्यालय :

ग्वालियर ऑफिस :	नोयडा ऑफिस :	छत्तीसगढ़ ऑफिस :	पूना ऑफिस :	दिल्ली (एन.सी.आर.)	राजस्थान
हेमन्त चौधरी (ब्यूरो चीफ) चौधरी का बाड़ा, पुलिस मेस रोड कम्पू, लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.) फोन : 0751-2379232 मोबाईल : 98270 48400	तनुश्री अनिकेत सिंह, ह.नो. 4, ब्लॉक 13, नियर डीटीसी बस स्टैंड, कोटला विलेज, मयूर विहार फेस-1, ईस्ट दिल्ली-110091 मो. 8376881227	तुलसीराम नामदेव ब्यूरो चीफ, छत्तीसगढ़ मकान नं. 1, आरडीए कॉलोनी, टिकरापारा, रायपुर 492001 (छ.ग.) मो. 0810943815, 09329601368	सचिन दरेकर जी एफ-38, सी विंग, कुणाल प्लाजा, गगनगिरी पथ, शिवाजी चौक, चिंचवड स्टेशन (पूर्व), पुणे-411019 मो. : 09850643651	सारिका सागर 105 ए-ब्लॉक, जहांगीरपुरी गंज, आजादपुर मंडी, दिल्ली मो.: 07701971499 मो.: 09953010468	शिवम पटेल अमृत संजिवनी हर्बल 20, अरीहंत कॉम्प्लेक्स, फतेहपुर चौराहा, उदयपुर (राज.) मो.: 09799931200, 09602635727 E-mail:amritstevia@gmail.com

हमारे प्रतिनिधि :

लाखनसिंह गेहलोत
एल जी एग्रो एण्ड इलेक्ट्रॉनिक्स
कृष्णा मार्केट के सामने, एम जी रोड, इंदौर नाका, देपालपुर फोन : 07322-225615 मो : 94251 90916

राजेश परमार (गौतमपुरा तह.देपालपुर)
राजश्री कृषि सेवा केंद्र
गीता भवन, **गौतमपुरा**
तह. देपालपुर जिला इंदौर
फोन : 07322-314888
मो.: 9907700136

नरोत्तम चौधरी (हातोद क्षेत्र)
चौधरी कृषि सेवा केंद्र
बस स्टेंड, **हातोद**
जिला इन्दौर
मो. : 98939 29115

सोभरणसिंह कौरव
घाटीगांव, जि. ग्वालियर (मप्र)
मो. : 94257 77980

विवेक रघुवंशी
विवेक बीज भंडार
ए.बी. रोड, लुकवासा,तह. कोलारस
जि. शिवपुरी म.प्र. मो. 09993272205

पवन कुमार पालीवाल
मेसर्स अशोक कुमार पवनकुमार पालीवाल
अनाज मंडी, बीनागंज, जि.-गुना
फोन. 07546-240472
मो.: 9425134491

सुरेश सिंह रघुवंशी
संगम कृषि सेवा केंद्र,
सरकारी कृषि फार्म के सामने,
एबी रोड, गुना (मप्र)
फो : 07542 400268
मो : 98931 25268

मुकेश कुमार केवट
केवट कृषि सेवा केन्द्र, कुंभराज, जि. गुना
मो. 09098458803

दीपेंद्र रघुवंशी
जी.एस. ऑटोमोबाईल,
ए.बी. रोड, बदरवास
जि.-शिवपुरी (म.प्र.)
फोन. 07495-245310,
मो.: 09425136320

सुनील गुप्ता
ग्राम-लोहारी, तह. कुक्षी,
जिला-धार (म.प्र.)
मो. 09755741145

तेजराम जाखड़
जाखड़ एग्रो एजेंसी
छोटा नागदा, तह. बदनावर जिला धार मो. : 99931 10351

द्वारकाप्रसाद पाठक
द्वारका निवास भवानी माता रोड़,
खण्डवा (म.प्र.)
मो. 09200303237

विभाष खेड़ेकर
ग्राम ब्राम्हणगांव तह.ठीकरी जिला
बड़वानी-451660 (म.प्र.)
मो. : 99931 30699

योगेश गोस्वामी
ग्रा.पो. भामपुरा
तह महेश्वर जिला खरगोन (मप्र)
मो : 098265 99130

दिनेश अग्रवाल
अग्रवाल मशीनरी स्टोर, 418/3 मेन रोड़, आर.एन. काम्पलेक्स, हरदा (म.प्र.)
फोनः 07577-222077,222434
मो.94250-42277

भवानीशंकर जोशी
C/o सत्ती वाला इंटरप्राइजेस, तहसील के सामने, बड़नगर
निवासः चन्द्रशेखर, आजाद चौक, बड़नगर,
जिला -उज्जैन मो. 09009299913

बद्रीलाल जाट
जाट श्री ट्रेडर्स
उज्जैन रोड, टेलीफोन ऑफिस के पास,
बड़नगर, जिला- उज्जैन
मो. 09300837591

सुनिल कनासिया
महू (म.प्र.)
मो.: 09589633595

कमलसिंह आंजना
ग्राम -सांकलीकाड़ा, पो. पिपलिया,
यामाहा, ति. घटिया
जिला-उज्जैन (म.प्र.)
मो. 098269-34854

बालमुकुंद चौरसिया
ग्राम : **भाटपचलाना**,
तह. बड़नगर जिला **उज्जैन** (मप्र)
फोन : 07367-263739
मो. : 99773 30521

शिवम लौहार (शहर क्षेत्र)
244/1, स्टेशन रोड़, **खाचरोद**
जिला उज्जैन (मप्र)
मो. : **09617949959, 08305626412**

फिरोज पटेल
बिलोदा नायता, पोस्ट-तह. सांवेर जिला इंदौर
मो. 09926078602

ब्रजबिहारी वाजपेई
510, न्यू कटनी, एनकेजे
राजा किराना स्टोर्स
जि : कटनी (मप्र)
फो : 07622 237084
मो : 94243 22101

शब्बीर पिता हाजी राजुबा अजमेरी
ग्राम सेमली, पोस्ट-मालिया खेर खेड़ा, तह. जिला- मन्दसौर-458895 फोन : 07422-284913 मो. 9753027568,

शीतल जैन
515, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी
कोटा (राजस्थान)
मो. 09828090283

मोतीलाल शर्मा
गोकुलपुरा वार्ड नं. 11, कलवाड रोड
तेजाजी मंदिर के पास, श्री शर्मा फ्लोर मील
पो.- मीनावाला, **जयपुर** (राज.)

अरविन्द दांगी
मां विजासनी कृषि सेवा केंद्र
मंडी गेट अन्नपूर्णा के पास,
सोनकच्छ, जि. देवास (मप्र)
मो : 093013 91395

शाद अहमद खान
मकान नं. 58, वार्ड नं. 23
सुल्तान डेयरी के सामने,
शहडोल फोन : 07652-230230
मो. 9329411200.

मे अग्रवाल केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स
97, धानमंडी, **रतलाम** (मप्र)
फोन: 07412-236199
मो : 094251 03299, 93297 53555

राकेश कुमार जाट
जाटपुरा,कमलापुर, तह. बागली
जि. देवास (म.प्र.)
मो. 9755805221

शाहिद सिदकी
जय किसान कृषि सेवा केंद्र
टोंक खुर्द, जि. देवास (मप्र)
मो. : 98932 95685

मनीष महेश्वरी
महेश्वरी ट्रेडर्स
मेन रोड़ पिप्लरवां,
तह. सोनकच्छ, जि. देवास
मो.: 9827350779, 9424029779

पुनमचंद बिश्नोई
वार्ड नं.5, रैनबसेरा कॉलोनी
म.प्र. विद्युत मंडल ऑफिस के पीछे,
खातेगांव जिला-देवास (म.प्र.)
मो. 98264-86406

भगवती प्रसाद शर्मा
भगवती कृषि सेवा केन्द्र, सारंगपुर
रोड़, कानड़ जि. आगर-मालवा
(म.प्र.) **मो. 09755225713**

बलवंत सिंह किरार
सत्यम कृषि केंन्द्र,
शुजालपुर रोड बायपास चौपाटी,
आष्टा, जि. सिहोर
मो.: 9754728383

अनारसिंह ठाकुर
ग्राम-आमला मल पोस्टः फूछरा,
तह. आष्टा जिला-सीहोर (म.प्र.)
मो. : 07489957803

डॉ राधेश्याम गोस्वामी
105, गोविंद भवन, गुरूनानक कॉलोनी,
बूंदी (राजस्थान) मो. 09672465439

दुर्गेश नागपाल
दुर्गेश ट्रेडर्स, दु. नं. 1 मैडल टॉल, बालविकास स्कूल के निकट,
पानीपत हरियाणा मो. 09017736409

मिथलेश सिंह मधुबन फर्टिलाइजर्स
जेवरा सिरसा धमदा रोड, **दुर्ग** (छग)
मो : 098271 57832

स्वदेश अग्रवाल
दादाजी कृषि सेवा केंद्र
मण्डी रोड, **राजनांदगांव** (छग)
फोन : 07744 407336
मो : 99932 37877

जितेंद्र चंद्रकर / मे किसान मिलान
बागबेरा रोड, **महासमुंद** (छग)
मो : 98267 23932

कृष्णदास बैरागी
3067/सी, आयुर्ध नगर (ऑर्डनेंस फैक्ट्री)
इटारसी म.प्र. फोन : 07572-263156
मो. : 9907270259

उदयराज ठाकाजी
ओम फोटो फ्रेम
आदम गुजर धर्मशाला के सामने
ओंकारेश्वर जि. खंडवा
मो. 98937 60915

अतुल अग्रवाल
अतुल ट्रेडर्स, सांडिया रोड, पिपरिया,
जिला-होशंगाबाद (म.प्र.)
मो. 09425020089

विनय तिवारी
केशव बीज भण्डार
34, शोभापुर रोड, पिपरिया जिला-होशंगाबाद
मो. 08103209304, 09425311033

अंकित पाल, सनावद मो.: 9617614775
ऋषी शर्मा, जोबट मो.: 9630377330
अकरम शाह, बदनावर मो.: 7869381161
फिरोज खान (मुन्ना) मो.: 9826057444
राकेश मीणा मो.: 9926182677
यश कृषि सेवा केन्द, नसरुल्लागंज
धर्मेन्द्र कुमार मो. [illegible] तराना
नवीन वर्मा मो. [illegible]
राहुल काशिव मो.: 08463080269
बन्दभान चौहान अमलदकली मो.: 9893022476
अमित चौहान बखतरा मो.: 9993947477
अम्बालाल पटेल जोबट मो.: 7999584514
किशोर दत्ता मो.: 7067899532
राजाराम मालवीय मो.: 9981471002

सम्पादकीय एवं मार्केटिंग

मनोरमा काशिव मो.: 9009076895	मानसी सोनी मो.: 9826023769
सुनील सोलंकी मो.: 9926397460	श्वेता ठाकुर मो.: 9827131121
रचना पचोरकर मो.: 8966965766	आलोक पंचोली मो.: 9617001261
अनुपा लोधी मो.: 9516767380	सलोनी बडिया मो.: 9111486377

मेरी लेखनी की आवाज...

प्रिय कृषक / व्यापारी बंधुओं ,

सोना उगले मिट्टी का खरीफ फसल विशेषांक भाग–2, उद्यानिकी, जैविक कृषि यंत्र, राजनीति पर विशेष अंक लेकर आपकी सेवा में उपस्थित है। आशा है सदैव की भांती हमारी टीम की मेहनत आपको अवश्य पसंद आयेगी। सभी देशवासियों को हनुमान जयंती, बैसाखी, हिन्दु नववर्ष एवं बुद्ध पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएँ।

अब बात किसानों की। गेहूं की फसल बहुत ही बम्पर हुई, लेकिन गत वर्ष की भांति कटाई के समय व बाद इन्द्र देवता फिर से रूठ गये और देश के कई भागों में फसल क्षति देखने को मिली। मटर, चना और आलू ठीक रहे। सदैव की भांति सरकारी अमला नुकसान का आंकलन करने की बजाए किसानों की चिंता करने की बजाए व्यापारियों के कारखाने व दुकानों पर ज्यादा फोकस करते है, जहां से उन्हें छमाही की फिक्स किश्त मिलती है और किसी के यहां कोई गलती दिखी उस प्रतिष्ठान की तो खैर नहीं। म.प्र. में गेहूं उपार्जन में सरकार ने एक महीने का विलम्ब कर दिया, इससे सारा व्यापार व खरीफ की तैयारी पर गहरा असर पड़ा है, संस्थानों की उगाई के करण हालत खस्ता है। हम तो इशारा कर समझा ही सकते है, **पर कोई नहीं सुनता.....।**

दुनिया एवं देश के सर्वे में देखने को मिला है शराब की खपत भारत में 3 गुनी बड़ी है। हम पहले भी कई बार लिख चुके है नशा आज सामाजिक कुरीति बन चुका है और हमारे समाज के युवा वर्ग को तन–मन–धन से खोखला करता जा रहा है। इस पर लगाम लगाने की बजाए राज्य सरकार अपने रेवेन्यू पर फोकस कर रही है और वापस अहाते खोलती जा रही है। लोग शराब के ठेकों के बाहर सड़कों पर खुलेआम शराब पीते, झूमते और असामाजिक गतिविधियों में लिप्त देखे जा सकते है और रईस वर्ग द्वारा पब–बारों में नंगे नाच और झूमा–झटकी करते युवक–युवतियां। प्रशासन व पुलिस खामोश, देह व्यापार की ओर बढ़ती छात्राएं और परिजनों की चुप्पी घोर कलयुग के दौर की ओर इशारा करता है, जिसका अंत घोर विनाश ही होता है। समय रहते प्रशासन परिजनों की सचेत होना होगा, हमारा काम तो इशारा कर समझाना मात्र है, **पर कोई नहीं सुनता.....।**

इस बार मातृदिवस, तिरंगा रैली सहित कई धार्मिक आयोजन हुए स्वागत का विषय है मैंने कई बार लिखा कि स्थानीय नेताओं को इन कार्यक्रमों के अलावा अपने क्षेत्र का दौरा कर जनता की समस्याओं से रूबरू होना चाहिए। आने वाली बरसात की पूर्व तैयारी की समीक्षा करनी चाहिए, क्योंकि अचानक आई तेज बरसात व आंधी–तूफान ने यह आभास करा दिया है कि हमारी इस दिशा में तैयारियां अधूरी है, हम तो इशारा कर समझा ही सकते है, **पर कोई नहीं सुनता.....।**

अब बात राजनीति की । बंगाल, असम, पुडुचेरी की जीत पर बी.जे.पी की हार्दिक बधाई, राहुल गांधी ने फिर एक बार वोट चोरी के आरोप लगाए व चुनाव आयोग पर ठीकरा फोडा। एक समस्या जो सबसे चुनौती भरी है वो है सरकारी खर्च पर फिजूल खर्ची, स्वयं मोदी की एक शहर की यात्रा पर करोड़ों रूपये स्वाहा कर दिये जाते है. मैं कई बार इस ओर इशारा कर चुका हूँ। हाल ही में मोदी ने मंत्रीयों से गाड़ीयों का अमला, फिजुल खर्चे घटाने की ताकीद की है क्योंकी नेताओं और अधिकारियों ने तो आति कर रखी है. इनका अमला सरकारी गेस्ट हाउस में और स्वयं पांच सितारा होटलों में, स्टेज सजावट, पांडाल, तस्वीरो के कट–आउट और फूलों की सजावट व बरसात, गाडियों का काफिला और ना जाने क्या–क्या ? हम तो इशारा कर समझा सकते है, **पर कोई नहीं सुनता.....।**

अंत में देशवासियों को सचेत करना चाहूंगा कि देश में कोविड जैसी महामारी की वापसी देखने को मिल रही है, हमें अपने खान–पान व दिनचर्या का आंकलन कर जीवन को नियमित करना होगा, मास्क लगायें एवं आवश्यक दवाई भी लें, क्योंकि देश कोविड की त्रासदी झेल चुका है। प्रशासन को भी लगाम कसने की जरूरत है। हमारा काम तो इशारा कर समझाना मात्र है, **पर कोई नहीं सुनता.....।**

बदल जाओ वक्त के साथ या फिर वक्त बदलना सीखो, मजबूरियों को मत कोसो, हर हाल में चलना सीखो।

चलते–चलते इन पंक्तियों के साथ....
निर्भय वही है जो सत्य की शरण में हैं,
जो असत्य का सहारा लेते हैं
वो हमेंशा भय में रहते हैं..!!

आपका अपना

देवराज चौधरी

प्रधान संपादक एवं प्रकाशक

मैं **सोना-उगले मिट्टी** पत्रिका का बहुत पुराना सदस्य हूँ मुझे इस पत्रिका से बहुत उपयोगी लेख कृषि व पशुपालन के लेख प्राप्त होते है एवं भारत के अग्रिम मेलों को जानकारी भी मिल जाती है बहुत समय से डाक में पत्रिका नियमित प्राप्त नहीं हो रही है । कृपया इसे नियमित करने की कृपा करें ।

शाहिद पटेल
देवास (म.प्र.)

मैं **सोना-उगले मिट्टी** पत्रिका का सदस्य हूँ इसमे दी जाने वाली जानकारी बहुत अच्छी ज्ञानवर्धक है। क्योंकि इसमें सभी फसलों का पूरी जानकारी रहती है एवं कृषि मेलों की जानकारी मिलती है।

मनीष सेठिया
आलोट, जि. रतलाम

मैं **सोना-उगले मिट्टी** पत्रिका का बहुत पुराना सदस्य हूँ। मुझे बहुत अच्छी लगती। मेरा पोल्ट्री से संबंधित व्यवसाय व फार्म है, इसमें कुकुट पालन से संबंधित कई जानकारी आती है।

लक्ष्मण कुमार (लच्छू भाई)
महु जि. इंदौर

मैं **सोना-उगले मिट्टी** पत्रिका का सदस्य हूँ मुझे इस पत्रिका से बहुत उपयोगी लेख कृषि के लेख प्राप्त होते है एवं भारत के अग्रिम मेलों को जानकारी भी मिल जाती है बहुत समय से डाक में पत्रिका नियमित प्राप्त नहीं हो रही है। कृपया इसे नियमित करने की कृपा करें ।

दौलतराम धरमपुरी
जि. इंदौर

मैं **सोना-उगले मिट्टी** पत्रिका का बहुत पुराना सदस्य हूँ। मुझे बहुत अच्छी लगती। मेरा पोल्ट्री से संबंधित व्यवसाय व फार्म है, इसमें कुकुट पालन से संबंधित कई जानकारी आती है।

कमल अग्रवाल
हरिशंकर ब्रदर्स, इंदौर

सोना-उगले मिट्टी का मैं बहुत पुराना सदस्य हूँ। इसमें मुझे भंडारण (कोल्ड स्ओरेज एवं वेयर हाउस) संबधित लेख मिलते हैं जो मेरे व्यापार में सहायक सिद्ध होते है। कृपया मुझे इसका अंक नियमित भेजने की कृपा करें

स. मंदीप सिंह भाटिया
सांईनाथ शीत गृह प्रा. लि., महू जि. इंदौर

क्या आप कृषि भूमि बेचना/खरीदना चाहते हैं

यदि हां! तुरंत हमसे संपर्क करें
सम्पूर्ण भारतवर्ष में मुख्य नगरों के निकट कॉलोनी/टाउनशिप डेवलप करने के हेतु बड़ी/छोटी कृषि भूमि की आवश्यकता है.

इसके अतिरिक्त
खरीदना/बेचना/किराए से...
बंगले/प्लाट/फ्लेट/ऑफिस
फेक्ट्री शेड/कृषि भूमि हेतु
संपर्क करें

GHARONDA
CONSTRUCTION & ESTATE AGENTS

:: अन्य विशेषताएँ ::
- भवन निर्माण
- भवन सज्जा
- भवन मरम्मत
- इलेक्ट्रिक/प्लम्बर कार्य
- पूंजी निवेश
- शॉपिंग माल बुकिंग

ई.ए.–188, स्कीम नं. 94, रिंग रोड़,
फास्ट एकेडमी के पीछे, इन्दौर–452010 (म.प्र.)
सम्पादक : देवराज चौधरी मो. 9826055852, 7224943188
Email : devrajchaudhary@rediffmail.com

हम आपके सपनों का आशियाना दिलाते हैं...

प्रतिनिधियों की आवश्यकता है

कृषि आधारित 'सोना-उगले मिट्टी' मासिक पत्रिका
एवं पाक्षिक समाचार पत्र धरती उगले सोना
को समस्त जिलों एवं तहसीलों हेतु
उत्साही, कर्मठ, ईमानदार एवं लगनशील
प्रतिनिधियों की आवश्यकता है. (पुरूष/महिला)
ग्रामीण परिवेश में रूचि लेने वालों का स्वागत है.

कृपया बायोडाटा भेजें अथवा स्वयं सम्पर्क करें:

प्रधान सम्पादक/मैनेजर
सोना-उगले मिट्टी/धरती उगले सोना
ई.ए.–188, स्कीम नं. 94, रिंग रोड़,
फास्ट एकेडमी के पीछे, इन्दौर–452010 (म.प्र.)
सम्पादक : देवराज चौधरी मो. 9826055852, 7224943188
Email : devrajchaudhary@rediffmail.com

E-mail: devrajchaudhary@rediffmail.com
sonauglemitti25@gmail.com
website : www.sonauglemitti.com

सोयाबीन की नवीन किस्में

सोयाबीन की नवीनतम अर्ली किस्म जे.एस. 23–03 :– विगत कई वर्षों से किसान इस बात का इंतजार कर रहे थे कि जे.एस.–9560 व जे.एस. –20–34 व अन्य परंपरागत अर्ली किस्मों के बाद उन्हें एडवांस जनरेशन की एक इसी सोयाबीन की अर्ली किस्म का विकल्प मिले जिनमें इन परम्परागत अर्ली किस्मों में आ रही वायरस, कम उंचाई, फूटने (शेटरिंग) व निरंतर घट रहे उत्पादन की समस्या का संपूर्ण समाधान तो मिले ही तथा बढ़ते हुए कटाई में मजदूरी खर्च को देखते हुए इस किस्म की उंचाई अच्छी हो ताकि हर्वेस्टर से काटने में भी उपयुक्त हो साथ ही उसमें दाने की गुणवत्ता व उच्च उत्पादन क्षमता इसे दोनों गुणों का भी संयोजन हो ताकि सोयाबीन उत्पादन में विगत कई वर्षो से कम उत्पादन, बढ़ती खेती की लागत व कम बाजार भाव के कारण हो रहे लगातार नुकसान की भरपाई हो सके व उपरोक्त करणों का समाधान देकर सोयाबीन उत्पादन को लेकर जो किसानों में निराशा आ रही है उनमें पुर्वानुसार एक उत्साह का संचार कर सके। इस बाबत किसानों का इंतजार खत्म हुआ, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय (J.N.K.V.V) म.प्र. द्वारा वर्षों की कड़ी मेहनत व गहन अनुसंशान के पश्चात् सोयाबीन की नवीनतम अर्ली, चमत्कारी किस्म जे.एस.23–03 अवधि लगभग 88–90 दिवस देश के मध्यक्षेत्र म.प्र./राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र के विदर्भ मराठवाड़ा व उ.प्र. के बुन्देलखण्ड में बोनी हेतु जारी की है जो कि किसानों की उपरोक्तानुसार बताई गई आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं को पूर्ण करने में भविष्य में पूरी तरह से सक्षम एवं सफल रहेगी व शीघ्र ही परंपरागत सोयाबीन की किस्मों को अपने बहु आगामी गुणों के कारण शीघ्र विस्थापित कर अपना एक उच्च स्थान बनाकर किसानों में बहुत जल्दी लोकप्रिय हो जावेगी।

इस सोया जाति में जल्दी कटाई होने के गुण के कारण खेत में उपलब्ध वर्षाकाल की नमी का उपयोग करते हुए असिंचित अवस्था में भी रबी फसलों की सुखा निरोधक किस्मों का भी उत्पादन लिया जा सकता है। साथ ही जल्दी कटाई होने के कारण खेत खाली होने की स्थिति में अगाती (अर्ली) रबी की फसलें लहसून–आलू, प्याज, मटर, जना डॉलर चना, शरबती गेहूं लेने वाले किसानों के लिये यह किस्म एक आदर्श विकल्प है। इससे किसानों का फसल चक्र प्रबंधन अधिक आसान एवं सुविधाजनक हो जावेगा। सोयाबीन एवं आगे की रबी अगाती फसलों का उत्पादन भी जल्द प्राप्त होने से मण्डी में उसे जल्दी विक्रय कर किसान मण्डी में भीडभाड से मुक्ति तथा उच्चतम भाव का लाभ ले सकते है।

प्रमुख गुण (केरेक्टर): दाने का आकार गोलाकार, बोल्ड, पीला, चमकदार, बहुत आकर्षक हायलम काला, 100 दानों का वजन लगभाग 12/13 ग्राम अंकुरण क्षमता बहुत अच्छी लगभग 85/90 प्रतिशत पौधें का आकार अर्द्ध फैलाव वाला मध्यम उंचाई वाला लगभग 47 से.मी. वाला पौधा सेमिइरेक्ट अच्छी शाखाओं वाला पौधा पत्ती का रंग गहरा हरा आकार मध्यम चौड़ी गोलाकार पत्तिया पाइन्टेड ओवेट पत्ती रोएदार नहीं चिकनी, फुलों का रंग परपल (बैंगनी) आधे फूल आने की अवधि लगभग 36 से 38 दिन फलियों का रंग भूरा (ब्राउन) फलियाँ रोएदार नहीं, चिकनी, फलियों में चटकने (शेटरिंग) की समस्या बिलकुल नहीं तीन दाने की फलियाँ अधिक, इन्टरनोड शार्ट होने से फलियाँ अधिक।

रोग प्रतिकार क्षमता– येलो मोजेक, एंथेक्रोनोज, राइजोक्टेनिया, एरियल ब्लाईट व अन्य जड़ सड़न, चारकोल रॉट आदि रोगों एवं चुसने व काटने वाले कीटों के प्रति सहनशीलता एवं प्रतिरोधकता का गुण व अन्य कई प्रकार की बिमारीयों एवं कीट रोधी क्षमता/सहनशीलता के कारण इस किस्म को मल्टीपल रेजीस्टेंस वैरायटी के रूप में भी जाना जावेगा।

इस किस्म की बीज दर लगभग 40 किलो एकड़ या 100 से 110 किलो हेक्टेयर रखने व लाईन से लाईन की दूरी 14 इंच रखने, आदर्श कार्यमाला अपनाने, सिंचाई एवं जल निकासी नियोजन, फर्टीगेशन, कीट/व्याधि नियंत्रण एवं खरपतवार नियंत्रण की उत्तम व्यवस्था रखने पर आदर्श परिणाम जे.एस.23–03 सोयाबीन की इस अर्ली किस्म ने भारत में पूर्व में प्रचलित अन्य सभी अर्ली सोयाबीन की किस्मों से 27 प्रतिशत अधिक उत्पादन देकर एक नया रेकार्ड बनाया है इन्दौर में इस किस्म के 31.89 क्विंटल हेक्टेयर का उत्पादन दिया है। व्यवहारिक रूप से किसानों द्वारा भी इस किस्म का अधिकतम उत्पादन 7 क्विंटल बीघा तक भी लिया गया है। अन्त में सोयाबीन की यह अर्ली किस्म जिसका दाना व उत्पादन इतना आकर्षक है कि जो बाहर व किसान दोनों का दिल जीतकर शीघ्र ही यह किस्म कृषि क्षेत्र में सर्वोच्चतम में नए आयाम बनाते हुए सोयाबीन की खेती में एक मील का पत्थर साबित होगी।

2. सोयाबीन की नवीनतम अर्ली किस्म जे.एस.24–33 :– विगत कई वर्षों से किसान इस बात से परेशान है कि एक अच्छी प्रमाणिक अर्ली सोयाबीन किस्म में उनके पास जे.एस. 95–60 व जे.एस.20–34 के बाद जिनमें वायरस, कम ऊंचाई फुटने (शेटरिंग) निरंतर कम हो रहे उत्पादन आदि समस्याएं देखी गई है, इन सबका निदान देने वाली कोई एडवांस

जनरेशन की अर्ली किस्म उन्हें एक बेहतर विकल्प के रूप में नहीं मिल पा रही थी। किसानों की इन समस्याओं के समाधान एवं एक आदर्श किवल्प के रूप में जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय, जबलपुर (J.N.K.V.V) म.प्र. द्वारा वर्षों के गहन अनुशंधान के पश्चात एक नई सोयाबीन की अर्ली किस्म जे.एस.24–33 अवधि लगभग 88–90 दिन विकसित की गई है जो कि पूर्व में जारी परंपरागत सोयाबीन किस्मों 95–60–20–34 व अन्य से अधिक एडवांस किस्म तो है ही किन्तु बेहतर वायरस एवं कीट रोधक क्षमता, फुटने (शेटरिंग) की समस्या नहीं अच्छी ऊंचाई जो कि मेकेनिकल हर्वेस्टर के लिये उपयुक्त आदि गुणों के अतिरिक्त उच्च उत्पादन क्षमता के बहुगुणी विशेषताओं के साथ देश के मध्यक्षेत्र म.प्र., राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र में विदर्भ, मराठवाड़ा व उ.प्र. के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अनुशंसित की गई है।

प्रमुख गुण (केरेक्टर) इस के दाने का आकार गोलाकार, मध्यम, बोल्ड पीला, चमकदार, हायलम का रंग काला 100 दानो का वजन लगभग 11. 25 ग्राम अंकुरण क्षमता बहुत अच्छी लगभग 85–90 प्रतिशत पौधो का आकार अर्द्ध फैलाव वाला मध्यम अच्छी ऊंचाई वाला ऊंचाई लगभग 50 से.मी. मेकेनिकल हरर्वेस्टर के लिये उपयुक्त ब्रांचिग बहुत अच्छी सेमिइरेक्ट टाईप का पौधा।

फुलों का रंग परपल (बैंगनी) आधे फूल आने की अवधि लगभग 35 से 40 दिवस।

फलियों का रंग भूरा (ब्राउन) फलियाँ चीकनी रोएदार नहीं, फलियों में चटकने (शेटरिंग) की समस्या नहीं, तीन व चार दाने की फलियाँ, फलियाँ झुमके में, इन्टरनोड शार्ट होने से भी अधिक फलियाँ कोटीलीडन कलर (दाल का रंग) पीला तेल की मात्रा 20.65 प्रतिशत, रोग येलो मोजेक चारकोल रॉट व जड़ सड़न के लिये प्रतिरोधी क्षमता सहनशीलता, कीटरोधक क्षमता पत्ती चुसने वाले व पत्ती काटने वाले कीटों के लिए प्रतिरोधी क्षमता/सहनशीलता आदि गुणों के कारण इस किस्म को मल्टीपल रेजीस्टेस वैयराटी की श्रेणी में रखा जा सकता है।

आलू प्याज लहसुन मटर, डालर चना शरबती गेहूं आदि अगाति फसल लेने वाले किसानों के लिये सोयाबीन की यह अर्ली किस्म वरदान सिद्ध होगी। जल्दी कटाई होने के गुण के कारण खेत में उपलब्ध वर्षाकाल की नमी का उपयोग करते हुए असिंचित अवस्था में, सूखे की स्थिति या कम वर्षा की स्थिति में भी यह किस्म लगाने वाले किसान रबी की सुखा निरोधक किस्में लगाकर भी खेती कर पूरा लाभ प्राप्त कर सकते है। इस किस्म की बीज दर 40 किलो प्रति एकड़ लाईन से लाईन की दूरी 14 इंच रखने आदर्श कार्यमाला अपनाने फर्टिगेशन मैनेजमेंट, जल निकासी, खरपतवार नियंत्रण, कीट, पौध संरक्षण की उत्तम व्यवस्था रखने पर आदर्श परिणम। आदर्श परिस्थितियों मे व्यवहारिक रूप से इस अर्ली किस्म की उच्च उत्पादन क्षमता का उपयोग करते हुए 30 क्विंटल या इससे अधिक उत्पादन प्रति हेक्टेयर लिया जा सकता है।

सोयाबीन की यह नवीनतम उन्नत अर्ली किस्म जे.एस.24–33 अपने आदर्श गुणों के कारण अतिशीघ्र पुरानी परम्परागत किस्मों को विस्थापित कर अपना एक उच्च स्थान बनाकर किसानों एवं बड़े कृषि क्षेत्र में आच्छादित होकर किसानों की पहली पसंद बनकर सफलतापूर्वक अपना नाम बनाने में सफल होगी।

सोयाबीन की नवीन किस्मः एन.आर.सी.–150–सोयाबीन अनुसंधान केन्द्र (छण्ण्ड्ढ्ण) इन्दौर द्वारा वर्षों के गहन अनुसंधानों के पश्चात सोयाबीन की यह अर्ली किस्म अवधि लगभग 92 दिवस देश ने मध्यक्षेत्र म.प्र. राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र के विदर्भ एवं मराठवाड़ा व उ.प्र. के बुंदेलखण्ड में बोनी हेतु अनुशसित कर वर्ष 2023 में इसे जारी किया गया है।

इस किस्म का दाना बोल्ड, पीला, चमकदार, हायलम–काला 100 दानों का वजन लगभग 11.50 ग्राम पौधा ऊंचाई वाला फैलावदार हार्वेस्टर से काटने हेतु उपयुक्त, फलियॉ फूटती (शेटरिंग) नहीं, फलियाँ रोएदार चिकनी नहीं, तीन दाने की फलियाँ, पत्तियाँ चोड़ी गोलाकार, फूलों का रंग सफेद फूल आने की अवधि 30/–35 दिन कीट/रोग प्रतिकारक क्षमता अच्छी। इस किस्म की बीज दर लगभग 40 किलो/एकड़ व लाईन से लाईन की दूरी 14 इंच रखने पर आदर्श परिणाम। व्यवहारिक रूप से 30/35 क्विंटल हेक्टेयर तक अधिकतम उत्पादन देने की क्षमता वसुन्धरा सीड्स गेहूं, चना, सोयाबीन, मूंग उड़द, अरहर आदि फसलों के उन्नत बीत अनुसंधान केन्द्र (रिसर्च स्टेशन) व कृषि विश्वविद्यालय से संपर्क कर प्राप्त किए तथा क्षेत्र के किसानों से संपर्क कर प्राप्त बीज से क्षेत्र के श्रेष्ठ किसानों के यहां अनुशंसा एवं आदर्श कृषि कार्यमाला एवं खेती के आधुनिक तरीकों/तकनीकों से उनकी पैदावार लेकर उनके आंकड़े एकत्रित किए तथा निष्कर्षों के अनुसार क्षेत्र के किसानों के लिए श्रेष्ठ किस्मों का चुनाव कर उन्हें किसानों को उपलब्ध कराया जा रहा है। वैज्ञानिकां के यहां तकनीकी एवं व्यवहारिक दृष्टि से परखी गई श्रेष्ठ किस्म एवं जातियों का विवरण निम्नानुसार हैः–

कपास की खेती में चाहिए बंपर उत्पादन ? जानिए बुवाई का समय और वो खास टिपस जो किसानों को दिलाएंगी मोटा मुनाफा !

कपास की खेती करने वाले किसानों के लिए बुवाई का समय बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है. कृषि विशेषज्ञों के अनुसार सही समय पर बुवाई और वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर किसान बेहतर उत्पादन के साथ अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं. कपास की फसल के लिए खेत की अच्छी तैयारी, उचित नमी और प्रमाणित बीजों का चयन जरूरी होता है. विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि बुवाई से पहले मिट्टी परीक्षण जरूर करवाना चाहिए ताकि उर्वरकों का सही उपयोग किया जा सके. इसके अलावा बीज उपचार, उचित दूरी और संतुलित सिंचाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए. मौसम के अनुसार सही समय पर बुवाई करने से कीट और रोगों का खतरा भी कम होता है।

भीलवाड़ाः भीलवाड़ा जिले में खरीफ सीजन की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं और किसान अब कपास की बुवाई में जुटने लगे हैं. इस बार भीलवाड़ा जिले में करीब 3 लाख 98 हजार हेक्टेयर भूमि में खरीफ फसलों की बुवाई होने का अनुमान है. इनमें मक्का, ज्वार, बाजरा, मूंग, तिल, सोयाबीन और कपास प्रमुख फसलें हैं. कृषि विभाग के अनुसार जिले में करीब 25 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में बीटी कपास की खेती का लक्ष्य रखा गया है. विभाग का कहना है कि किसानों के लिए पर्याप्त मात्रा में बीज और खाद उपलब्ध हैं गुणवत्ता वाले बीटी कपास बीज की बिक्री सुनिश्चित करने के लिए अलग-अलग टीमें बाजार में निगरानी कर रही हैं.

कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक विनोद कुमार जैन ने किसानों को सलाह दी है कि जिन किसानों के पास सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है, वे 15 मई के बाद कपास की बुवाई शुरू कर सकते हैं. उन्होंने बताया कि जल्दी बुवाई करने वाले किसान लंबी अवधि वाली कपास किस्मों का चयन करें, जबकि 15 जून के बाद बुवाई करने वाले किसान कम अवधि वाली किस्मों की बुवाई करें ताकि समय पर उत्पादन मिल सके. विभाग ने किसानों को प्रमाणित बीज खरीदने और बीज लेते समय बिल जरूर लेने की सलाह भी दी है ताकि किसी प्रकार की समस्या आने पर कार्रवाई की जा सके.

किसानों को बाजार में अच्छा दाम मिलता

कपास की अच्छी पैदावार के लिए खेत की तैयारी सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है. खेत की मिट्टी भुरभुरी और जल निकासी वाली होनी चाहिए, क्योंकि खेत में पानी भराव होने से फसल खराब होने का खतरा बढ़ जाता है. बुवाई से पहले खेत की अच्छी तरह जुताई कर पाटा लगाना जरूरी है. किसानों को संतुलित मात्रा में खाद और उर्वरकों का उपयोग करना चाहिए. अधिक नाइट्रोजन देने से पौधे तो बढ़ जाते हैं, लेकिन कपास की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है. संतुलित खाद उपयोग करने से कपास की चमक, धागे की लंबाई और गुणवत्ता बेहतर रहती है, जिससे किसानों को बाजार में अच्छा दाम मिलता है।

किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका

कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक विनोद कुमार जैन के अनुसार कपास की खेती किसानों के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है, क्योंकि यह नकदी फसल मानी जाती है. भीलवाड़ा जिले में कई किसान कपास की खेती से अच्छा लाभ कमा रहे हैं. यदि मौसम अनुकूल रहे और किसान समय पर सिंचाई, खरपतवार नियंत्रण और कीट प्रबंधन करें तो प्रति बीघा अच्छा उत्पादन मिल सकता है. बाजार में कपास की मांग लगातार बनी रहती है, जिसके कारण किसानों को बेहतर आमदनी की उम्मीद रहती है. खासकर बीटी कपास की उन्नत किस्में कीटों से कुछ हद तक सुरक्षा देती हैं और उत्पादन क्षमता भी बढ़ाती हैं. कृषि विभाग किसानों को समय-समय पर फसल प्रबंधन की जानकारी भी दे रहा है.

विभाग की टीमें गांवों में जाकर किसानों को सही बीज चयन, दवा उपयोग और रोग नियंत्रण की जानकारी दे रही हैं. किसान जल्दबाजी में बिना जांच वाले बीज न खरीदें और केवल सरकार से अनुमोदित बीज ही उपयोग में लें. यदि किसान वैज्ञानिक तरीके से कपास की खेती करें तो यह फसल जिले के किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है

मक्का की खेती कैसे करे, जाने पूरी जानकारी

मक्का की फसल एक बहुपयोगी फसल है क्योंकि मक्का मनुष्य और पशुओं के आहार का प्रमुख स्रोत है. मक्का औद्योगिक दृष्टिकोण से भी काफी महत्वपूर्ण है. मक्का की खेती भारत के पहाड़ी क्षेत्रों के साथ–साथ मैदानी इलाकों में बहुतायत में उगाई जाती है. मक्का की कुछ प्रजाति खरीफ ऋतु में ही उपयुक्त रहती है, तो कुछ ऐसी होती हैं, जो सिर्फ रबी सीजन में ही उपयुक्त रहती है. जिसको किसान भाई दोनों सीजन में उगाकर अच्छी पैदावार लेने के साथ–साथ अच्छी कमाई भी कर सकते है. मक्का की खेती भारत में मुख्य रूप आंध्र प्रदेश, बिहार, कर्नाटक, राजस्थान, एमपी, छत्तीसगढ़, झारखंड, गुजरात और उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में की जाती है. अगर कोई किसान भाई मक्का की खेती करना चाहते है तो वे इस लेख को पूरा पढ़ें क्योकि इस आर्टिकल में मक्का की खेती के करने के लिए किन–किन बातों का ध्यान रखा चाहिए इसकी पूरी जानकारी दी जा रही है. चलिए मक्का की खेती के बारें में चर्चा करते है। मक्के का उपयोग दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है चाहे वो खाने में या फिर औद्योगिक छेत्र में मक्के की चपाती से लेकर भुट्टे सेंककर, मधु मक्का के कॉर्नफलेक्स, पॉपकार्न, लड्या के रूप में आदि के साथ–साथ अब मक्का का उपयोग कार्ड आइल, बायोफयूल के लिए भी होने लगा है. करीब 65 प्रतिशत मक्का का उपयोग मुर्गी एवं पशु आहार के रूप में किया जाता है. भुट्टे तोड़ने के बाद बची हुई कड़वी पशुओं के चारे के रूप उपयोग किया जाता है. औद्योगिक दृष्टि से मक्का प्रोटिनक्स, चॉक्लेट पेन्ट्स स्याही लोशन स्टार्च कोका–कोला के लिए कॉर्न सिरप आदि बनने के काम में लिया जाता है. बिना परागित मक्का के भुट्टों को बेबीकार्न मक्का कहते है जिसका उपयोग सब्जी और सलाद के रूप में किया जाता है. बेबीकार्न पौष्टिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण होता है। मक्का की खेती के लिए भूमि चयनः वैसे तो मक्के की खेती को विभिन्न प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है, लेकिन इसके लिए दोमट मिट्टी या बुलई मटियार वायु संचार और पानी के निकास की उत्तम व्यवस्था के साथ साथ 6 से 7.5 पीएच मान वाली मिटटी उपयुक्त मानी गई है। मक्का की खेती के लिए मिट्टी की तैयारी :– मक्के की फसल के लिए खेत की तैयारी जून महा से कर देनी चाहिए. मक्के की फसल के लिए गहरी जुताई करना लाभदायक होता है. खरीफ की फसल के लिए 15–20 सेमी सेमी गहरी जुताई करने के बाद पाटा लगाना चाहिए जिससे खेत में नमी बानी रहती है. इस तहह से जुताई करने का मुख्य उदेश्य खेत की मिट्टी को भुरभुरी बनाना होता है। फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए मिट्टी की तैयारी करना उसका प्रथम पड़ाव होता है, जिससे हर फसल को गुजरना होता है. मक्का की फसल के लिए खेत की तैयारी समय 5 से 8 टन अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद खेत मे डालनी चाहियें. भूमि परीक्षण उपरांत जहां जस्ते की कमी हो वहां 25 किलो जिंक सल्फेट वर्षा से पूर्व खेत में डाल कर खेती की अच्छे से जुताई करें. रबी के मौसम में आपको खेत की दो मर्तबा जुताई करनी चाहिए।

मक्का की की बुवाई का समय खरीफ जून से जुलाई तक रबी :–अक्टूबर से नवम्बर तक जायद फरवरी से मार्च तक। मक्के की उन्नत किस्में : मक्का की किस्में अवधि के आधार पर मक्का की कस्मिों को निम्न चार प्रकार में बाँटा गया है। अति शीघ्र पकने वाली किस्मे (75 दिन से कम) जवाहर मक्का–8, विवेक–4, विवेक–17, विवेक–43, विवेक–42, प्रताप हाइब्रिड मक्का–1

शीघ्र पकने वाली किस्मे (85 दिन से कम) जवाहर मक्का–12, अमर, आजाद कमल, पंत संकुल मक्का–3, चन्द्रमणी, प्रताप–3, विकास मक्का–421, हिम–129, डीएचएम–107, डीएचएम–109, पूसा अरली हाइब्रिड मक्का–1, पूसा अरली हाइब्रिड मक्का–2, प्रकाश, पी.एम.एच–5, प्रो–368, एक्स–3342, डीके सी–7074, जेकेएमएच–175, हाईशेल एवं बायो–9637। मध्यम अवधि मे पकने वाली किस्मे (95 दिन से कम) जवाहर मक्का–216, एचएम–10, एचएम–4, प्रताप–5, पी–3441, एनके–21, केएमएच–3426, केएमएच–3712, एनएमएच–803 बिस्को–2418। देरी की अवधि मे पकने वाली किस्मे :– (95 दिन से अधिक) गंगा–11, त्रिसुलता, डेक्कन–101, डेक्कन–103, डेक्कन–105, एचएम–11, एचक्यूपीएम–4, सरताज, प्रो–311, बायो–9681, सीड टैक–2324, बिस्को–855, एनके 6240, एसएमएच–3904। मक्के की बीज की मात्रा संकर जातियां 12 से 15 किलो/हे. कम्पोजिट जातियां :– 15 से 20 किलो/हे. हरे चारे के लिए 40 से 45 किलो/हे.। मक्के की बुवाई का तरीकाः मक्का की बुआई मेंड़ के पूर्वी और पश्चिमी भाग के मेंडों वर व उपर 3–5 से.मी. की गहराई पर करनी चाहिए. मक्का की बुआई के लिए प्लांटर का उपयोग करना चाहिए, क्योंकि इससे बीज और उर्वरक को उचित स्थान पर एक ही बार में पहुचाने में मदद मिलती है. चारे के लिए बुआई सीडड्रिल द्रा करनी चाहिए. मेड़ों पर बुआई करते समय पीछे की ओर चलना चहिए. वर्षा प्रारंभ होने पर मक्का की बुआई शुरू कर देनी चाहियें. अगर आपके पास सिंचाई का साधन हो तो मक्का को 10 से 15 दिन पूर्व ही बो देनी चाहिए जिससे अच्छी पैदावार के साथ साथ बाजार में उचित मूल्य मिल जाता है। शीघ्र पकने वाली कतार से कतार–60 से. मी. पौधे से पौधे 20 से.मी.। मध्यम/देरी से पकने वाली कतार से कतार 75 से.मी. पौधे से पौधे 25 से.मी.। हरे चारे के लिए कतार से कतार 40 से.मी. पौधे से पौधे 25 से.मी.

मक्का की खेती के लिए खाद व उर्वरक की मात्रा मक्का की खेती के लिए खाद व उर्वरक की मात्रा भी भी चुनी हुयी प्रजाति के अनुसार करनी चाहिए जिससे फसल की वृद्धि और उत्पादन दोनों को ही फायदा होता है. जैसे दु मक्का की खेती के लिए प्रयोग की जाने वाली नाइट्रोजन की मात्रा का तीसरा भाग बुआई के समय, दूसरा भाग बुआई के लगभग एक माह बाद साइड ड्रेसिंग के रूप में, तथा तीसरा और अंतिम भाग नरपुष्पों निकलने से पहले. फोसफोरस और पोटाश दोनों की पूरी मात्रा बुआई के समय खेत डालना चाहिए जिससे पौधों की जड़ों से होकर पौधों में पहुँच सके जिससे मक्का के पौधों की बृद्धि अच्छी होगी. जब आप किसी फसल के लिए खेती की तैयारी कर लेते है यू समझिए आपका 50 फीसद है। शीघ्र पकने वाली 80:50:30 (छःच्ज्ञ) 120:60:40 (N:P:K) देरी से पकने वाली काम पूरा हो चुका होता मध्यम पकने वाली।

धान की बेहन (नर्सरी) तैयार करने की विधि

❊ ब्रजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी ❊ रंजीत सिंह राजपूत

जब खेत में उचित मात्रा में नमी रहती है, तब साधारण हल से चार या ट्रैक्टर, रोटेवेटर से दो बार जुताई करना चाहिए। खेत में पानी निकलने के लिए चारो तरफ नालियां बनाकर इसका 1 10 मी. की छोटी क्यारियों में बांट दीजिए। रोपाई के लिए एक हैक्टर में 100 छोटी क्यारियों की आवश्यकता होती है। हल से नाली बनाकर लाइन में बुवाई कीजिए तथा महीन मिट्टी की परत से ढंक दीजिए।

बीज तथा बीज दर का चयन - नमक का घोल 1.06 विशिष्ट द्रव्यमान का 1 लीटर पानी में 60 ग्राम साधारण नमक मिलाकर तैयार कीजिए। बीज को घोल में डालकर और तैरने वाले अवशेषों (बीजों) को निकाल दीजिए। चयनित बीज को साफपानी से धो दीजिए। बेहन क्यारी में बुवाई के लिए सामान्य बीज दर 35-40 किग्रा/हे. सीधी बुवाई के लिए बीज दर 80 किग्रा/हे. तथा छिटकावा पद्धति से बुवाई के 100 किग्रा0 / हेक्टर।

बीज का उपचार - शुष्क बुवाई-बीज को एगोसन जी एन या सेरासन (शुष्क) या बाविस्टीन से 2 ग्राम /किग्रा बीज दर से उपचार कीजिए।

आर्द्र बुवाई - उपरोक्त रसायनों में से किसी एकक से बीज को भिगोते समय उपचार कीजिए तथा 24 घंटे भिगोने के बाद पानी से निकाल दीजिए और बीज को अंकुरण के लिए बोरी या छाया से ढंक दीजिए।

बुवाई का समय - सीधी बुवाई - अप्रैल से मई अनुकुल समय है तथा गहरे जल क्षेत्रों में मिट्टी की नमी के आधार पर जून के प्रथम सप्ताह।

रोपाई - जलाक्रांत तथा वर्षाश्रित निचली जमीनों में 15 -30 जून।

जमीन की तैयारी-रौपार्ठ-खेत को अच्छी तरह से कीचड़ बनाइए। संपूर्ण खेत में एक समान पानी बनाए रखने के लिए पाटा चलाकर जमीन को समतल कीजिए।

सीधी बुवाई - जब पर्याप्त नमी रहती है, तब अच्छी जुताई के लिए खेत को तीन या चार बार जोत दीजिए।

रोपाई - सामान्य रोपाई 25-30 दिन के बेहन

विलंब रोपाई - 50-60 दिन के बेहन।

सीधी बुवाई - हल के पीछे य सीडड्रिल से बुवाई करनी चाहिए।

अंतराल- अनुमान से रोपाई 30-35 पूंजे /वर्ग मी. 3-4 बेहन/पूजा।

कतारसे रोपाई -20सेमी कतार से कतार, हल के पीछे लगाकर बुवाई।

उर्वरक की मात्रा - मिट्टी में उपलब्ध प्रारंभिक उर्वरक स्तर के आधार पर निर्भर करता है। सीधी बुवाई तथा सामान्य रोपाई- 40:20:20 कि ग्रा न त्र जन, फास्फोरस पोटाश/हेक्टर। विलंब रोपाई : 60:30:30 किग्रा. नत्रजनः फास्फोरस पोटाश / हेक्टर। फार्मयार्ड/कंपोस्ट/कुक्कुट आधार खाद : 5 टन/ हेक्टेयर।

उर्वरक का प्रयोग - सीधी बुवाई - नत्रजन फास्फोरस पोटाश/हेक्टर 20:20:20 संपूर्ण मात्रा को बीज के साथ ही हल द्वारा बनाई गई नाली में प्रारंभिक खुराक के रूप में प्रयोग कीजिए। शेष 20 किग्रा. घास निकालने के तीन से चार सप्ताह के बाद पानी के भीतर मिट्टी ड्रेसिंग के रूप में प्रयोग कीजिए कृषि खेत में केवल 5 सेमी जल स्तर रखकर नत्रजन काप्रयोग कीजिए।

सामान्य रोपाई - संपूर्ण नत्रजन तथा फासफोरस का प्रारंभिक खुराक के रूप में प्रयोग कीजिए।

देर से रोपाई - आधी नत्रजन संपूर्णफास्फोरस ओर आधी पोटाश को रोपाई के समय तथा बाकी एक चौथाई नत्रजन रोपाई के तीन सप्ताह बाद एवं आधा पोटाश उम्मर से बाली निकलते समय प्रयोग कीजिए।

खरपतवार प्रबंध - सीधी बुवाई की फसल में अंगुलीनुमा निराई यंत्र का प्रयोग करके कतारों के बीच शीघ्र निराई-गुड़ाई कीजिए तथा देशी हल का प्रयोग कीजिए। कतारों के बीच में घास को हाथ से निकाल दीजिए ।ब्यूटाक्लोर का बुवाई के 1-2 दिन के बाद (500 लीटर पानी में 1.5 से 2 लीटर) 0.75 से 1 किग्रा/हेक्टर दर पर छिड़काव कीजिए।

खाली स्थान को भरना - रोपाई के 7 दिनों के भीतर खाली स्थानों को भर देना चाहिए। यदि बेहन उपलब्ध नहीं है, तो मौजूदा पूंजों से बेहन लेकर खाली स्थानों को भर दीजिए। सीधी बुवाई की फसल मेंदूसरे खड़े से बेहन लेकर खाली स्थानों को भर दीजिए।

बीज उपचार की विधियां, फायदे और लाभों के बारे में !

बीज उपचार की विधियां।

बीज उपचार की दवा : नमस्कार किसान भाइयों आज के लेख में हम जानेंगे बीज जनित एवं मृदाजनित रोगों से फसल को नष्ट होने से बचाने के लिए बीज उपचार के बारे में तथा बीज उपचार के तरीके, बीज उपचार की दवा और बीज उपचार से होने वाले फायदों के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे। इस लेख में हम जानेंगे कृषि सलाहकार द्वारा निर्धारित दवा से बीजों को उपचारित किया जाए तो बीजजनित एवं मृदा जनित रोगों से तथा शुरुआती अवस्था में कीटों से भी पौधों का बचाव किया जा सकता है और किसान की लागत में कमी आती है और अच्छी फसल पैदावार भी होती हैं।

बीज उपचार क्या है ? : बीज उपचार एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें फसल को बीमारियों और कीटों से बचाव के लिए रसायन, जैव रसायन या ताप से बीजों को उपचारित किया जाता है। बीज उपचार से बीजों में उपस्थित आन्तरिक या बाहरी रूप से जुड़े रोगजनकों (फफूँद, कीटों आदि) को मारने के लिए उपयोग किया जाता है। बीज के उपचार करने से बीजों की ऊपरी तथा अंदर की पर्तों में अनदेखी फफूँदी रहती है जो अवसर पाकर दूषित बीज के साथ मिट्टी में जाकर बीज के अंकुरण क्षमता को प्रभावित करती है। बीज उपचार की विधियां : चलिए अब हम जानते हैं, बीज उपचार की कुछ विधियों के बारे में – 1. सूखा विधि बीजोपचार 2. भीगी विधि बीजोपचार 3. गर्म पानी बीजोपचार 4. स्लरी बीजोपचार

ये कुछ बीजोपचार की विधियाँ ज्यादा प्रचलित है।

बीज उपचार की दवा : किसान भाइयों आज आप को बीज उपचार की दवा के बारे में बतायेंगे – ▸ वीटावैक्स पॉवर, साफ, ज़ेलोरा, यूपीएल रेनो, बायर गौचो, बाविस्टिन ▸ कॉन्फिडोर, डॉ बैक्टोस डर्मस आदि विभिन्न दवाओं से बीज उपचार किया जा सकता हैं।

बीज उपचार के तरीके : अब हम बीज उपचार के रासायनिक और जैविक तरीकों के बारे में विस्तार से जानेंगे –

▸ किसान भाइयों सबसे पहले कॉन्फिडोर कीटनाशी (ब्वदपिकवत पदेमबजपबपकम) की 1 मिली मात्रा को लेते है फिर उसमें 80 से 100 मिली पानी को मिलाते है अब प्रति किलोग्राम बीज को किसी पॉलीथिन के ऊपर हाथों में दस्ताने पहनकर रब करते हैं, जब बीज और दवा अच्छे से मिल जाये तो उसको 15 मिनट के लिए छाँव में सुखाते है। ▸ उसके बाद हम ठंअपेजपद थ्नदहपबपकम से बीज उपचार करेंगे जिसमें 2.5 से 3 ग्राम दवा को 80 से 100 मिली पानी में मिलाकर प्रति किलोग्राम बीज को किसी पॉलीथिन के ऊपर हाथों में दस्ताने पहनकर रब करते हैं, जब बीज और दवा अच्छे से मिक्स हो जाये तो उसको 15 मिनट के लिए छाँव में सुखाते है। सूखने के बाद बीज को बुवाई के लिए उपयोग कर सकते है। ▸ जो किसान जैविक खेती करते है तो उसके लिए डॉ बैक्टोस डर्मस (ट्राइकोडर्मा विरिडी) को 2.5–5 मिली को 80 मिली पानी में मिलाकर प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित करना चाहिए।

▸ किसान भाइयों बाविस्टिन कवकनाशी का उपयोग (इंअपेजपद निदहपबपकम नेमे पद ीपदकप) बीज उपचार के अलावा विभिन्न रोगों जड़ सड़न और उखटा के लिए इसका बहुत बेहतरीन परिणाम हैं।

अब हम चार्ट के माध्यम से जानेंगे :

उत्पाद नाम	घटक नाम	बाजार प्राइस	भारतअँग्री प्राइस	पैक साइज
क्रिस्टल बाविस्टिन	कार्बेनडाज़िम 50% डब्ल्यू पी	□200	□189	100 ग्राम
बायर कॉन्फिडोर	इमिडाक्लोप्रिड 200 एसएल(17.8% ww)	□400	□389	100 मिली
डॉ बैक्टोस डर्मस	ट्राइकोडर्मा विरिडी	□630	□440	1 लीटर

बीज उपचार के लाभ : अब हम निम्न बिन्दुओं के माध्यम से जानेंगे के बारे में –

▸ बीजों का अंकुरण अच्छा होता है। ▸ बीज उपचार फसल की बीमारियों के प्रसार को रोकता है। ▸ बीजजन्य रोगों से नियंत्रण प्रदान करता है। ▸ मृदाजनित रोगों से नियंत्रण प्रदान करता है। बीज उपचार से अनेक मृदा कीड़ों से बीज तथा पौध की रक्षा होती है। ▸ बीज उपचार से बीजों को सड़ने और अंकुरों के झुलसने से बचाया जा सकता है। ▸ बीज उपचार भंडारण कीड़ों से सुरक्षा प्रदान करता है।

ज्वार की खेती करने से होगी बंपर कमाई, जानिए इससे जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी ।

ज्वार को इंग्लिश में सोरघम कहते हैं. मूलतः भारत में इसकी खेती खाद्य और जानवरों के लिए चारा के रूप में की जाती है. इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) के सस्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक डॉ .गजेन्द्र सिंह तोमर अपने ब्लॉग में लिखते हैं कि ज्वार की खेती का भारत में तीसरा स्थान है. अनाज व चारे के लिए की जाने वाली ज्वार की खेती उत्तरी भारत में खरीफ के मौसम में और दक्षिणी भारत में रबी के मौसम में की जाती है. ज्वार को इंग्लिश में सोरघम कहते हैं. मूलतः भारत में इसकी खेती खाद्य और जानवरों के लिए चारा के रूप में की जाती है. इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) के सस्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक डॉ .गजेन्द्र सिंह तोमर अपने ब्लॉग में लिखते हैं कि ज्वार की खेती का भारत में तीसरा स्थान है. अनाज व चारे के लिए की जाने वाली ज्वार की खेती उत्तरी भारत में खरीफ के मौसम में और दक्षिणी भारत में रबी के मौसम में की जाती है. ज्वार की प्रोटीन में लाइसीन अमीनो अम्ल की मात्रा 1.4 से 2.4 प्रतिशत तक पाई जाती है जो पौष्टिकता की दृष्टि से काफी कम है. इसके दाने में ल्यूसीन अमीनो अम्ल की अधिकता होने के कारण ज्वार खाने वाले लोगों में पैलाग्रा नामक रोग का प्रकोप हो सकता है. इसकी फसल अधिक बारिश वालों क्षेत्रों में सबसे अच्छी होती है. ज्वार के अच्छे भावों को दृष्टिगत रखते हुए अगर कुछ किसान मिलकर अपने पास–पास लगे हुए खेतों में इस फसल को उगाकर अधिक लाभ उठा सकते हैं. क्योंकि इसके दाने और कड़वी दोनों ही उचित मूल्य पर बिक सकते हैं.

खेत की तैयारी : डॉ. गजेन्द्र सिंह के मुताबिक, ज्वार की फसल कम वर्षा में भी अच्छी उपज दे सकती है और कुछ समय के लिए पानी भरा रहने पर भी सहन कर लेती है. पिछली फसल के कट जाने के बाद मिट्टी पलटने वाले हल से खेत में 15–20 सेमी. गहरी जुताई करनी चाहिए. इसके बाद 4–5 बार देशी हल चलाकर मिट्टी को भुरभुरा कर लेना चाहिए. बुवाई से पूर्व पाटा चलाकर खेत को समतल कर लेना चाहिए. मालवा व निमाड़ में ट्रैक्टर से चलने वाले कल्टीवेटर व बखर से जुताई करके जमीन को अच्छी तरह से भुरभुरी बनाते है. ग्वालियर संभाग में देशी हल या ट्रेक्टर से चलने वाले कल्टीवेटर से जमीन को भुरभुरी बनाकर पाटा से खेत समतल कर बुवाई करते हैं.

भूमि के अनुसार उपयुक्त किस्में : ज्वार की फसल सभी प्रकार की भारी और हल्की मिट्टियां, लाल या पीली दोमट और यहां तक कि रेतीली मिट्टियो में भी उगाई जाती है, परन्तु इसके लिए उचित जल निकास वाली भारी मिट्टियां (मटियार दोमट) सर्वोत्तम होती है. असिंचित अवस्था में अधिक जल धारण क्षमता वाली मृदाओं में ज्वार की पैदावार अधिक होती है. मध्य प्रदेश में भारी भूमि से लेकर पथरीले भूमि पर इसकी खेती की जाती हैं. छत्तीसगढ़ की भाटा–भर्री भूमिओं में इसकी खेती सफलता पूर्वक की जा सकती है. ज्वार की फसल 6.0 से 8.5 पी. एच. वाली मृदाओं में सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है. ज्वार से अच्छी उपज के लिए उन्नतशील किस्मों का शुद्ध बीज ही बोना चाहिए. किस्म का चयन बोआई का समय और क्षेत्र अनुकूलता के आधार पर करना चाहिए. बीज प्रमाणित संस्थाओं का ही बोये या उन्नत जातियों का स्वयं का बनाया हुआ बीज प्रयोग करें. ज्वार में दो प्रकार की किस्मों के बीज उपलब्ध हैं–संकर एंव उन्नत किस्में. संकर किस्म की बोआई के लिए प्रतिवर्ष नया प्रमाणित बीज ही प्रयोग में लाना चाहिए. उन्नत जातियों का बीज प्रतिवर्ष बदलना नहीं पड़ता.

संकर किस्में : मध्यप्रदेश के लिए ज्वार की समर्थित संकर किस्में सीएसएच5, सीएसएच9, सीएसएच–14, सीएसएच–18 है. इनके अलावा जिनका बीज हर साल नया नहीं बदलना पड़ता है वे है जवाहर ज्वार 741, जवाहर ज्वार 938, जवाहर ज्वार 1041 एसपीवी 1022 और एएसआर–1. इनके बीजों के लिए ज्वार अनुसंधान परियोजना, कृषि महाविद्यालय इंदौर से संपर्क कर सकते हैं. ढाई एकड़ के खेत में बोने के लिए 10–12 किलोग्राम बीज लगता है. उत्तर प्रदेश में सीएसएच–16, सीएसएच–14, सीएमएच–9, सीएसबी–15, सीएसबी–13, वषा, मॅऊ टी–1, मऊ टी–2 की पैदावार की जाती है.

जल्दी तैयार होने वाली किस्में : ज्वार की देशी किस्मों के पौधे लंबे, अधिक ऊंचाई वाले, गोल भुट्टों वाले होते थे. इनमें दाने बिलकुल सटे हुए लगते थे. ज्वार की उज्जैन 3, उज्जैन 6, पीला आंवला, लवकुश, विदिशा 60–1 मुख्य प्रचलित किस्में थीं. इनकी उपज 12 से 16 क्विंटल दाना और 30 से 40 क्विंटल कड़वी (पशु चारा) प्रति एकड़ तक मिल जाती थी. इनका दाना मीठा, स्वादिष्ट होता था. ये किस्में कम पानी व अपेक्षाकृत हल्की जमीनों में हो जाने के कारण आदिवासी क्षेत्रों की प्रमुख फसल थी. ये उनके जीवन निर्वाह का प्रमुख साधन था. साथ ही इससे उनके पशुओं को चारा भी मिल जाता था. इनके झुके हुए ठोस भुटटों पर पक्षियों के बैठने की जगह न होने के कारण नुकसान कम होता था. उत्पादन की दृष्टि से ज्वार में बोनी का समय बहुत महत्वपूर्ण है. ज्वार की फसल को मानसून आने के एक सत्पाह पहले सूखे में बोनी करने से उपज में 22.7 प्रतिशत देखी गई है.

बाजरा की आधुनिक खेती

बाजरा एक प्रमुख फसल है। पश्चिमी राजस्थान में बाजरे का अधिक उत्पादन होता हैं द्य एक प्रकार की बड़ी घास जिसकी बालियों में हरे रंग के छोटे छोटे दाने लगते हैं। इन दानों की गिनती मोटे अन्नों में होती है। प्रायः सारे उत्तरी, पश्चिमी और दक्षिणी भारत में लोग इसे खाते हैं। बाजरा मोटे अन्नों में सबसे अधिक उगाया जाने वाला अनाज है। इसे अफ्रीका और भारतीय उपमहाद्वीप में प्रागेतिहासिक काल से उगाया जाता रहा है, यद्यपि इसका मूल अफ्रीका में माना गया है। भारत में इसे बाद में प्रस्तुत किया गया था। भारत में इसे इसा पूर्व २००० वर्ष से उगाये जाने के प्रमाण मिलते है। इसका मतलब है कि यह अफ्रीका में इससे पहले ही उगाया जाने लगा था। यह पश्चिमी अफ्रीका के सहल क्षेत्र से निकल कर फैला है।

बाजरे की विशेषता है सूखा प्रभावित क्षेत्र में भी उग जाना, तथा ऊँचा तापक्रम झेल जाना। यह अम्लीयता को भी झेल जाता है। यही कारण है कि यह उन क्षेत्रों में उगाया जाता है जहां मक्का या गेहूँ नही उगाये जा सकते। आज विश्व भर में बाजरा २६०,००० वर्ग किलोमीटर में उगाया जाता है। मोटे अन्न उत्पादन का आधा भाग बाजरा होता है।

इस अनाज की खेती बहुत सी बातों में ज्वार की खेती से मिलती जुलती होती है। यह खरीफ की फसल है और प्रायः ज्वार के कुछ पीछे वर्षा ऋतु में बोई और उससे कुछ पहले अर्थात् जाड़े के आरंभ में काटी जाती हैं। इसके खेतों में खाद देने या सिंचाई करने की विशेष आवश्यकता नहीं होती। इसके लिये पहले तीन चार बार जमीन जोत दी जाती है और तब बीज बो दिए जाते हैं। एकाध बार निराई करना अवश्य आवश्यक होता है। इसके लिये किसी बहुत अच्छी जमीन की आवश्यकता नहीं होती और यह साधारण से साधारण जमीन में भी प्रायः अच्छी तरह होता है। यहाँ तक कि राजस्थान की बलुई भूमि में भी यह अधिकता से होता है। गुजरात आदि देशों में तो अच्छी करारी रूई बोने से पहले जमीन तयार करने के लिय इसे बोते हैं। बाजरे के दानों का आटा पीसकर और उसकी रोटी बनाकर खाई जाती है। इसकी रोटी बहुत ही बलवर्धक और पुष्टिकारक मानी जाती है। कुछ लोग दानों को यों ही उबालकर और उसमें नमक मिर्च आदि डालकर खाते हैं। इस रूप में इसे 'खिचड़ी' कहते हैं। कहीं कहीं लोग इसे पशुओं के चारे के लिये ही बोते हैं। वैद्यक में यह वादि, गरम, रूखा, अग्निदीपक पित्त को कुपित करनेवाला, देर में पचनेवाला, कांतिजनक, बलवर्धक और स्त्रियों के काम को बढ़ानेवाला माना गया है।

बाजरे का प्रयोग भारत तथा अफ्रीका में रोटी, दलिया तथा बीयर बनाने में होता है। फसल के बचे भाग का प्रयोग चारे, ईंधन तथा निर्माण कार्य में भी होता है। विश्व के विकसित भागों में इसका प्रयोग भोजन में ना होकर चारे के रूप में होता है। मुर्गी जो इसे चारे के रूप में खाती है/अंडो में ओमेगा ३ फैटी अम्ल ज्यादा पाया जाता है। दूसरे जंतु भी इसे चारे के रूप में खाकर अधिक उत्पादन करते है।

इसमें प्रोटीन तथा अमीनो अम्ल पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं, इसमे कैंसर कारक टाक्सिन नहीं बनते है, जो कि मक्का तथाज्वार में बन जाते है।

प्याज की खेती कैसे करें

प्याज का उपयोग मसाले और सब्जी दोनों रूप में किया जाता है. प्याज़ पौधे के जड़ वाले भाग में लगती है. जिसको लोग खाने में इस्तेमाल करते हैं. प्याज के अंदर विटामिन की बड़ी मात्र पाई जाती है. जो शरीर के लिए लाभदायक होती है. सब्जी और मसाले के अलावा प्याज़ का इस्तेमाल लोग सलाद, सूप और अचार के रूप में भी करते हैं. प्याज को खाने से गर्मियों में लू नही लगती है।

प्याज की खेती :– प्याज को कई जगहों पर कांदा के नाम से भी जाना जाता है. प्याज के अंदर कई औषधिय गुण भी पाए जाते हैं. जिस कारण प्याज का इस्तेमाल लोग दवाइयों में भी करते हैं. प्याज का सबसे महत्वपूर्ण उपयोग रेडिएशन को कम करने में किया जाता है। प्याज की खेती मुख्य रूप से सर्दी के मौसम में की जाती हैं. इसकी अच्छी पैदावार लेने के लिए इसे बलुई दोमट मिट्टी में उगाना चाहिए. प्याज की खेती को पानी की काफी ज्यादा जरूरत होती हैं. भारत में प्याज़ की खेती महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश में बड़ी मात्रा में की जाती है।

उपयुक्त मिट्टी :– प्याज की खेती के लिए बलुई और बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है. प्याज़ की खेती कंद के रूप में होती है. इसलिए मिट्टी में पानी का भराव नही होना चाहिए. प्याज़ को बलुई मिट्टी के अलावा भी कई तरह की मिट्टी में उगाया जा रहा है. जिसके लिए मिट्टी का पी.एच. मान 5 और 6 के आसपास होना चाहिए. क्योंकि ज्यादा अम्लीय और क्षारीय मिट्टी में इसकी पैदावार नही की जा सकती।

जलवायु और तापमान :– प्याज की खेती मुख्य रूप से तो सर्दियों में की जाती है. लेकिन कई जगहों पर इसे गर्मियों में भी उगाया जा रहा है. सर्दियों में उगाई जाने वाली फसल की पैदावार ज्यादा होती है. लेकिन सर्दियों में पड़ने वाला पाला इसके लिए हानिकारक होता है। प्याज़ की खेती के लिए शुरुआत में तापमान 15 डिग्री के आसपास होना चाहिए। जिसके बाद प्याज के कंद को अच्छे से विकसित होने के लिए 25 से 30 डिग्री तापमान की जरूरत होती है. प्याज की खेती के लिए सूर्य का प्रकाश सबसे महत्वपूर्ण होता है. कंद के तैयार होने के दौरान पौधे को दिन में 10 घंटे सूर्य की धूप मिलना अच्छा होता है. इसलिए प्याज की खेती उसी जगह करें जहाँ सूर्य का प्रकाश अच्छे से पहुँचता हो।

प्याज की किस्में :– प्याज़ की आज कई तरह की किस्में बाज़ार में पाई जाती हैं. जिन्हें सर्दी और गर्मियों के मौसम में उगाया जाता है. जबकि कुछ किस्में ऐसी हैं जिन्हें दोनों मौसम में अलग अलग जगहों के हिसाब से उगाया जा सकता है. प्याज की किस्मों को रबी और खरीफ की प्रजातियों में बाँटा गया है।

रबी के टाइम की प्याज :– रबी के टाइम उगाई जाने वाली प्याज अधिक पैदावार देती हैं. रबी की प्याज सर्दी के टाइम में उगाई जाती हैं. इन्हें उगाने का उचित टाइम नवम्बर और दिसम्बर का महीना होता है. इस टाइम सबसे ज्यादा प्याज उगाई जाती हैं. रबी की प्याज में एग्रीफाउंड लाइट रेड, भीमा शक्ति, पूसा रेड, पूसा रतनार, एग्रीफाउंड रोज और भीमा रेड जैसी किस्में शामिल हैं।

खरीफ के टाइम की प्याज :– खरीफ के टाइम प्याज की कम मात्रा में उगाई जाती है. खरीफ की प्याज की रोपाई मई माह के आखिरी सप्ताह से जून माह के मध्य तक की जाती हैं. खरीफ के टाइम एग्रीफाउंड डार्क रेड, भीमा सुपर, भीम डार्क रेड और पूसा व्हाइट राउंड किस्मों को उगाया जाता है।

एग्रीफाउंड डार्क रेड :– प्याज की ये किस्म गर्मियों के टाइम में उगाई जाती है. इस किस्म को भारत के लगभग सभी हिस्सों में आसानी से उगाया जा रहा है. इसके कंद गोलाकार होते हैं. जो 100 से 110 दिन में पककर तैयार हो जाते हैं. इसकी पैदावार 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होती है।

भीमा सुपर :– प्याज की इस किस्म को पछेती किस्म माना जाता है. जो खरीफ की फसलों के टाइम उगाई जाती है. इसकी पैदावार एक हेक्टेयर में 250 से 300 क्विंटल तक हो सकती है. इसके कंद को तैयार होने में 110 से 115 दिन का वक्त लगता है।

एग्रीफाउंड लाइट रेड :– प्याज की इस किस्म की रोपाई रबी के टाइम में की जाती है. इसके कंद गोलाकार और हलके लाल रंग के होते हैं. यह किस्म रोपाई के 120 दिन बाद पककर तैयार हो जाती है. अच्छी देखभाल करने पर इसकी पैदावार 300 से 375 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो जाती है।

पूसा रेड :– प्याज की ये किस्म भी रबी के टाइम ही उगाई जाती है. इसके कंद गोलाकार होते है. जिनका रंग हल्का लाल पीला होता है. पूसा रेड रोपाई के 125 से 140 दिन बाद पककर तैयार होती है. इसकी प्रति हेक्टेयर उपज 250 से 300 क्विंटल तक हो जाती है।

प्याज की खेती कैसे करें और अधिक मुनाफा कमाये : संपूर्ण जानकारी

प्याज की खेती के लिए समशीतोष्ण और वर्षा रहित जलवायु की बहुत ही अनुकूल और सर्वोत्तम होती है. च्लंर ाप ीमजप से अच्छी उपज लेने के लिए फसल को खरपतवार से मुक्त रखना चाहिए, साथ प्याज के कंद की उचित बढ़वार के लिए हल्की सिंचाई करनी चाहिए. भोजन को स्वादिष्ट बनाने के लिए प्याज की जरूरत पड़ती ही है. प्याज एक ऐसी सब्जी है जिसका उपयोग हर गाँव, हर घर और बड़े से बड़े होटेल तथा रेस्टोरेंट में खाने के लिए उपयोग किया जाता है. सब्जीयों में कितने ही अच्छे मसाले डाल दें लेकिन प्याज के बगैर भोजन का स्वाद फीका पड़ जाता है. बहुत से लोग प्याज से दाल फ्राई, करते हैं तो बहुत लोग बैंगन का भरता में प्याज डालते हैं. कभी–कभी ऐसा होता है कि हमारे घर में सभी खाना खत्म हो जाता है. तो ऐसे में तत्काल भोजन के लिये प्याज को छोटे–छोटे भागों में काटकर उसमें नमक और सरसों का तेल मिलाकर रोटी से खाते हैं, इसके अलावा भी बहुत तरह से प्याज का उपयोग खाने के लिए किया जाता है. एक तरह से देखा जाय तो इसे कच्चे और पकाकर दोनों तरह से खाने के रूप में उपयोग होता है.

नमस्कार दोस्तों आज हम आपको बताने जा रहे हैं की प्याज का बीज कैसे बोया जाता है अच्छी पैदावार के लिए प्याज की खेती में किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए. अगर आपको यह पोस्ट अच्छी लगे तो इसे अपने दोस्तों के साथ सोशल मिडिया पर शेयर जरुर करें.

प्याज का सबसे अच्छा बीज

पूसा व्हाइट राउंड, नासिक लाल प्याज का बीज छ– 53, पूसा रेड, रतनारा पूछा, एग्री फाउंड रोज, पूसा व्हाइट फ्लैट, कल्याणपुर रैड राउंड, अर्का कीर्तिमान, ५–1 भ्लइतपक ममके वदपवद, पंचगंगा प्याज का बीज, ब्राउन स्पेनिश, एन– 257–1 ये सब प्याज की सबसे अच्छी किस्म हैं. लेकिन हाइब्रिड प्याज की खेती से अच्छी उपज के लिए अपने क्षेत्र में निर्धारित किश्मों का ही चयन करना चाहिए.

प्याज की खेती के लिए नर्सरी कैसे तैयार करें

यदि किसान भाई रबी के लिए प्याज की खेती करना चाहते हैं. तो प्याज की रोपाई जनवरी–फरवरी में किया जाता है. और दिसंबर–जनवरी में ठंड काफी बढ़ जाती है. जिसकी वजह से नर्सरी में बीजों का जमाव बहोत दिनों में होता है और अधिक ठंठ के कारण नर्सरी में पौधे भी काफी धीरे–धीरे बढ़ते हैं. इसलिए प्याज की नर्सरी नवंबर महीने में डाल देनी चाहिए.

प्याज की नर्सरी कैसे डालें

अगर खरीफ के मौसम में बरसात में बरसाती प्याज की खेती करना चाहते हैं. तो बरसाती प्याज की नर्सरी जून महीने में 30 जून से पहले डाल देनी चाहिए खरीफ के मौसम में नर्सरी में डाला गया प्याज 35 से 40 दिन में रोपाई के लिए तैयार हो जाता है. इस बात का ध्यान रखना चाहिए की बीज रोपाई से लगभग 10 दिन पहले नर्सरी में पानी देना बंद कर देना चाहिए जिससे पौधे मजबूत हो जाते हैं. और इसमें रोग कम लगते हैं.

प्याज की नर्सरी में कौन सा खाद डालें

प्याज की आधुनिक खेती करने तथा अच्छी पैदावार के लिए नर्सरी से ही प्याज की देखभाल शुरू कर देनी चाहिए, और यदि प्याज की नर्सरी में खाद डालने की बात करें तो नर्सरी डालने से पहले ही 1 से 1.5 मीटर लम्बी और लगभग 3 मीटर चौड़ी छोटी–छोटी क्यारी बना लेनी चाहिए. उसके बाद प्रति क्यारी 100 से 150 ग्राम व.।.৳ और 10 किलो अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद डालकर गुड़ाई कर देनी चाहिए और फिर उसके बाद इन क्यारियों में प्याज की नर्सरी डालनी चाहिए.

प्याज की खेती के लिए जलवायु और मिट्टी

प्याज की फसल के लिए अगर जलवायु की बात करें तो इसकी खेती के लिए तो थोड़े गर्म मौसम की आवश्यकता होती है. इसलिए रवि प्याज की खेती की रोपाई जनवरी–फरवरी में कई जाती है. तो अप्रैल महीने में प्याज पककर तैयार होती है और उस समय वातावरण में तापमान 25 से 35 डिग्री सेंटीग्रेड होती है. और खरीफ प्याज की खेती जुलाई में की जाती है सितम्बर–अक्तूबर में पककर तैयार हो जाती है. प्याज की खेती करने के लिए सभी प्रकार की मिट्टी अच्छी मानी जाती है.

उज्जैन में बनेगा फूलों का क्लस्टर, सिंहस्थ में नहीं होगी फूलों की कमी

उज्जैन। फूलों की तेजी से बढ़ती डिमांड और सिंहस्थ–2028 को देखते हुए उज्जैन और आसपास के जिलों में फूलों का क्लस्टर बनाया जाएगा। उद्यानिकी विभाग ने इसकी कार्य योजना तैयार कर ली है। इससे जहां किसान फूलों की खेती की तरफ आकर्षित होंगे, उनकी आय का स्थाई स्रोत बनेगा. वहीं उज्जैन में आम दिनों के साथ ही आगामी सिंहस्थ में फूलों की डिमांड पूरी की जा सकेगी। उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों का कहना है कि उज्जैन स्थित महाकालेश्वर ज्योतिलिंग सहित शहर के अन्य प्रमुख मंदिरों में प्रतिदिन बड़ी मात्रा में फूलों की खपत होती है। विशेष अवसरों, त्योहारों और मेलों के दौरान यह मांग कई गुना बढ़ जाती है। सिंहस्थ के समय देशविदेश से आने वाले लाखों श्रद्धालुओं के कारण फूलों की आवश्यकता चरम पर पहुंच जाती है। इस मांग को पूरा करने के लिए बाहरी राज्यों पर निर्भर रहना पड़ता है, जिससे परिवहन लागत बढने के साथ ताजगी और गुणवत्ता पर भी असर पड़ता है।

नई योजना के तहत उज्जैन और आसपास के क्षेत्रों में फूलों का क्लस्टर विकसित कर स्थानीय स्तर पर उत्पादन बढ़ाया जाएगा। इससे न केवल बाहरी निर्भरता कम होगी, बल्कि किसानों को भी बेहतर और स्थिर बाजार उपलब्ध होगा। परिवहन लागत में कमी आने से फूलों के दाम संतुलित रहेंगे और उपभोताओं को ताजे फूल मिल सकेंगे

भिंडी की उन्नत खेती

भिंडी की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

भिंडी की खेती के लिए सही तापमान और वर्षा का होना अति आवश्यक है। अगर यह उपयुक्त न हुए तो पैदावार में कमी होगी और किसान को कम लाभ होगा। भिंडी की खेती के लिए 20&35° C का तापमान उपयुक्त होता है और अलग अलग अवस्था में देखें तो, बुवाई के समय का तापमान 20 ls 29° C और हार्वेस्टिंग के समय 25 ls 35° C होना चाहिए। भिंडी की खेती के लिए 1000 उउ यानि 100 बउ की वर्षा की आवश्यकता होती है।

भिंडी कब बोई जाती है: गर्मियों की फसल के लिए भिंडी की बुवाई फरवरी–मार्च में करें तथा वर्षा कालीन फसल के लिए जून जुलाई में बुवाई की जाती है।

भिंडी की प्रसिद्ध किस्में

भिंडी की खेती कैसे करें: अर्का अनामिका, अर्का अभय, परभणी क्रांति, वर्षा उपहार, राधिका भिंडी, सम्राट भिंडी, पूसा ए–4,
पंजाब–7, हाइब्रिड

भिंडी की बीज दर: भिंडी की खेती में उचित मात्रा में पौधों का होना अति आवश्यक है। अगर पौधों की संख्या कम हुई तो खेत में खाली जगह रह जाएगी और अगर ज्यादा संख्या हुई तो पौधों के बीच पानी और न्यूट्रिएंट्स के लिए मुकाबला होगा जो की पैदावार को कम करेगा। इस लिए सही बीज दर का होना बहुत जरूरी है। भिंडी के वैरायटी वाले बीजों के लिए 8 kg प्रति हेक्टेयर या 3-5&4 kg प्रति एकड़ और हाइब्रिड बीजों के लिए इसकी मात्रा 2.5 ाह प्रति हेक्टेयर या 1 kg प्रति एकड़ उचित रहता है।

बीज उपचार: भिंडी के बीज की बुवाई से पहले उसका उपचार 10 g/kg बीज या 10&15 g/kg बीज के साथ करें जिससे फफूंद वाली बीमारियों से बचा जा सके और बीज का अंकुरण भी अच्छे से हो।

भिंडी के पोधो के बीच में दूरी: भिंडी के पौधों को कुछ इस प्रकार बोना चाहिए की पौधों के बीच 30 बउ की दूरी हो और कतार से कतार की दूरी 45 बउ रहे। भिंडी के बीज बोते समय ध्यान रखे की प्रति हिल तीन बीज डाले फिर 10 दिन बाद जब बीज अंकुरित हो जाये तो उसमे बस एक स्वस्थ सीडलिंग छोड़ दे बाकी की दो सीडलिंग्स को निकल दें।

भिंडी की फसल में उर्वरकों का सही प्रयोग और विधि: भिंडी की खेती में अच्छे उत्पादन के लिए 15 से 20 टन गोबर की खाद को 4–5 kg प्रति टन खाद में मिलकर प्रयोग करे यह खेत में पोरोसिटी (चवतवेपजल) और मिट्टी में पानी को रोकने की क्षमता बढायेगी और ज्प्ब्ट–च्न्ब ट फफूंद वाली बीमारियों से सुरक्षा करेगा। इसके साथ–साथ 80 ाह नाइट्रोजन, 60 ाह फॉस्फोरस और 60 ाह पोटाश प्रति हेक्टेयर दें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा और फॉस्फोरस पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय ही दे दी जाती है। नाइट्रोजन की बची हुई आधी मात्रा बाद में 30 दिनों के अंतर पर देना उचित होता है जिससे फसल को पूरे टाइम उचित नाइट्रोजन प्राप्त होती रहे। भिंडी में बेहतर फूलों के लिए आप ।उपदवमितज ळवसक का 200–400 उस प्रति एकड़ इस्तमाल कर सकते है। फूल आने के बाद भिंडी का आकार बढ़ाने के लिए का 150–200 उस प्रति एकड़ का प्रयोग करें।

भिंडी की फसल के मुख्य कीट: भिंडी की खेती करते समय विभिन्न प्रकार के कीट नुकसान पहुँचाते है यह कीट पूरी फसल को बर्बाद कर सकते है। भिंडी के मुख्य कीटों में शामिल है शाख और फल का कीट, भिंडी में फल छेदक इल्ली, वीविल, पत्ती लपेटक, सेमीलूपर, सफेद मक्खी और चेपा है।

जिसमे से शाख और फल का कीट, भिंडी में फल छेदक इल्ली, वीविल, पत्ती लपेटक, और सेमीलूपर को नियंत्रित करने के लिए आप 200 gm/acre का उपयोग कर सकते हैं और सफेद मक्खी और चेपाकी रोक थाम के लिए 30 100 ml/ha का उपयोग किया जा सकता है। भिंडी के कीटों को प्राकृतिक तरीके से भी रोका जा सकता है इसके लिए का उपयोग 5 हउध्सजत पानी में मिला कर छिड़काव विधि से खेत में लगाए यह सफेद मक्खी से वायरस के प्रसार की रोकथाम में सहायता करेगा।

भिंडी में मुख्य बीमारिया: भिंडी की खेती करते समय फफूंद वाली बिमारियों का बहुत खयाल रखना पड़ता है। इन बीमारियों का अगर समय से बचाव न किया जाये तो ये किसान को काफी नुकसान पहुँचा सकती है इसलिए इनका तुरंत निवारण जरूरी होता है। भिंडी की मुख्य बीमारिया है पाउडरी मिल्ड्यू फ्यूजेरियम विल्ट और सर्कोस्पोरा लीफ स्पॉट्स । ये फफूंद वाली बीमारियाँ है और इनके इलाज के लिए अथवा का उपयोग किया जाता है। इसकी मात्रा 700 हउध्बतम रखी जाती है।

दूसरी महत्वपूर्ण बीमारियों में से एक है येलो वीन मोजेक जो एक वायरल बीमारी है। इसके उपचार के लिए वायरस के वेक्टर को कंट्रोल करना जरूरी होता है। इसका वेक्टर सफेद मक्खी है जिसको कण्ट्रोल करने के लिए पहले NIIMPA 10000 2-6 ml/ltr के घोल का उपयोग करें। इसके घोल के छिड़काव करने के एक सप्ताह बाद को 5 gm/ltr पानी में मिला कर छिड़काव विधि से खेत में डालें। ऐसा करने से सफेद मक्खी को पूरी तरह से रोका जा सकता है।

निष्कर्ष: भिंडी (ओकरा) की खेती लगातार बाजार की मांग और ज्यादा मूल्य के कारण एक लाभदायक अवसर प्रदान करती है। सही जलवायु परिस्थितियों को सुनिश्चित करने, उपयुक्त किस्मों का चयन करके, उचित बीज दर और प्रभावी कीट और रोग प्रबंधन प्रथाओं को लागू करने से, किसान उच्च पैदावार और बेहतर–गुणवत्ता वाले उपज प्राप्त कर सकते हैं। स्वस्थ फसल विकास के लिए कार्बनिक खाद, संतुलित उर्वरकों और कीटों और फंगल रोगों के खिलाफ समय पर सुरक्षा उपायों का नियमित उपयोग स्वस्थ फसल विकास के लिए महत्वपूर्ण है। इन प्रथाओं को अपनाने से, किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं और स्थायी कृषि में योगदान कर सकते हैं। सफल भिंडी खेती न केवल एक लोकप्रिय सब्जी बढ़ने के बारे में है, बल्कि अधिकतम लाभ के लिए स्मार्ट और समय पर तकनीकों को लागू करने के बारे में भी है।

जैविक खेती से जुडी सभी जानकारियां

जैविक खेती भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही की जा रही है पहले कृषि के साथ–साथ गौ पालन किया जाता था, जिसके प्रमाण हमारे ग्रांथों में प्रभु कृष्ण और बलराम हैं जिन्हें हम गोपाल एवं हलधर के नाम से संबोधित करते हैं अर्थात कृषि एवं गोपालन संयुक्त रूप से अत्याधिक लाभदायी था, जोकि प्राणी मात्र व वातावरण के लिए अत्यन्त उपयोगी था और यह परम्परागत खेती आजादी तक भारत में की जाती रहा है बाद जनसख्याँ विस्फोट कारण देश में उत्पान बढ़ाने का दबाव बना जिसके कारण देश रासयनिक खेती की और अग्रसर हुआ और अब इसके बुरे परिणाम सामने आने लगे है जैसा की हम बता चुके हैं।

रासायनिक खेती हानिकारक के साथ साथ बहुत महंगी भी पढ़ती है जिससे फसल उत्पादन के दाम बढ़ जाते हैं इसके लिए अब देश दोबारा से जैविक खेती की और अग्रसर हो रहा है क्योंकि जैविक खेती कृषि पद्धति रसायनिक कृषि की अपेक्षा सस्ती, स्वावलम्बी एवं स्थाई है। आइये जानते हैं क्या है जैविक खेती और किसानों को जैविक खेती क्यों करना चाहिए। **केंचुआ की सहायता से कैसे सुधरती है मिट्टी की सेहत** :– हम सभी अच्छी तरह जानते हैं कि भूमि में पाये जाने वाले केंचुए मनुष्य के लिए बहुपयोगी होते हैं। भूमि में पाये जाने वाले केंचुए खेत में पढ़े हुए पेड़–पौधों के अवशेष एवं कार्बनिक पदार्थों को खा कर छोटी–छोटे गोलियों के रूप में परिवर्तित कर देते हैं जो पौधों के लिए देशी खाद का काम करती है। इस केंचुए से छोटे से स्थान में 2 माह में कई हैक्टेयर के लिए खाद तैयार किया जा सकता है। इस खाद को तैयार करने के लिए केंचुआ, मिटटी तथा खरपतवार की जरुरत पड़ती है, जो आसानी से मिल जाता है। आइये जानते हैं कैसे केचुएँ आपके खेत की मिट्टी की सेहत बनाते हैं। **मिट्टी की उर्वरा शक्ति एवं फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए** :– जैव कल्चर भूमि में पड़े पादप अवशेषों की पाचन क्रिया बढ़ाते है जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति एवं फसल उत्पादन क्षमता बढ़ती है।अक्सर दलहनी फसलों में उर्वरक का प्रयोग नहीं किया जाता है इसका कारण यह रहता है की दलहनी पौधों की जड़ों में राइजोबियम कल्चर पाया जाता है। जो वायुमंडल से नाईट्रोजन लेकर अपने लिए पोषक तत्वों की पूर्ति कर लेता है परन्तु जो फसल दलहनी नहीं है उस फसल के पौधों के जड़ों में राईजोबियम नहीं पाया जाता है। दलहनी पौधों की जड़ को दूसरी फसल में प्रयोग करने से नाईट्रोजन की जरुरत को पूरा क्या जा सकता है। **किसान कैसे करें जैविक खेती का पंजीयन एवं बेचने की प्रक्रिया** :– किसान जैविक खेती करता है या करने की कोशिश करता है तो उसे जैविक पंजीयन कराना चाहिए क्योंकि जैविक पंजीयन नहीं रहने से किसान को फसल का मूल्य कम मिलता है। क्योंकि आप यह किसी ग्राहक या व्यापारी को बताने के लिए कोई दस्तावेज नहीं है जिससे यह कहा जय की कौन सा फसल जैविक है या रासायनिक। इसलिए किसान समाधान ने जैविक की पंजीयन की पूरी जानकारी लेकर आया है। जिसमे किसान 1400 रु. खर्च करके एक हैक्टेयर का पंजीयन प्राप्त कर सकते है। **जैविक खाद घर पर ही बनाएं** :– अत्यधिक रासायनिक उर्वरक तथा कीटनाशक के उपयोग के कारण कृषि में लागत तथा बीमारियां बढ़ रही है। लागत को कम तथा बीमारियों की रोक थाम के लिए जैविक कृषि को अपनाना होगा। इसके लिए यह जरुरी है की किसान अपने घर पर ही उर्वरक की जगह देशी खाद तथा रासायनिक कीटनाशक की जगह देशी कीटनाशक बनाने की जरुरत है। इसके लिए किसान को खड़ा तथा कीटनाशक बनाने की विधि आना चाहिए। इसलिए किसान संधान खाद तथा कीटनाशक बनाने की विधि लेकर आया है। इसी कड़ी में आज गाय के गोबर, गुड तथा गो मूत्र से तरल जैविक खाद बनाने की जानकारी लेकर आया है।

किसान की लहलहाती फसल का राज
नेटसर्फ के उत्कृष्ट जैविक उत्पाद

इसके अतिरिक्त स्वास्थ, सौंदर्य एवं होम केयर उत्पादों की वृहद श्रृंखला
मो.: 9826055852, 7224943188

CIN : U01100MP2020PTC051152, GST : 23AAECJ7945C1ZP
Patwari Halka No. 62, Servery No. 635 Gram Nagadi,
Post Niman, Tehsil Jaora, Dist. Ratlam-457226
Call : +917987649849, +919009288977

भण्डार गृह को हानि पहुंचाने वाले कीटों की पहचान एवं पूर्ण जानकारी।

किसान कठोर परिश्रम के बाद अनाज को पैदा करता है और भाण्डारण के दौरान उपज का काफी हिस्सा इसमें लगने वाले कीटों के द्वारा नष्ट कर दिया जाता है. भण्डार कीटों में 19 प्रकार के कीट हानि पहुंचाते हैं. इसलिए देश को खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बनाने के लिए भण्डारण के वक्त नुकसान पहुंचाने वाले कीटों को पहचान कर उनको नियंत्रण करना आवश्यक है. भण्डार गृह में लगने वाले कीट अनाज की मात्रा को खत्म कर देते हैं. और इसके साथ–साथ उनके पौष्टिक गुणों को भी नष्ट कर देते हैं. इस लेख में कीटों द्वारा क्षति की प्रकृति के बारे में बताया गया है.

किसान कठोर परिश्रम के बाद अनाज को पैदा करता है और भाण्डारण के दौरान उपज का काफी हिस्सा इसमें लगने वाले कीटों के द्वारा नष्ट कर दिया जाता है. भण्डार कीटों में 19 प्रकार के कीट हानि पहुंचाते हैं. इसलिए देश को खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बनाने के लिए भण्डारण के वक्त नुकसान पहुंचाने वाले कीटों को पहचान कर उनको नियंत्रण करना आवश्यक है. भण्डार गृह में लगने वाले कीट अनाज की मात्रा को खत्म कर देते हैं. और इसके साथ–साथ उनके पौष्टिक गुणों को भी नष्ट कर देते हैं. इस लेख में कीटों द्वारा क्षति की प्रकृति के बारे में बताया गया है.

भण्डार गृह के मुख्य कीट (Main pests of warehouse)

1.सुरसुरी (Red Rust Floor Beetle) : इसे आटे की सुरसुरी भी कहा जाता है. यह कीट भारत में हर जगह पाया जाता है. यह कीट पूर्ण दानों को नुकसान नहीं पहुंचाता यह केवल कटे हुए दानों या अन्य कीटों के द्वारा ग्रसित दानों को ही नुकसान पहुंचाता है. जब इस कीट की संख्या अधिक हो जाती है तो आटा पीले रंग का हो जाता है और इसमें फफूंद विकसित हो जाता है तथा एक प्रकार की अप्रिय गंध आने लगती है और आटा खाने योग्य नही रहता. इस कीट के प्रौढ. और सूण्डी दोनों ही हानि पहुंचाते हैं. प्रौढ. कीट छोटे लाल भूरे रंग के होते हैं. ये कीट आटा या सूजी आदी को अधिक नुकसान पहुंचाते हैं.

2. चावल का घुन (Rice Weevil) : इस कीट की सूण्डी तथा प्रौढ. दोनो ही नुकसान पहुंचाते हैं. परन्तु सूण्डी ज्यादा नुकसान पहुंचाती है. प्रौढ कीट भूरे रंग का लम्बा व बेलनाकार होता है. इसके सिर के आगे लम्बी सूण्ड निकली रहती है मादा कीट दाने में एक छोटा छिद्र बनाकर उसमें अन्डा देती है जिसमें से सूण्डी निकलने के बाद दाने के अन्दर के समस्त भाग को खा जाती है. इस कीट का प्रकोप होने से दाने खोखले हो जाते है और खाने योग्य नही रहते हैं. यह कीट चावल के अलावा गेहूं, मक्का आदि को भी नुकसान पहुंचाता है.

3. लघु धान्य बेधक (Lesser Grain Borer) : इस कीट की सूण्डी और प्रौढ दोनो ही नुकसान पहुंचाते हैं. इसकी सूण्डी लगभग 3 मि.मी. लम्बी, गंदे से सफेद रंग की होती है. और हल्के भूरे रंग का सिर होता है. प्रौढ कीट छोटा बेलनाकार गहरा भूरा अथवा काले रंग के शरीर वाला होता है तथा इसका धड़ नीचे की तरफ होता है. प्रौढ़ दाने में टेढ़े–मेंढ़े छेद करके उन्हे पाऊडर में बदल देते है जिसकी वजह से केवल भूसा और आटा ही शेष रह जाता है. ये कीट खाते कम है, नुकसान ज्यादा पहुंचाते हैं. सूण्डी दाने के स्टार्च को खाती है और केवल छिलके को ही छोड़ती है. इस कीट का आक्रमण गेहूं, चावल, ज्वार, मक्का, बाजरा में अधिक होता है.

4. गेहूं का खपरा (Khapra Beetle) : इस कीट की सूण्डी ही अकेली नुकसान पहुंचाती है. यह कीट सामान्यतः वर्ष भर नुकसान पहुंचाते हैं. परन्तु अधिक नुकसान जुलाई से अक्टूबर महीने में करते हैं. इसकी सूण्डी दाने के भ्रूण वाले भागों को खाती है. ये दाने के अन्दर प्रवेश नहीं करते, बाहर वाले भाग में ही नुकसान करते हैं. इसका प्रौढ़ स्लेटी भूरे रंग का होता है. इसका शरीर अंडाकार, सिर छोटा और सिकुडने वाला होता है. यह भी गेहूं, चावल, मक्का, ज्वार, जौ आदि को नुकसान पहुंचाते हैं.

5. दालो का घुन (Pulse Beetle) : इस कीट को ढ़ोरा, घुन भी कहा जाता है. इस कीट का प्रकोप खेत और भण्डार गृह दोनों जगह होता है इस कीट की सूण्डी नुकसान पहुंचाती है. जब फसल खेत में होती है तब ही इसका प्रकोप शुरु हो जाता है. मादा फलियों के ऊपर अण्डे देती है. अण्डे से सूण्डी निकलती है तो यह फली में छेद करके प्रवेश कर जाती है तथा दानों को खाती रहती है. जिस जगह से सूण्डी दानों में घुसती है वह बन्द हो जाता है तथा दाना बाहर से स्वस्थ दिखता है इस तरह से ग्रसित दानें भण्डार गृह में आ जाते हैं. ये कीट भण्डार गृह में दरारों में छिपे रहते हैं. जब दालें भण्डार गृह में रखी जाती है उस समय मादा उन पर अण्डे देती हैं जो दानों की सतह पर चिपके हुए नजर आते हैं. इसका प्रकोप जुलाई से सितम्बर दो महीनों में ज्यादा होता है. प्रौढ कीट का रंग भूरा होता है. इनका शरीर आगे से नुकीला तथा पीछे की तरफ चौड़ा होता है.

बीज, खाद, कीटनाशक एवं खाद्य निर्माता / विक्रेता कृपया ध्यान दें।
Smart Pack®
Complete Packaging Solution
पैकेजिंग में नया क्या है???
International Quality Packaging Product Range
Download the App SMART PACK INDIA
Google play
Available on the App Store
Smart Packaging System
M-36, Trade Center, 18, South Tukoganj, Indore-452001 (M.P.)
Ph.: +0731-4076606, 2526606, 9827035266, 9827035265, 80488-90548, 9109108483,
Email: sales@smartpackindia.com, smartpack786@yahoo.com
Web.: www.smartpackindia.biz, www.smartpackindia.com
Business Enquiries Solicited

औषधीय पौधों की खेती : इन औषधीय पौधों की खेती देगी भरपूर मुनाफा

परंपरागत खेती का विकल्प बनी औषधीय फसलों की खेती, अच्छे मुनाफे से किसानों का रूझान बढ़ा : देश में कोरोना की दूसरी लहर में लाखों लोगों ने आयुर्वेद की औषधियों का सेवन करके स्वास्थ्य में लाभ पाया। आयुर्वेद विश्व की सबसे प्राचीन चिकित्सा पद्धति है और इसमें औषधीय पौधों का उपयोग किया जाता है। कोरोना काल के समय देश–दुनिया में औषधीय पौधों की मांग में बहुत अच्छी बढ़ोत्तरी हुई है और औषधीय पौधों की खेती करने वाले किसानों ने अच्छा लाभ कमाया है। देश की कई नामी कंपनियां के आयुर्वेद उत्पाद विश्वभर में प्रसिद्ध है और सालभर उनकी मांग बनी रहती है। ट्रैक्टर जंक्शन की इस पोस्ट में किसान भाइयों को 5 महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की जानकारी दी जा रही है। किसान भाई अपने क्षेत्र की जलवायु, मौसम और भूमि के आधार पर इनकी खेती कर सकते हैं। कई राज्यों में सरकार की ओर से सब्सिडी और अनुदान भी दिया जाता है।

भारत में पारंपरिक फसलें बनाम औषधीय फसलें : भारत के अधिकांश किसान पारंपरिक फसलों के उत्पादन से जुड़े हुए हैं और अपने खेतों में गेहूं, चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, गन्ना,कपाल, सरसों, मूंगफली आदि की बुवाई करते हैं। जबकि औषधीय फसलों में सर्पगन्धा, अश्वगंधा, ब्राम्ही, कालमेघ, कौंच, सतावरी, तुलसी, एलोवेरा, वच, आर्टीमीशिया,लेमनग्रास, अकरकरा, सहजन प्रमुख है। परंपरागत फसलों की खेती की तुलना में औषधीय पौधों की खेती से एक हेक्टेयर में किसानों को ज्यादा आमदनी होती है।

खेती के लिए जरूरी है फसल विविधता : खेत में कई सालों तक एक ही तरह की फसल उगाने से पैदावार क्षमता प्रभावित होती है। ऐसे में खेत में फसल विविधता के लिए औषधीय खेती करने की सलाह कृषि वैज्ञानिकों की तरफ से दी जाती है। कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि खेत की एक ही तरह की फसल लेने से मिट्टी की उर्वरता प्रभावित होती है। ऐसे में किसानों को फसल विविधता के लिए सलाह दी जाती है। फसल विविधता के इस क्रम में अगर गेहूं और धान के खेतों को खाली होने के बाद अगर किसान उसमें औषधीय पौधों की खेती करेंगे तो यह उनके लिए बहुत लाभकारी होगा। अगली बार जब वह उसमें धान और गेहूं उगाएंगे तो उसकी पैदावार अधिक होगी।

अकरकरा की खेती : अकरकरा की खेती औषधीय पौधे के रूप में की जाती है। इसके पौधे की जड़ों का इस्तेमाल आयुर्वेदिक दवा बनाने में किया जाता है। पिछले 400 साल से उपयोग आयुर्वेद में इसका उपयोग हो रहा है। यह कई औषधीय गुणों से भरपूर है।

इसके बीज और डंठल की मांग बनी रहती है। इसका उपयोग दंतमंजन बनाने से लेकर दर्द निवारक दवाओं और तेल के निर्माण में होता है। अकरकरा की खेती कम मेहनत और अधिक लाभ देने वाली पैदावार हैं। अकरकरा की खेती 6 से 8 महीने की होती है। इसके पौधों को विकास करने के लिए समशीतोष्ण जलवायु की जरूरत होती है। भारत में इसकी खेती मुख्य रूप से मध्य भारत के राज्यों उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, हरियाणा और महाराष्ट्र में होती। इसके पौधों पर तेजगर्मी गर्मी या अधिक सर्दी का प्रभाव देखने को नही मिलता। इसकी खेती के लिए मिट्टी का पी. एच. मान सामान्य होना चाहिए।

अश्वगंधा की खेती : यह एक झाड़ीदार पौधा होता है। इसकी जड़ से अश्व जैसी गंध आती है, इसलिए इसे अश्वगंधा कहते हैं। यह अन्य सभी जड़ी–बूटियों में सबसे अधिक प्रसिद्ध है। इसके उपयोग तनाव और चिंता को दूर करने में किया जाता है। इसकी जड़, पत्ती, फल और बीज औषधि के रूप में उपयोग किया जाता है। किसानों के लिए अश्वगंधा की खेती बहुत लाभकारी है। किसान इसकी खेती से कई गुना अधिक कमाई कर सकते हैं, इसलिए इसे कैश कॉर्प भी कहा जाता है। अश्वगंधा को बलवर्धक, स्फूर्तिदायक, स्मरणशक्ति वर्धक, तनाव रोधी, कैंसररोधी माना जाता है। अश्वगंधा कम लागत में अधिक उत्पादन देने वाली औषधीय फसल है। अश्वगंधा की खेती कर किसान लागत का तीन गुना लाभ प्राप्त कर सकते हैं। अन्य फसलों की अपेक्षा प्राकृतिक आपदा का खतरा भी इस पर कम होता है। अश्वगंधा की बोआई के लिए जुलाई से सितंबर का महीना उपयुक्त माना जाता है। वर्तमान समय में पारंपरिक खेती में हो रहे नुकसान को देखते हुए अश्वगंधा की खेती किसानों के लिए काफी महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।

सहजन की खेती : सहजन में 90 तरह के मल्टी विटामिन्स, 45 तरह के एंटी ऑक्सीजडेंट गुण और 17 प्रकार के एमिनो एसिड पाए जाते हैं। इसलिए सालभर इसकी मांग बनी रहती है। कम लागत में तैयार होने वाली इस फसल की खासियत यह है कि इसकी एक बार बुवाई के बाद चार साल तक बुवाई नहीं करनी पड़ती है। सहजन की खेती लगाने के 10 महीने बाद एक एकड़ भूमि में किसान एक लाख रुपए कमा सकते हैं। सहजन को ड्रमस्टिक भी कहा जाता हैं। इसका उपयोग सब्जी और दवा बनाने में होता है। देश के अधिकतर हिस्सों में इसकी बागवानी की जा सकती है। आयुर्वेद में इसके पत्ते, छाल और जड़ तक का उपयोग किया जाता है। करीब पांच हजार साल पहले आयुर्वेद ने सहजन की जिन खूबियों को पहचाना था, आधुनिक विज्ञान में वे साबित हो चुकी हैं। देश के अपेक्षाकृत प्रगतिशील दक्षिणी भारत के राज्यों आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु और कर्नाटक में इसकी खेती होती है।

भारत की नं. 1
औषधीय
सीड्स कंपनी
AGRI MALL
KISAN KI UNNATTI DESH KI PRAGATI
मो. 8319628341
Samriddhi Organic Agro Biotech
उत्पाद : जीरा बीज ✲ अजवाईन ✲ सौंफ बीज ✲ मैथी ✲ मोरिंगा सीड्स
कालमेघ ✲ अश्वगंधा ✲ सर्पगंधा ✲ तुलसी ✲ चिया सीड्स ✲ कलोंजी ✲ किनोआ
मिल्क थिस्ट्रल ✲ अदरक ✲ हल्दी ✲ अकरकरा ✲ ईसाबगोल सीड्स इत्यादि
201, देवधर काम्पलेक्स, नसीया रोड़, इन्दौर : 9399500173

हमारे अन्य कृषि उपकरण
सीडड्रिल
प्याज प्लांटर
मल्टी पर्पज लहसुन सीडड्रिल
थ्रेशर
ट्रॉली
36 वर्षो से विश्वसनीय नाम :...
गौरव इंजिनियरिंग वर्क्स
नागदा डुंगारिया रोड, बस स्टेण्ड जहांगीरपुर, तह. बड़नगर जिला - उज्जैन (म.प्र.)
मो.: 99770-37269, 82369-78321, 99269-35391,
98934-57951, 98269-32238, 9754262366
E-mail: gouravengineering88@gmail.com

वर्षो पुराने आपके जाने पहचाने
CIAE टेस्टेड
श्री सोलंकी कृषि उद्योग
सभी प्रकार के आधुनिक कृषि यंत्र के निर्माता एवं विक्रेता
सीड ड्रिल
हाइड्रलिक ट्रॉली
आलू बोनी मशीन
तोता पंजा
प्लाऊ
पंजा
टैंकर
कल्टीवेटर
सोलंकी का किसान, सदैव खुशहाल किसान...
शासकीय अनुदान (सब्सिडी) पर उपलब्ध
24, इण्डस्ट्रियल एरिया, राऊ-रंगवासा रोड, राऊ-453 331 जिला इन्दौर (म.प्र.)
98265-09525
99260-09090
99770 33344
9294899090
हमारी गुणवत्ता का सभी लोहा मानते हैं!

पंवार इंजीनियरिंग वर्क्स
देवास-उज्जैन रोड, नरवल झाला, जि. उज्जैन
M: 9424561042, 9669212228

Jepika®
M.: 7898701338-39
[redacted] E-mail: jepikapaints@gmail.com

गाँव में छोटे किसानों के लिए 8 कमाल के प्राचीन कृषि यंत्र, जानें कृषि यंत्र के नाम और विशेषताएं

किसान के जीवन में खेती में काम आने वाले औजारों का प्रमुख स्थान है, लेकिन यदि किसान प्राचीन तरीके से खेती खेती–बाड़ी का काम करते हैं तो उसमें मशीनों की आवश्यकता नहीं पड़ती है ऐसे हालात में किसानों को प्राचीन कृषि यंत्र का ही सहारा लेना पड़ता है। गाँव में रहने वाले किसान आज भी प्राचीन तरीके से ही कृषि कार्य करते हैं, यहां के किसान अपने फसलों की देखरेख आज भी प्राचीन ढंग से करते चले आ रहे हैं. इसका मुख्य कारण यह है कि गांव में रहने वाले किसानों के पास या तो बहुत अधिक खेती करने योग्य भूमि नहीं होती या खेती में काम आने वाली मशीन का खर्च नहीं दे सकते। इसलिए गाँव में रहने वाले अधिकांश किसान आज भी खेती में काम आने वाले हस्त चलित कृषि यंत्र (प्राचीन कृषि यंत्र) का उपयोग करते हैं. वैसे तो खेती में प्रयोग किए जाने वाले औजार बहुत से हैं लेकिन इस पोस्ट में हमने जो देसी जुगाड़ कृषि यंत्र के बारे में जानकारी दी है यह यंत्र किसानों के लिए बेहद ही अनिवार्य है। नमस्कार दोस्तों आज हम आपको गाँव में प्रयोग होने वाले ऐसे 8 प्राचीन कृषि यंत्र और देसी जुगाड़ कृषि यंत्र के बारे में बताने जा रहे हैं जो सभी किसान भाइयों के लिए बहुत ही आवश्यक होता है. तो दोस्तों अगर आपको यह जानकारी अच्छी लगे तो इसे शेयर जरुर करें।

खेती में काम आने वाले छोटे किसानों के कृषि यंत्र : खुरपी, हँसुआ, फरसा, कुदाल, कल्टीवेटर, रोटावेटर, स्प्रे मशीन, हजारा।

खुरपी का उपयोग (Khurpi Agriculture Tool) : इसे देशी खुरपी भी कहा जाता है, इससे खड़ी फसलों में घास या फालतू के खरपतवार की निंदाईधनिराई की जाती है. इस देशी यंत्र खुरपी की सहायता से घने से घने फसलों में से फसलों को बिना कोई नुकसान पहुंचाए एक–एक घास को निकाला जाता है. **Khurpi ka Upyog** ऐसे फसलों में किया जाता है, जहां की मिट्टी शख्त और कठोर हो जाती है. जैसे– गाजर, उववसप ाप ीमजप, मिर्च, धान, गेहूं, इत्यादि फसलों की पौधों के आसपास. और ऐसे में यदि घास को हाथों के द्वारा निकाला जाए तो वह ऊपर से हो टूट जाती हैं और फिर उस मे से नए शाखाएं निकलकर फसलों की हानि पहुंचते हैं।

हँसुआ या हसिया का उपयोग : यह यंत्र फसलों की कटाई के लिए उपयोग में लिए जाता है. इसकी मदद से किसान धान की फसल, गेहूं की फसल, ज्वार, bajra ki kheti की फसल इत्यादि फसलों की कटाई करते हैं.

फरसा या फावड़ा का उपयोग : यह देशी यंत्र खेतों की खुदाई और फसलों को मिट्टी चढ़ाने के लिए उपयोग में लिया जाता है. फावड़ा का उपयोग ट्रेक्टर से खेतों की जुताई के बाद खेत के बचे हुए कोनों की खुदाई करने, मिर्च, बैंगन, गेंदा इत्यादि फसलों को मिट्टी चढ़ाने, तथा परती खेतों की खुदाई के साथ–साथ अन्य कार्यों के लिए भी फावड़ा का इस्तेमाल किया जाता है। इसके साथ ही फावड़ा का उपयोग छोटे किसान ऐसे खेतों की खुदाई करने के लिए करते हैं जहाँ किसानों की खेत में ट्रेक्टर जाने का रास्ता नहीं होता है तो फरसा से ही खेतों की खूदाई करके किसान अगली फसलों की बुआई करते हैं। शेष अगले अंक में....

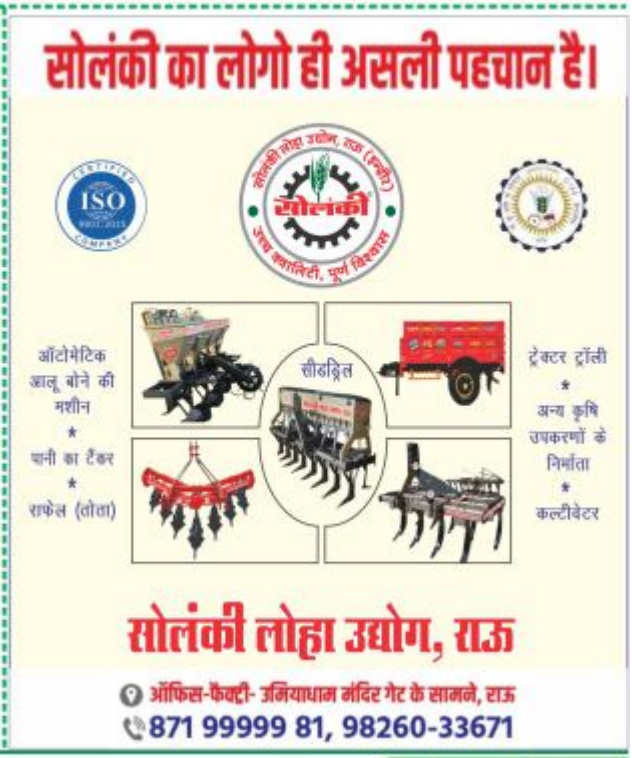

WHY USE CHAMBAL GYPSUM?
- Corrects Soil Alkalinity (Reclaims Sodic Soils)
- Provides Direct Calcium & Sulfur Nutrients
- Improves Water Infiltration & Drainage
- Enhances Seed Germination
- Loosens Dense Clay Soils
- Reduces Soil Erosion and Runoff
TOP AGRICULTURAL BENEFITS
Balances Soil pH: Vital for nutrient availability.
Increases Yield & Crop Quality: Improves overall plant health.
Breakdown Compacted Soil: Solves physical soil problems.
Synergizes with Other Fertilizers: Makes nutrients more efficient.
A Long-Term Soil Investment: Builds soil fertility over years.
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED COMPANY
CHAMBAL™
NATURAL SULPHUR+ CALCIUM
$CaSo_4$ $2H_2O$
GYPSUM POWDER
Natural Gypsum
Processed & Packed by :
SHREE SHYAM CHEMICAL & MINERAL
BIKANER ROAD, VILLAGE BHADWASI NAGAUR, RAJASTHAN 341001
CUSTOMER CARE : 94133-84498, 75973-88381

दो दशकों से अधिक किसानों के
भरोसे का साथी... एग्रोफॉस
KRISHI
SAMRIDDHI
किसानों की शान खेती की जान
चोखी क्वालिटी वाजिब दाम
KRISHI SAMRIDDHI GOLD
FORTIFIED FERTILIZER
दानेदार
SINGLE SUPER PHOSPHATE (GRANULATED)
जिंक + बोरान
अधिक उत्पादन अधिक लाभ
निर्माता एवं विपणनकर्ता
एग्रो फॉस इंडिया लिमिटेड
Agro Phos
www.agrophos.com
मुख्यालयः एम. 87, ट्रेड सेन्टर, 18, साऊथ तुकोगंज, इन्दौर
मो. 97524 12001, 97524 12009 मेल : info@agrophos.com

श्री नाथ
सेल्स कार्पोरेशन
8-ए, स्नेह नगर, इंदौर-452001 (म.प्र.)
फोन : 0731-4043255, ई-मेल : shrinathsalesindore@gmail.com
प्रो. दीपक द्विवेदी (मो. 9425082716, 9826965400, 9752332746)
अम्बर सीड्स एण्ड फार्म
बलराम सीड्स
हल्दी घाटी सीड्स फार्म
टॉपिका सीड्स (प्रा) लि.
चन्द्रा सीड स्टोर्स
CLAUSE
एच.एम. क्लाउज इंडिया प्रा.लि.
दीपक सीड्स प्रा.लि.
देसाई सीड्स कार्पोरेशन
Delta
डेल्टा क्रॉप साइंस प्रा.लि.
गोदरेज एग्रोवेट लि.
गोदावरी सीड्स फार्म
INDUS
आई एंड बी सीड्स प्रा.लि.
JINDAL
जिन्दल क्रॉप साइंस प्रा.लि.
KANAN
कानन सीड्स प्रा.लि.
कावेरी सीड्स कं. लिमिटेड
माऊली सीड्स प्रा.लि.
नन्दीनी एग्री साइंसेज प्रा.लि.
राजकुमार बीज भंडार
सकुरा सीड्स कार्पोरेशन
संदीप एग्री साइंसेस प्रा.लि.
Seed Land
सीडको एग्रो इंडस्ट्रीज
TOKITA INDIA
टोकिटा सीड्स इंडिया प्रा.लि.
सहयोगी प्रतिष्ठान
श्रीजी इन्टरप्राइजेस
प्लाट नं. 5, 'जे' कम्पाउण्ड (एस.आर. कम्पाउण्ड), देवास नाका, लसुड़िया मोरी, ए.बी. रोड, इन्दौर-452010 (म.प्र.)
मो. 9425082715, 9659694181,
ई-मेल : shreejienterprises511@gmail.com
सी एण्ड एफ एजेन्ट
गोदरेज एग्रोवेट लि.
कानन सीड्स प्रा.लि.
संदीप एग्री साइंसेज प्रा.लि.
नन्दीनी एग्री साइंसेज प्रा.लि.
आई एण्ड बी सीड्स प्रा.लि.
डेल्टा क्रॉप साइंस प्रा.लि.

बीज की दुनिया में एक चिर-परिचित नाम...
उत्तम बीज

UTTAM SEEDS
Moghat Road, Khandwa (M.P.)
Mob.: 7000522646, 9424502648
Email : uttamseed123@rediffmail.com

जवाहर जैन
प्रोप्रायटर
Mob. 98270-80021
98270-80027

JAWAHAR
Trading Company
37, Daulat Ganj, Ujjain (M.P.)

Deals in:
All Type of Crop
& Vegetable Seeds

प्रगतिशील किसानों को भरोसा है जिसपर
बंसल सीड्स

BANSAL SEEDS
Office : Infront of Ramesh Petrol Pump Pandhana Road, Khandwa (M.P.)
Plant : Indore Road, Khandwa (M.P.), Mob.: 9303963669, 7509519019
Email - bansalseeds121@gmail.com

प्रगतिशील किसान की
पहली पसंद...कुबेर

Kuber Seeds & Biotech
Add. : Nemi Ware House, Ambodiya Road, Naikhedi,
Ujjain - 456006 (M.P.) Mob.: +91 9713218070
Email : kuberseeds3@gmail.com
Web.: www.kuberseedsandbiotech.com
Business Enquiries Solicited

GREEN GOLD AGRI AND
BIOTECH PRIVATE LIMITED
ANUKUL
MARKETING
7049475459

हर किसान की पहली पसंद ग्रीन गोल्ड
सोयाबीन, गेहूं, मूंग और चने के बीज आदि

Prakalp Corporate, 3rd Floor, 141,
Anurag Nagar LIG Link Road, Indore
Contact: 82694 94082, 82694 34886

greengoldagritech@gmail.com
www.greengoldagritech.com

मुर्गी पालन का व्यापार शुरू कैसे करें?

मुर्गी पालन का काम की स्थापना के लिए सही जगह की आवाश्यक्ता। इसके लिए कुछ अधिक जगह की आवश्यकता पड़ती है. इस व्यापार में इस्तेमाल होने वाली जगह का बहुत बड़ी भूमिका होती है. पोल्ट्री और डेरी फार्म की स्थापना के लिए आवश्यक जगहों का वर्णन नीचे दिया जा रहा है। पोल्ट्री फॉर्म अथवा डेरी फार्म के लिये साफ सुथरी और लम्बी जगहों की आवश्यकता होती है। यह दरअसल इस व्यापार का सबसे महंगा हिस्सा है, किन्तु इसके लिये डरने की आवश्यकता नहीं है। छोटे पैमाने पर इस व्यापार को करने के लिए आप अपने घर के आस पास की जमीन का इस्तेमाल कर सकते हैं, क्यों कि मवेशियों अथवा पाली गयी मुर्गियों की संख्या पर इस्तेमाल होने वाली जमीन की लम्बाई–चौडाई निर्भर करती है। वातावरण की कुछ विशिष्ट वर्णन नीचे दिए जा रहे हैं, इसके लिए खास कर वैसी जगहो का चयन करना चाहिये, जो शहर से थोड़ी दूर होती है, ताकि जानवरों को होर्न आदि से कोई परेशानी न हो। अपने चुने गये जगह पर ये तय कर लें कि पानी की कमी किसी भी तरह से नहीं होगी. यदि आप फार्म घर के आस पास लगाना चाहते हैं तो ये परेशानी आपको पेश नहीं आएँगी। जगह चुनने से पहले वहाँ ट्रांसपोर्टेशन की व्यवस्था का जायजा जरूरो ले लें।

मुर्गी पालन का काम के लिए ऋण :– पोल्ट्री फॉर्म के लिए सरकार आंशिक रूप से ऋण देती है। कल्पना कीजिये कि आप पोल्ट्री फॉर्म की स्थापना करना चाहते हैं और इसका बजट 1 लाख रूपए का बनाया है, हालांकि इसका बजट 1 लाख से ऊपर का होता है। फिर भी यदि 1 लाख रूपए का बजट हो, तो सरकार इस पर सब्सिडी प्रदान करती है, जनरल कैटेगरी वालों को 25: प्रतिशत यानि 25000 रू की सब्सिडी और यदि आप एसटी / एससी कैटेगरी के हों, तो 35: प्रतिशत रू 35000 की सब्सिडी देती हैं. ये सब्सिडी NABARD और एमएएमसई द्वारा दी जाती है. इसी तरह आप कम खर्च में पेन बनाने का व्यापार शुरू कर सकते है.

पशुओं में मुँह व खुर रोग

मुँह व खुर रोग एक जटिल विषाणु जनित संक्रामक रोग है । यह रोग फटे खुरों वाले पशुओं, अर्थात गाय, बैल, भैंस, भेड, बकरी एवं सूकर में होता है। भेड़ में इस रोग के लक्षण अस्पष्ट होते हैं लेकिन रोग से ठीक हुई भेड़ में 5 मास तक यह विषाणु उसके शरीर में पाये जा सकते हैं। यह रोग घरेलु पशुओं के अतिरिक्त ऊँट, हाथी, याक व अन्य जंगली पशुओं में भी देखा गया है। इस रोग में मुँह, मसूढ़ों, जीभ, पैरों व खुरों के बीच में छालों का बनना एवं लंगड़ापन प्रमुख लक्षण हैं।

मुँह व खुर रोग का विषाणु बहुत ही प्रतिरोधक होता है एवं प्रभावित स्थानों पर अर्थात् उन ठण्डे देशों में जहां पर तापमान बहुत कम होता है, इगभग एक वर्ष तक जीवित रह सकता है। हरी घास व चारे पर विषाणु लगभग 4 माह तक जीवित रह सकते हैं । पोटेशियम परमेगनेट, कापर सल्फेट, सोडियम हाइड्रोक्साइड व सोडियम कार्बोनेट से विषाणु का असर समाप्त हो जाता है।

इस रोग से भारत में प्रतिवर्ष लगभग 7500 करोड रूपये की हानि होती है। यह हानि विशेषकर दुधारू पशुओं में दूध एवं बैलों में काम करने की शक्ति में कमी के कारण होती है। इस रोग से थैला रोग भी हो सकता है एवं सांडों में वीर्य की गुणवत्ता पर असर पड़ता है।

रोग के लक्षण :

पशुओं में मुँह व खुर रोग के विशेष लक्षण होते हैं जोकि इसके निदान व रोकथाम मे सहायक सिद्ध होते हैं। गायों एवं भैंसों में इस रोग के प्रत्यक्ष लक्षण होते है। जबकि भेड़ बकरियों में इस रोग के लक्षण अप्रत्यक्ष होते हैं एवं कभी-कभी बिना विशेष लक्षण दिखलाये ही यह रोग हो जाता है।

गाय व भैंसों व राल टपकना एक प्रबल लक्षण है जबकि भेड़ बकरी व सूकर में लार नहीं टपकती है इकिन कुछ अन्य लक्षण ऐसे होते हैं। जिसके कारण इस रोग का आसानी से पता लगाया जा सकता है, जैसे कि प्रभावित सूकरों का लंगड़ा होकर चलना एवं दो-तीन सप्ताह में बच्चों की मृत्यु होना आदि। भेड़ बकरी के झुण्ड (रेवड़) में ज्यादातर पशुओं में लंगड़ापन दिखाई दे तो इस रोग का अंदाजा लगाया जा सकता है।

गाय व भैंसों में मुँह व खुर रोग के प्रथम लक्षण में पशु को तेज बुखार (40.5-41 डिग्री सेल्सियस) आता है एवं पशु सुस्त हो जाता है। थोड़े समय पश्चात् (2 या 3 दिन के अंदर) पशु के मुँह से राल टपकना, मसूढ़ों, होंठ, जीभ की उपरी सतह पर पानी वाले फफोले बनने आरंभ हो जाते हैं जिनका आकार 1-2 सेंटीमीटर के लगभग होता है। जीभ पर 3-4 छोटे-छोटे फफोले मिलकर बड़े बन जाते हैं एवं जीभ का बड़ा भाग इनकी चपेट में आ जाता है। उसके पश्चात् यह फफोले फूट जाते हैं एवं लाल रंग की सतह नीचे निकल आती है जजन्हें छाले कहते हैं । इन स्थानो पर अन्य कीटाणु/जीवाणुओं का प्रवेश संभव हो सकता है। इस रोग में लगातार राल टपकती रहती है, अतः पशु जब मुँह खोलने व बंद करने की कोशिश करता है तो एक विशेष प्रकार की आवाज **"चप-चप"** होती है।

सूकर पालन कैसे करें ?

एक नजर में सूकर पालन :– सूकर पालन विश्व के कई देशों में होता है। इसके पालन के मामले में चीन सबसे आगे है। चीन के बाद यूएस, ब्राजील, जर्मनी, वियतनाम, स्पेन, रूस, कनाडा, फ्रांस और भारत हैं। भारत में सुअर उत्पादन आबादी का लगभग 28 प्रतिशत यानी लगभग 14 मिलियन से ज्यादा है। उत्तरदृपूर्व के राज्यों में सूकर पालन अधिक होता है। इसके अलावा देश के कई राज्यों में सूकर पालन किया जाता है। **सूकर पालन की शुरुआत कैसे करें?** :– इस व्यवसाय की शुरुआत करने से पहले आवश्यक है कि इसकी पूरी जानकारी हो। इस व्यवसाय में आने वाले खर्च, स्थान का चुनाव, सुअर की प्रजातियों का ज्ञान, व्यापार के जोखिम, पशुओं की बीमारी व बाजार का सही ज्ञान होना आवश्यक है। सुकर पालन से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए ग्रोवेल एग्रोवेट के वेबसाइट पर सुकर पालन से सम्बंधित ढेर सारी किताबें हैं। ये किताबें विश्वविख्यात सुकर पालन के विषेशज्ञों और पशुपालन वैज्ञानिकों द्वारा लिखी गई है । आप इन पुस्तकों को मुफ्त में डाउनलोड कर, अध्यन कर सूकर पालन से सम्बंधित सारी जानकारी ले सकतें हैं। सुकर पालन से सम्बंधित किताबें इस लिंक से डाउनलोड कर सकतें हैं। **सूकर पालन के फायदे** :– मांस उत्पादन में दूसरे पशुओं के मुकाबले सूकर से पर्याप्त मात्रा में मांस प्राप्त हो जाता है। इसका मांस अधिक प्रोटीन वाला होने की वजह से विदेशों में अधिक मांग है। अधिकतर ऐसा खाना जिसको बेकार समझकर फेंक दिया जाता है, सुअर पालन के जरिए इस खाने को पोषित मांस के रूप में प्राप्त किया जा सकता है। मादा सूकर एक बार में 10 से 12 बच्चों को जन्म देती है। मादा साल में तीन बार बच्चों को जन्म देती है।इस व्यवसाय में इनके रहने के स्थान और अन्य सामग्री पर कम निवेश की आवश्यकता होती है। सूकर का मांस अच्छी गुणवत्तायुक्त प्रोटीन और पोषक मांस के रूप में जाना जाता है इसलिए भारत के साथ इसकी अन्य देशों में भी मांग है।अच्छी आय के नजरिए से इसके पालन से जल्दी ही 6 से 8 महीनों में अच्छी आमदनी होनी शुरू हो जाती है। ज्ञातव्य रहे कि सूकर के मांस का प्रयोग कैमिकल्स के रूप में जैसे सौन्दर्य प्रसाधन व रासायनिक उत्पादों में प्रयोग होने की वजह से इसकी बहुत मांग है।

PINGAKSH LIFE SCIENCE PVT. LTD.

Add.: 68, Bardan Mandi, Palda, Nemawar Road,
Indore - 452020 (M.P.) Ph.: 90750-60066
Email : jvsingh@pingakshlifescience.com | Web.: www.pingakshlifescience.com
BUSINESS ENQUIRIES SOLICITED

बकरी पालन शुरू करने से लेकर बेचने तक की पूरी जानकारी

बकरियों के रख–रखाव के बारे में पशु आनुवंशिकी एवं प्रजनन विभाग के वैज्ञानिक मनीष डीगे बताते हैं, 'ज्यादातर किसान बकरी के बाड़े की साफ–सफाई पर ध्यान नहीं देते हैं जबकि साफ–सफाई बकरियों में होने वाली बीमारियों को कम कर देता है। इसलिए नियमित साफ–सफाई बहुत जरूरी है। जहां पर बकरी को बांधे वहां की एक या दो इंच परत मिट्टी की समय–समय पर पलट दें, जिससे उसमें जो परजीवी होते हैं, वो निकल जाते हैं। बाड़े की मिट्टी जितनी सूखी होती है उतनी ही बकरियों को बीमारियां कम होती है। इसके अलावा बकरियों को पानी से दूर रखा जाए।' बकरी पालन व्यवसाय में आने वाली समस्याओं के बारे में मनीष डीगे आगे बताते हैं, 'पशुपालक शिकायत करते हैं कि बकरी के तीन बच्चे हुए, उसमें एक ही बचा। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि बकरी का दूध नहीं बचता है। इसलिए जब बकरी ग्याभिन हो तो उसे अत्यधिक मात्रा में हरा चारा और खनिज लवण देना चाहिए। पशुपालक जेर गिरने तक बच्चे को दूध नहीं पीने देते हैं, ऐसा न करें, जितना जल्दी बच्चे को मां का पहला दूध (खीस) पिलाएंगे उतना ही बच्चे की प्रतिरोधक क्षमता तेजी से बढ़ती है।' बाराबंकी जिले से 32 किमी. दूर त्रिवेदीगंज ब्लॉक के मोहम्मदपुर गाँव में रहने वाले विवेक सिंह पिछले कई वर्षों से स्टॉल फेड विधि से बरबरी बकरी पालन कर रहे हैं। इस व्यवसाय से आज वह न सिर्फ सलाना लाखों की कमाई भी कर रहे हैं, बल्कि कई राज्यों के लोगों को जागरूक भी कर रहे हैं। विवेक ने जब फार्म को शुरू किया था तो उनके पास बरबरी प्रजाति के दो बकरे और 21 बकरियां थीं। लेकिन आज उनके फार्म में 100 से ज्यादा बकरेध्बकरियां हैं। विवेक बताते हैं, 'अगर बकरियों का समय से टीकाकरण, उनके रहने का उचित प्रंबधन और आहार का सही से प्रबंधन किया जाए तो कोई भी किसान इस व्यवसाय से अच्छी कमाई कर सकता है।' विवेक आगे बताते हैं, 'बरबरी एक ऐसी बकरी है, जिसे चराने का झंझट नहीं होता। इनको एक छत के नीचे पाला जा सकता है। इनकी दूसरी खूबी ये एक बार में तीन से पांच बच्चे देने की क्षमता रखती है।' बकरियों के आहार प्रबंधन का रखें विशेष ध्यान– ज्यादातर किसान बकरियों के आहार प्रंबधन पर ध्यान नहीं देते हैं। वह उन्हें चरा कर बांध देते हैं, लेकिन ऐसा नहीं करना चाहिए।

मधुमक्खी पालन की पूरी जानकारी

मधुमक्खियां मोन समुदाय में रहने वाली कीटों वर्ग की जंगली जीव है इन्हें उनकी आदतों के अनुकूल कृत्रिम ग्रह (हईव) में पाल कर उनकी वृधि करने तथा शहद एवं मोम आदि प्राप्त करने को मधुमक्खी पालन या मौन पालन कहते है। शहद एवं मोम के अतिरिक्त अन्य पदार्थ, जैसे गोंद (प्रोपोलिस, रायल जेली, डंक–विष) भी प्राप्त होते है। साथ ही मधुमक्खियों से फूलों में परप्रगन होने के कारण फसलो की उपज में लगभग एक चौथाई अतिरिक्त बढ़ोतरी हो जाती है। आज कल मधुमक्खी पालन ने कम लगत वाला कुटीर उद्योग का दर्जा ले लिया है। ग्रामीण भूमिहीन बेरोजगार किसानो के लिए आमदनी का एक साधन बन गया है मधुमक्खी पालन से जुड़े कार्य जैसे बढईगिरी, लोहारगीरी एवं शहद विपणन में भी रोजगार का अवसर मिलता है। मधुमक्खी परिवार : एक परिवार में एक रानी कई हजार कमेरी तथा 100–200 नर होते है।

रानी :– यह पूर्ण विकसित मादा होती है एवं परिवार की जननी होती है। रानी मधुमक्खी का कार्य अंडे देना है अछे पोषण वातावरण में एक इटैलियन जाती की रानी एक दिन में १५००–१८०० अंडे देती है। तथा देशी मक्खी करीब ७००–१००० अंडे देती है। इसकी उम्र औसतन २–३ वर्ष होती है।

कमेरी / श्रमिक :– यह अपूर्ण मादा होती है और मौनगृह के सभी कार्य जैसे अण्डों बच्चों का पालन पोषण करना, फलों तथा पानी के स्त्रोतों का पता लगाना, पराग एवं रस एकत्र करना, परिवार तथा छतो की देखभाल, शत्रुओं से रक्षा करना इत्यादि इसकी उम्र लगभग २–३ महीने होती है।

नर मधुमक्खी / निखट्टू :– यह रानी से छोटी एवं कमेरी से बड़ी होती है। रानी मधुमक्खी के साथ सम्भोग के सिवा यह कोई कार्य नही करती सम्भोग के तुरंत बाद इनकी मृत्यु हो जाती है और इनकी औसत आयु करीब ६० दिन की होती है।

मध्यप्रदेश शासन की मत्स्य सम्पदा वृद्धि हेतु विभागीय योजनाएं

मछुआ कल्याण तथा मत्स्य विकास विभाग,
सहायक संचालक मत्स्याद्योग, जिला ग्वालियर (म.प्र.)

बेकयार्ड फिशरीज (किचिन पौण्ड) :– ग्रामीण आबादी को पौष्टिक खाद्य उपलब्ध कराने एवं गांव के आस–पास तथा किसानों के घर के आस–पास उपलब्ध पोखर, गड्ढे आदि जिनकी न्यूनतम गहराई 1.5 मीटर हो, में मत्स्य पालन हेतु विकसित किए जाएंगे। इस प्रकार घर के आस–पास उपलब्ध किचन पौण्ड से मछुआ कल्याण तथा मत्स्य विकास विभाग द्वारा इनपुट्स के रूप में निःशुल्क मत्स्यबीज प्रदाय कर मत्स्य पालनकार्य प्रारंभ किया जाएगा तथा तकनीकी मार्गदर्शन प्रदाय किया जाएगा। **मछुआ क्रेडिट कार्ड** :– मछुआरों को मतस्य पालन एवं मत्स्योखेट हेतु आवश्यक इनपुट्स नाव, जाल आदि के क्रयकरण हेतु क्रियाशील पूंजी सहकारी बैंकों के माध्यम से किसान क्रेडिट कार्ड के अनुरूप मत्स्य कृषकों को अल्पावधि ऋण 0 प्रतिशत ब्याज दर पर उपलब्ध कराया जाता है। ☛ ग्रामीण तालाबों में मत्स्य पालन हेतु रूपये 18,300 प्रति हेक्टर 18 माह हेतु। सिंचाई तालाबों में मत्स्य पालन हेतु रूपये 2,000 प्रति हेक्टर 18 माह हेतु। ☛ मौसमी तालाबों में स्पॉन संवर्धन हेतु रूपये 23,000 प्रति हेक्टर 0.25 हेक्टर 6 माह हेतु। **मत्स्य आहार प्रबंधन** :– ग्रामीण तालाबों की मत्स्य उत्पादकता 2500 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर वृद्धि हेतु फार्मुलेटेड फ्लोटिंग या नॉन फ्लोटिंग फीड (परिपूरक मत्स्य आहार) के उपयोग एवं महत्व से अवगत कराए जाने के उद्देश्य से योजना लागू है। योजना अंतर्गत इकाई लागत का 10 प्रतिशत अर्थात् रूपये 5000 प्रति हैक्टर की दर से हितग्राहियों द्वारा बैंक ड्राफ्ट के रूप में एम.पी.एग्रो में जमा करेगा। तदुपरांत हितग्राहियों को वित्तीय सहायत के रूप मे इकाई लागत का 90 प्रतिशत अर्थात् रूपये 45,000 प्रति हैक्टर की दर से अनुदान केवल एक बार देय है। **राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना अंतर्गत– मछली पालन की योजना मीनाक्षी** :– अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति / गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले हितग्राहियों के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर में सुधार हेतु रोजगार गारन्टी योजना अंतर्गत निःशुल्क तालाब बनवाकर देना। भूमि सुधार योजना के हितग्राही / इंदिरा गांधी आवास योजना के हितग्राही निजकी कम से कम एक हैक्टयर भूमि परिवार के मुखिया के नाम पर या संयुक्त खाते में हो। लघु तालाब (0.5 से 1.00 हेक्टयर) का निर्माण कर मत्स्य पालन करना। छोटे–छोटे तालाब / नर्सरी (0.10 से 0.20) हेक्टयर का निर्माण कर मत्स्यबीज उत्पादन का कार्य । मछली पालन हेतु इनपुट्स के क्रय की व्यवस्था हितग्राही स्वयं के वित्तीय संसाधनों से करेंगे।

खरगोश पालन

विष्ठा का निबटारा :

पिंजरे के नीचे जमा होने वाली लेडियाँ रोजाना दो बार झाड़कर दूर गड्ढे में डालनी चाहिए। मूत्र के दुर्गन्धी की तीव्रता कम करने के लिए पिंजरे हवायुक्त शेड में रखने चाहिए। इसके लिए शेड के निचले हिस्से तक ज्यादा से ज्यादा जाली हो। पानी के फव्वारे द्वारा पिंजरे की नीचे वाली गंदगी को बहा देना चाहिए, इस से समय की बचत होती है ।उक्त अुसार व्यवस्था न हो पाने पर मूत्र की दुर्गन्धी निर्माण होती है। पिंजरे की नीचे वाली जमीन सीमेंट–कॉंक्रीट की और ढलानवाली हो, ताकि लेडियां, मूत्र तुरंत बहकर जा सके। जमीन कच्ची होने पर शेड हवायुक्त होना बेहद जरूरी होता है या फिर गादी पद्धति कुक्कुटपालन के समान इस्तेमाल करें । उग्र दुर्गन्धी के कारणकामगार/कर्मचारियों की और खरगोशों की आँखों पर सुजन आती है और पंजे द्वारा बार–बार आँखे मलते बैठते हैं।

विस्डम एकेडमी, बड़वाह का शानदार परीक्षा परिणाम, विद्यार्थियों ने रचा सफलता का इतिहास

बड़वाह–विस्डम एकेडमी ने इस वर्ष माध्यमिक शिक्षा मंडल की कक्षा 10वीं एवं कक्षा एवं 12वीं के परीक्षा परिणामों में उल्लेखनीय सफलता हासिल कर क्षेत्र में अपनी शैक्षणिक गुणवत्ता का एक बार फिर प्रमाण दिया है। कक्षा 10वीं में विद्यालय के 91.67 प्रतिशत विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी में सफलता प्राप्त की। इस शानदार प्रदर्शन ने विद्यालय का परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत बना दिया, जो कि किसी भी शैक्षणिक संस्था के लिए गर्व की बात है। विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों में उच्च अंक प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। वहीं कक्षा 12वीं के परिणाम भी अत्यंत सराहनीय रहे। 83.33 प्रतिशत विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया जो निरंतर उत्कृष्ट शिक्षा का संकेत देता है। व्यवस्थापक रामकिशन ने बताया कि इस सफलता के प्राचार्य श्रीमती मीना श्रीमाली एवं वाईस प्रिंसीपल श्रीमती मनीषा वाघे ने बताया कि संस्थान में न केवल शैक्षाणिक उत्कृष्टता पर ध्यान दिया जाता है, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए सह–पाठयक्रम गतिविधियों, व्यक्तित्व विकास एवं नैतिक शिक्षा पर भी विशेष बल दिया जाता है।

बड़वाह में शिक्षा की चमक: सरस्वती शिशु मंदिर का उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम

बड़वाह –15 अप्रैल 2026 को माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल द्वारा घोषित हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी परीक्षा परिणामों में सरस्वती शिशु मंदिर के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए एक नई उपलब्धि हासिल की है। इस बार विशेष रूप से छात्राओं ने अपने श्रेष्ठ अंकों से सफलता का परचम लहराया है। हायर सेकेंडरी (12वीं) परीक्षा में छात्रा सलोनी राजेन्द्र चौहान ने 88.2 प्रतिशत अंक अर्जित कर विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उनके इस प्रदर्शन ने अन्य विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का कार्य किया है। उर्वशी कैलाश आंवले ने 87 प्रतिशत एवं वंशिका राजू वर्मा ने 79.8 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम श्रेणी में स्थान बनाया। वहीं हाई स्कूल (10वीं) परीक्षा में भी छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का शानदार परिचय दिया। व्यवस्थापक रामकिशन जायसवाल प्राचार्य मीना श्रीमाली, वाईस प्रिंसीपल मनीषा वाघे ने इस उपलब्धी का श्रेय विद्यालय के दीदियों, आचार्यों के परिश्रम को देते हुए भैया/बहनों को मिली सफलता पर शुभकामनाएं दी।

सीबीएसई 10 वी बोर्ड परीक्षा का परिणाम घोषित, केंद्रीय विद्यालय की छात्रा हिमांशी राठौड़ ने 83% अंक किऐ प्राप्त

बूंदी– स्मार्ट हलचलद्यकेंद्रीय विद्यालय की छात्रा हिमांशी राठौड़ ने सीबीएसई 10 वी बोर्ड परीक्षा में 83: नम्बर प्राप्त कर सफलता हासिल की। जब हमारे संवाददाता ने हिमांशी राठौड़ से इतने अच्छे अंक प्राप्त करने के बारे में जानकारी ली तो उन्होंने इसे नियमित पढ़ाई ओर बडी बहनों का सहयोग बताया। हिंमाशी ने बताया कि समय–समय पर मेरी बहनों ने मुझे पढाई के समय मेरा होसला बढ़ाया ओर सही मार्ग दर्शन दिया। जिससे मै इतने अच्छे अंक लाने में सफल हो पाई, इसलिए मैं इसका श्रेय मेरी दोनों बहनों उषिका राठौड़ ओर तृप्ति राठौड़ को देती हूं। हिमांशी ने बताया कि वो टेक्निकल लाइन में जाकर एन्जिनियर बनना चाहती है।

अर्पित व न्यांसी बंधे दाम्पत्य सूत्र में: मनसा रिसोर्ट में सबका बेमिसाल स्वागत हुआ

विगत दिनों म.प्र. के मशहूर खाद निर्माता सुहाने परिवार में श्रीमती संगीता व श्री राजेश चौहान के सुपुत्र श्री राजकुमार व विनोद सुहाने के भतीजे श्री रिषभ सुहाने के अनुज चि. अर्पित का शुभ विवाह ग्वालियर के प्रतिष्ठित श्री केदारनाथ जी गुप्ता परिवार में श्रीमती निधि व श्री मुकेश गुप्ता की पुत्री सौ. का. न्यांसी से उज्जैन के मनसा रिसोर्ट में धूमधाम से संपन्न हुआ दूर–दराज से पधारे रिश्तेदारों व्यापारियों व ईष्ट मित्रों ने उपस्थिति हो वर वधू को सुआर्शीवाद दिया वह सुहाने व गुप्ता परिवार को बधाई प्रेषित की। सोना उगले मिट्टी के प्रधान संपादक श्री देवराज चौधरी इस दो दिवसीय कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित थे।

चि. नोवा का चोला संस्कार धूमधाम से सम्पन्न

विगत दिनो इन्दौर के प्रतिष्ठितवा परिवार के श्रीमती अन्नू व कमल शरमा के पोते व श्रीमती निकिता व पुलकित शर्मा के बेटे चिं. नोवा का चोला व नामकरण संस्कार बेटमा के निकर होटल शिरीन पिक्यूम रिसॉर्टस (हाई लिंक टाउनशिप के सामने) पर धूमधाम से सम्पन्न हुआ। दूर–दराज से आये रिश्तेदारो, व्यापारीगण इष्ट मित्रों ने उपस्थिति होकर नन्हे नोवा को बधाई प्रेषित की। सोना उगले मिट्टी के प्रधान सम्पादक श्री देवराज चौधरी इस कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित थे।

सौ.कां. ऋतिका व चिं. ऋतिक बंधे दाम्पत्य सूत्र में

विगत दिनों गुना के प्रतिष्ठित शर्मा परिवार में श्री रतनकुमार जी शर्मा की पोती एवं श्रीमती उमा वा श्री अनिल कुमार जी शर्मा की पुत्री सौ.का. ऋतिका का शुभ विवाह इंदौर के श्रीमती विधा व शशिकांत जी कुलकर्णी के सुपुत्र चि. ऋतिक से इंदौर के मिलन परिणय गार्डन, हीरानगर में रोड पर धूमधाम से संपन्न हुआ। सोना उगले मिट्टी के प्रधान संपादक श्री देवराज चौधरी इस कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित थे।

मोब डिजिटल में श्री सुमित नागरा सम्मानित, पूरे किए 3 वर्ष, उच्च पद पर पदोन्नत।

श्री सुमित नगर ने अपनी लगन और कर्तव्य निष्ठा से मोब डिजिटल सॉल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड में कार्यकाल के तीन वर्ष पूर्ण किए श्री देवराज चौधरी के पुत्र देवांशु के विदेश में होने पर श्री चौधरी बहू गीतिका व स्टाफ मेंबर्स ने केक काटकर श्री सुमित को बधाई प्रेषित की।

ई–टोकन से कालाबाजारी पर लगेगी रोक

सुमन प्रसाद

भोपाल। भोपाल जिले में किसानों को ई–टोकेन के माध्यम से खाद उपलब्ध कराया जाएगा। इसके लिए जिले की सभी ग्राम पंचायतों में 15 मई में 20 मई 2026 तक विशेष शिविर आयोजित किए जाएंगे। उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास सुश्री सुमन प्रसाद ने बताया कि ई–विकास प्रणाली के माध्यम से किसान अब ऑनलाइन ई–टोकन प्राप्त कर निर्धारित तिथि एवं समय पर संबंधित वितरण केंद्र में उर्वग्क प्राप्त कर सकेंगे। इससे किसानों को लंबी कतारों में लगने से राहत मिलेगी तथा वितरण व्यवस्था अधिक पारदर्शी और व्यवस्थित बनेगी। सुमन प्रसाद शक बैठकउन्होंने बताया कि शिविरों में पटवारी, पंचायत सचिव एवं कृषि विस्तार अधिकारी उपस्थित रहकर किसानों को ई–विकास पोर्टल पर पंजीयन कराने तथा ई–टोंकन जारी करवाने में सहयोग करेंगे, ताकि आगामी खरीफ मौसम में किसानों को खाद प्राप्त करने में किसी प्रकार की समस्या न हैं।

बिचौलियों की भूमिका होगी खत्म: कृषि विभाग द्वारा जिले में ई–विकास प्रणाली के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सहकारी संस्थाओं एवं अधिकृत उर्वरक विक्रेताओं को प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया है। सभी संबंधित संस्थाओं को निर्देश दिए गए हैं कि उर्वरक वितरण केवल ई–विकास प्रणाली के माध्यम से ही सुनिश्चित किया जाए, जिससे कालाबाजारी एवं अनियमितताओं पर प्रभावी नियंत्रण रखा जा सके। इस प्रणाली के माध्यम से किसानों को समय पर एवं निर्धारित मात्रा में उर्वरक उपलब्ध होगा।

म.प्र. देश का पहला राज्य बने, जहां एमएसपी को कानूनी गारंटी दी जाए

भोपाल। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को पत्र लिखकर किसानों को फसलों का उचित दाम दिलाने के लिए मप्र में एमएसपी को कानूनी गारंटी दिए जाने की मांग की है। पत्र में उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा खरीफ फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मुल्य (एमएसपी) की नई सूची जारी की गई है। हर वर्ष की तरह इस बार भी किसानों को बड़े–बड़े आंकड़े और बढ़े हुए समर्थन मूल्य दिखाए जा रहे हैं, लेकिन मप्र सहित देशभर का किसान आज भी अपनी उपज घोषित एमएसपी से कम कीमत पर बेचने के लिए मजबूर है। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि सरकार कागजों में समर्थन मूल्य बढ़ाने का प्रचार करती है, लेकिन मंडियों में किसान को उसका वास्तविक लाभ नहीं मिल पाता। खुले बाजार में व्यापारी एमएसपी से नीच कीमत तय करते हैं और शासन/प्रशासन मूकदर्शक–बना रहता है। उन्होंने पत्र में कुछ सुझाव भी दिए हैं। इसके अनुसार मप्र देश का पहला राज्य बने, जहां एमएसपी को कानूनी गारंटी प्रदान की जाए। एमएसपी से कम कीमत पर किसानों की उपज खरीदना दंडनीय अप्राध घोषित किया जाए। न्यूनतम मूल्य सुनिश्चित करने हेतु सतत निगरानी और 'पारदर्शी व्यवस्था लागू की जाए और प्रत्येक मंडी में वास्तविक समय पर मूल्य निगरानी तंत्र स्थापित हो और शिकायत पर तत्काल कार्रवाई हो।

भारत कृषक समाज की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में हुए अहम निर्णय

इंदौर। किसानों के गैर राजनैतिक, वर्ग विहीन, राष्ट्रीय संगठन भारत कृषक समाज की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक गुजरात के अहमदाबाद में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अजय वीर जाखड़ की अध्यक्षता में संपन्न हुई। देश के सभी प्रांतों से राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों ने बैठक में भाग लिया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष इंजी. के. के. अग्रवाल ने बताया कि बैठक में अध्यक्ष द्वारा विगत वर्ष की गतिविधियों, उपलब्धियों एवं इस वर्ष के लक्ष्यों की जानकारी दी गई. उन्होंने बताया कि कृषि नीति कदेश के किसानों की महती समस्याओं को लेकर – नीति आयोग, कृषि लागत मूल्य आयोग, केंद्रीय वित्त एवं कृषि मंत्री तथा सचिव स्तर के उच्च अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित कर समस्याओं के निराकरण हेतु सुझाव एवं सरकार पर दबाव बनाने के निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। बैठक में गांव, खेत, किसान के बजट को अपर्याप्त बताते हुए, बढ़ाने की मांग के साथ आवंटित बजट की लगभग आधी राशि के खर्च न होने व लेप्स होने पर चिंता व्यक्त की गई। बैठक में कृषि नीति के निर्धारण एवं किसानों के लिए सरकार के निर्णय में किसानों के सुझावों को प्रमुखता दिये जाने तथा क्षि से जुड़ी संस्थाओं में देश के विभिन्न हिस्सों से किसानों के वास्तविक प्रतिनिधियों की भागीदारी सुनिश्चित किये जाने की मांग के साथ समर्थन मूल्य, मंडी, आयात निर्यात, विश्व व्यापार संगठन के बढ़ते दबाव, कृषि आदानों की कमी, एवं बढ़ते दामों से खेती की लागत में बढ़ोतरी आदि समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की गई।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य दिल्ली से सर्वश्री लोकेन्द्र सिंह, महाराष्ट्र से मुरलीधर पाटिल, डॉ. वसंत लुंगे, तमिलनाडु से के. आर. ॲडूगौडर, पंजाब से मेजर मनमोहन सिंह, सुखपाल भुल्लर, हरियाणा से चांदबीर सिंह, कर्नाटक से मनोज सिंह हजारी, ओडिसा से प्रदीप मोहन्ती, श्रीमती देवा रिमता, मध्यप्रदेश से चौधरी भारत सिंह, वेस्ट बंगाल से हसानू जमाल, बिहार से मनोज झा, राजस्थान से डॉ. आरएस जाखड़, उत्तरप्रदेश से विजय दीक्षित सहित झारखंड, कश्मीर, तेलंगाना, गुजरात आदि प्रदेशों के कृषक प्रतिनिधियों ने महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किये जिन्हे केंद्र सरकार को सौंपे जाने वाली सिफारिशों के ड्रॉफ्ट में शामिल किया गया।

मध्यप्रदेश में खेती और पशुपालन की क्रांति

मध्यप्रदेश सरकार ने 'कृषक कल्याण वर्ष 2026' में किसानों और पशुपालकों के लिए ऐतिहासिक कदम उठाए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कृषि और पशुपालन क्षेत्र में नवाचार, डिजिटल प्रौद्योगिकी और भंडारण क्रांति के माध्यम से प्रदेश को कृषि और डेयरी उत्पादन में अग्रणी बनाने की दिशा में कई महत्वाकांक्षी योजनाओं की घोषणा की। प्रदेश को आधुनिक, लाभकारी और सतत कृषि क्षेत्र में बदलने का प्रयास किया जा रहा है। दलहन आत्मनिर्भरता मिशन के तहत प्रदेश में दलहन फसलों का उत्पादन बढ़ाना और किसानों को आत्मनिर्भर बनाना भी शामिल है। यह पहलें न केवल किसानों और पशुपालकों के जीवन स्तर में सुधार करेगी, बल्कि प्रदेश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था और रोजगार को भी मजबूत करेगी।

इंदौर एयरपोर्ट को मिली नई सौगात

आज इंदौर शहरवासियों को एक बड़ी सौगात मिली। इंदौर एयरपोर्ट पर नए टरमिनल T1 का भव्य उदघाटन माननीय मुख्यमंत्री Dr. Mohan Yadav जी एवं अन्य जनप्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। यह नया टरमिनल शहर की बढ़ती एयर कनेक्टिविटी और आधुनिक सुविधाओं को एक नई दिशा देगा, जिससे यात्रियों को बेहतर और सुगम यात्रा अनुभव प्राप्त होगा। इंदौर के विकास की दिशा में यह एक महत्वर्पूण कदम है।

आईक्रो सदस्यों द्वारा पुलिस थानों व प्रशासनिक कार्यालयों में महत्वपूर्ण जानकारी वाले कैलेंडर लगायें

इंदौर। ऑल इंडिया क्राईम रिर्फोम्स ऑग्रेनाइजेशन (राजि) संगठन मध्यप्रदेश इंदौर महानगर आईक्रो टीम द्वारा मध्यप्रदेश के प्रमुख गिरीश जोर के नेतृत्व में इंदौर पुलिस प्रशासन के कार्यालयों में आईक्रो के कैलेंडर लगायें। जिसमें मानव अधिकारों के संरक्षण व पुलिस थानों में समन्यय बना रहे। सभी महत्वपूर्ण जोनल अधिकारीयों व थानों की जानकारी व फोन नम्बर के साथ यह बहुउपयोगी है जो आम जनता के लिए भी उपयोगी साबित होगा। इसके बारे में मध्यप्रदेश गिरीश जोरे ने कहा आईक्रो के संस्थापक व राष्ट्रीय अध्यक्ष कमल टंडन दिल्ली के दिशा–निर्देश अनुसार पूरी टीम मध्यप्रदेश काम कर रही है।

कृषि आदान विक्रेता संघ उज्जैन द्वारा जल मंदिर का भुमरंभ

कृषि आदान विक्रेता संघ उज्जैन द्वारा जल मंदिर का शुभारंभ कृषि आदान विधेता संघ उज्जैन के द्वारा लगातार 23 वे वर्ष स्थानीय दौलतगंज चौराहा पर **जल मंदिर** का शुभारंभ हनुमान जन्मोत्सव के पावन परव पर किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पंडित सुलभ शर्मा जानी गुरू एवं श्री नारायण जी यादव मुख्यमंत्री मोहन यादव के बडे भाई एवं वरिष्ठ भाजपा नेता **श्री जयसिंह दरबार** उपस्थित थे। उपरोक्त जानकारी देते हुए प्रदेश सचिव **श्री संजय रघुवंशी** ने बताया कि **अडामा इंडिया लि.** के सहयोग से गरमी के अगले 100 दिनों तक जलसेवा होगी।

जैन एकता के मंच पर मुख्यमंत्री मोहन यादव ने हसमुख गांधी सहित चार विभूतियों का किया महावीर अलंकरण सम्मान।

दिगम्बर–श्वेताम्बर सोशल ग्रुप फेडरेशन का भव्य आयोजन। इंदौर। भगवान महावीर स्वामी के आर्दशों पर आधारित महावीर अलंकरण समारोह में इंदौर जैन समाज की एकजुटताए सेवा भावना और सामाजिक समरसता का प्रेरक दृश्य देखने को मिला। दिगम्बर एवं श्वेताम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के संयुक्त तत्वावधान में भगवान महावीर के 2625वें जन्म कल्याणक अवसर पर भगवान महावीर के दरशन की वैश्विक प्रसंगिकता पर वृहद संवाद के अवसर पर संगीत कला अकादमीए मनमोहन मेहता ओडिटोरियम इंदौर में भगवान महावीर जन्म कल्याणक के पूर्व 29 मार्च 2026 आयोजित इस भव्य समारोह में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने वरिष्ठ समाजसेवी हसमुख जैन गांधी जैन एकता मंच पर सम्मानित, चंदनमल जैन चौरडिया, हंसराज जैन एवं संतोष कुमार जैन को उनके उत्कृष्ट सामाजिक योगदान के लिए महावीर अलंकरण प्रदान कर सम्मानित किया। भगवान महावीर के संत आज भी प्रसंगिक मुख्यमंत्री मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अपने उन्बोधन में कहा कि भगवान महावीर के अहिंसाए सत्य और अपरिग्रह के सांत आज भी उतने ही प्रसंगिक हैं और समाज को सात्विकता एवं नैतिकता की दिशा में प्रेरित करते हैं। उन्होंने जैन समाज की सेवा परंपरा की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करते हैं।जीवन में आचरण ही सच्चा संदेश रू स्वप्निल कोठारी आयोजन समिति के अध्यक्ष स्वप्निल कोठारी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भगवान महावीर का संदेश केवल विचारों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसे जीवन में आचरण के रूप में उतारना आवश्यक है। यह आयोजन समाज में एकता, सेवा और विश्व बंधुत्व की भावना को सुदृढ़ करता है। आयोजन समिति की ओर से स्वागत भाषण महावीर ट्रस्ट मध्य प्रदेश के अध्यक्ष अमित कुमार सिंह कासलीवाल ने दिया, दिगंबर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन की ओर से राकेश विनायका एवं श्वेतांबर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन की ओर से विजय मेहता ने संबोधित करते हुए इस आयोजन में जैन एकता की प्रसंगिकता को बताते आयोजन को इंदौर नगर का सौभाग्य बताया। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप चौधरी व दिव्यादित्य कोठारी ने किया। इस अवसर पर मंत्री तुलसी सिलावट, विधायक रमेश मेंदोला सहित अनेक जनप्रतिनिधिए प्रशासनिक अधिकारी आयोजन समिति राजेश चेलावत अग्निबाण, विजय मेहता, पुष्पा प्रदीप कासलीवाल, मनोहर झांझरी, मनीष सुराना, विमल नाहर, अमित कासलीवाल, राकेश विनायका, शिखरचंद बाफना, सुशील पांडया, प्रदीप चौधरी सहित अनेक समाजसेवी एवं समाजजन बड़ी संख्या में शामिल हुए। विश्व रिकार्ड पुस्तक दिगंबर जैन तीर्थ निर्देशिका मुख्यमंत्री को भेंट समाजसेवी हसमुख जैन गांधी ने मुख्यमंत्री को उनके द्वारा संपादित दिगंबर जैन तीर्थ निरदेशिका भेंट की। उन्होंने अवगत कराया कि इस पुस्तक की एक लाख प्रतियों का विश्व रिकार्ड गोल्डन बुक ऑफ वल्ड रिकार्ड में दर्ज हुआ है। मुख्यमंत्री ने इस उपलबधि की सराहना करते हुए श्री गांधी को प्रोत्साहित किया। समारोह ने यह संदेश दिया कि भगवान महावीर के सांतों को अपनाकर समाज में एकता, शांति और सेवा की भावना को और अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है।

अफसरों की तानाशही से भानगड़ (बीना) में खेत में तैयार फसल नष्ट

दिनांक 25/05/2026 को तहसीलदार बीना वृत् भानगड़ द्वारा गठित दल जिसमें आर आई और कई पटवारी थे उनके साथ तीन थानों बीना, खिमलास और भानगढ़ से भारी पुलिस बल पहुंचा ग्राम जगदीशपुर। इनकी शह पर जितेंद्र राजपूत और अन्य ने ट्रैक्टर से खरबूजे की लहलहती फलती फूलती फसल नष्ट करवा दी। खसरा नंबर 72 और 73 की । खेत पर मौजूद गरीब बटियादार किसानो को धोन्स दी गई डराया धमकाया गया । खरबूजे की फसल बटाई पर लगाने वाले किसानों ने उनसे कहा भी की फसल आप बेच लो मगर नष्ट मत करो किसी ने एक न सुनी। नायब तहसीलदार के एक गलत आदेश पर लाखों रुपए की फसल नष्ट कर दी गई झांसी के किसान अक्षय केवट की मां की तबीयत खराब है। राकेश केवट का मकान तोड़ा जा रहा है शुभम केवट और जगन रैकवार के भी परिवार जनों को फसल से बहुत आशा और उम्मीद थी इसी आय से उनका घर चलना था , इलाज होना था । उनकी गुहार की किसी ने भी परवाह नहीं की और पूरी फसल बर्वर्ता पूर्वक ट्रैक्टर करते हुए नष्ट कर दी। मैं किसान भाई जगप्रीत सिंह सोमवार को सागर गया था अपर कलेक्टर महोदय के यहां पेशी थी, श्रीमान कलेक्टर महोदय से भी मुलाकात की और उन्हें इस कार्रवाई को रोकने के लिए आग्रह भी किया मगर किसी ने एक ना सुनी। इस पूरे केस में छोटे से बड़े अधिकारी तक अपने आप को दबाव में महसूस कर रहे थे किसी बड़ी राजनीति हस्ती के कारण ऐसा समझ में आ रहा था । एसडीएम महोदय के यहां स्टे का आवेदन लगा था मगर वे अपने कार्यालय पर मौजूद नहीं रहे। बहुत जगह न्याय की मांग की गई मगर कहीं न्याय नहीं मिल पाया और गरीबों की फसल उजाड़ दी गई ।

शासकीय भवनों में रेस्को मॉडल से सोलर पैनल लगाने के लिए जागरूकता जरूरी

भोपाल। सौर ऊर्जा अपनाएं भविष्य बचाएं नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री यकेश शुक्ला ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री–नरेन्द्र मोदी द्वारा निरंतर ईंधन (फ्यूल) और ऊर्जा बचाने का आहवान किया गया है। हमें दृढ़ संकल्प के साथ इस दिशा में काम करना चाहिए। प्रधानमंत्री श्री मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशानुरूप शासन और प्रशासन को एक साथ मिलकर ग्रीन एनर्जी की ओर शिफ्ट होना होगा।

मंत्री श्री शुक्ला जिला पंचायत कार्यालय के सभाकक्ष में प्रदेश के विभिन्न विभागों के शासकीय भवनों में सोलर रूफटॉप संयंत्र स्थापना के लिये शासकीय संस्थाओं व रेस्को विकासक इकाइयों के मध्य विद्युत क्रय अनुबंध निष्पादन के अवसर पर संबोधित कर रहे थे। मंत्री श्री शुक्ला ने लक्ष्य निर्धारित करते हुए कहा कि हमारी 50 प्रतिशत ऊर्जा खपत नवकरणीय ऊजा से होनी चाहिए और मध्यप्रदेश इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने आमजनों में जागरूकता लाने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि आने वाले समय में हर घर की छत पर सोलर पैनल नजर आने चाहिए। उन्होंने निर्देश दिय कि कि रेस्को पद्धति के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में समय पर भुगतान एवं उचित मेंटेनेंस सुनिश्चित किया जाएं।

रेस्को एक महत्वपूर्ण बचत योजना अपर मुख्य सचिव श्री मनु श्रीवास्तव ने कहा कि रेस्को योजना शून्य निवेश, पहले दिन से बचत और नेट जीरो की ओर बढ़ने की एक सशक्त माध्यम है। यह शासन के लिए एक महत्वपूर्ण बचत योजना है।

ऋषि गालव विधि का भूमि पूजन : रू. 110 करोड़ की लागत से बनेगा ग्वालियर में संघ का पहला विवि

ग्वालियर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़ा प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय स्थापित होने जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को बेलागांव में 110 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाले ऋषि गालव विश्वविद्यालय का भूमिपूजन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि विश्वविद्यालय सिर्फ डिग्री देने के केंद्र नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने वाले संस्थान होते हैं। यह संस्थान युवाओं को संस्कार, संस्कृति और कौशल से जोड़ते हुए उन्हें देश के विकास में योगदान के लिए तैयार करेगा। विवि में 5000 से अधिक छात्रों के अध्ययन की व्यवस्था होगी। यहां पैरामेडिकल, नर्सिंग, इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट सहित रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ नैतिक शिक्षा भी दी जाएगी।

ऋषि गालव विवि शिलान्यास के दौरान सीएम मोहन यादव, सुरेश सोनी को मोबाइल पर चुनाव नतीजे दिखाते हुए।

श्रीमती प्रतिभा पाल बनी सागर कलेक्टर

नर्मदापुरम IG मिथलेश कुमार शुक्ला को सागर रेंज का अतिरिक्त प्रभार

तिरूपति है प्रदेश की सबसे बड़ी नर्सरी : देवराज चौधरी

सन 2004 में श्री हरि सिंह काग जी ने तिरूपति नर्सरी की नींव डाली, श्री लक्ष्मण काग ने अपने पिता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर इसे एक वटवृक्ष बना दिया, आज कुल 43 एकड़ में नर्सरी सब्जी व फलों की एवं 5 एकड़ में ओरनामेंटल पोधों की नर्सरी है। आपने नर्सरी पर Fish World व Dogs & Cats नामक शोरूम भी बनाऐ हैं। आप नर्मदा जयंती पर 11000 पौधों व शिव यात्रा पर 11000 पौधे निःशुल्क वितरित करते हैं अबतक 1.5 लाख पौधे गांव गांव जाकर निःशुल्क वितरित किये हैं। सोना–उगले मिट्टी के प्रधान सम्पादक श्री देवराज चौधरी को तिरूपति नर्सरी के पदाधिकारियों हरिराम पटेल व गुरू जी ने अवलोकन कराया व जानकारी प्रेषित की।

एकात्म धाम, ओंकारेश्वर में 17 से 21 अप्रैल तक मनाया गया "आचार्य शंकर प्रकटोत्सव" एकात्म पर्व में देशभर के प्रमुख साधु–संतों के साथ मुख्यमंत्री डॉ. यादव भी हुए शामिल

ओंकारेश्वर आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास, मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा आदि गुरू शंकराचार्य के प्रकटोत्सव वैशाख शुक्ल पंचमी के उपलक्ष्य में 'एकात्म पर्व' का पंच दिवसीय भव्य आयोजन 17 से 21 अप्रैल, 2026 तक ओंकारेश्वर के मांधाता पर्वत पर 'एकात्म धाम' में आयोजित हुआ। इस पंच दिवसीय मांगलिक अनुष्ठान में भारत की दिव्य संन्यास परंपरा के शीर्ष संतो, आर्ष चिंतकों और विशिष्ट जनों की गरिमायी उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम का शंभारंभ 17 अप्रैल को द्वारका पीठाधीश्वर जगदुरू शंकराचार्य स्वामी श्री सदानंद सरस्वती जी के पावन सानिध्य तथा संस्कृति मंत्री धर्मेन्द्र लोधी, विविकानंद केन्द्र की उपाध्यक्ष पद्यमश्री निवेदिता भिड़े , स्वामी शारदानंद सरस्वती की उपस्थिति में हुआ। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव हुए शामिल, 21 अप्रैल, वैशाख शुक्ल पंचमी पर जूनापीठाधीश्वर आचार्य महामंण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि एवं अन्य संतो की उपस्थिति में प्रातः 6 बजे नर्मदा तट पर आयोजित दीक्षा समारोह में देश–विदेश के 700 से अधिक युवा' 'शंकरदूत' के रूप में दीशा लेंगे। इसी दिन मुख्यमंत्री डां. मोहन यादव एवं अन्य अतिथियों द्वारा मुख्य समारोह में अद्वैत वेदांत दर्शन के सूदीर्घ प्रसार हेतु स्वामी तेजोमयनंद सरदस्वती एवं गौतम भाई पटेल को सम्मानित किया गया। अपने ओंकारेश्वर प्रवास के दौरान सोना–उगले मिट्टी के प्रधान सम्पादक श्री देवराज चौधरी ने ज्योतिलिंग के दर्शन व पूजा अर्चना की व श्री जोड़ गणपति आश्रम नया बस स्टैंड स्थित का अवलोकन किया एवं श्री गौरी शंकर शर्मा से भेंट की जो पर्यावरण व एवं पर कार्य कर रहे नर्मदा जी का जय शुद्ध करने हेतु उन का ऑफिस दिल्ली में है जहां बालकिशन जी पर्यावरण देखते हैं, सनावद में डॉ. सुरेश रांका उनको एक साल अपने फार्म पर लेकर हेतु निःशुल्क दे रहे हैं। आप बैटरी चलित नाव ला रहे हैं जो नदी से प्लास्टिक कचरा भी निकलेगी, ओंकारेश्वर चौथा ज्योतिर्लिंग है जो वैज्ञानिक रूप से पैस्कल लॉ ऑफ ट्राइंगल बनता हैं, नीचे से पानी ऊपर जाता है, ओम का ध्वनि निकलती है, नीचे ज्वालामुखी स्थित है।

गन्ना का एफआरपी 365 रू. प्रति क्विंटल तय

केन्द्रीय कृषि तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि चीनी सत्र 2026–27 के लिए गन्ने का उचित एवं लाभकारी मूल्य (FRP) 365 रूपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया। श्री चौहान ने कहा कि 10.25 प्रतिशत की बेसिक रिकवरी दर पर 365 रू. प्रति क्विंटल FRP स्वीकृत किया गया है।

प्रगति के पद पर बड़नगर : देवराज चौधरी

सोना–उगले मिट्टी के प्रधान सम्पादक श्री देवराज चौधरी की श्री जितेन्द्र पंडया विधायक एवं एस.डी.एम. श्री धीरेन्द्र पाराषर बड़नगर से विशेष बातचीत हुई जिन्होने बताया की बड़नगर में प्रथम श्रेणी की मंडी है जहाँ 17 करोड़ का वार्षिक टैक्स भरते है। चम्बल, गंभीर, चामला नदी होने के कारण सोयाबीन, गेहूं और मटर की खेती होती है। सरकार ने प्रदेश में 09 लाख से अधिक लोगों से रजिस्ट्रेशन कराया गेहूं उपार्जन के लिये। अब जमीन का मुआवजा भी 4 गुना देगी सरकार भूमि अधिग्रहण पर। गेहू उपार्जन का पैसा 8–10 दिन में मिल रहा है। किसान क्रेडिट कार्ड, इन्वेस्टर मीट व पी.एम. पार्क बदनावर बनने से अब इन इलाके के किसान समृद्ध हो रहे है। हम कोशिश में है कि फसलों और सब्जियों आधारित उद्योग भी इस क्षेत्र में लगे।

फर्टिलाइजर एसोसिएशन ऑफ इंडिया DG से सौजन्य मुलाकात संपन्न अनेक मुद्दों पर चर्चा हुई

ऑल इंडिया एग्रो इनपुट डीलर एसोसिएशन के एक प्रतिनिधिमंडल ने आज दिल्ली में फर्टिलाइजर एसोसिएशन आफ इंडिया के महानिदेशक श्री सुरेश कुमार चौधरी से मुलाकात करते हुए डीलर मार्जिन ,जबरन टैगिंग,थ्रू सुविधा एवं कम्पनियों द्वारा किए जा रहे भ्रामक प्रचार प्रसार आदि मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की और निवेदन किया कि इस मामले पर केंद्र सरकार को आपके संगठन की ओर से पत्राचार किया जाना चाहिए। और आपके संगठन के सदस्यो यानी उर्वरक उत्पादक कंपनियों की ओर से टैगिंग नहीं करने और रिटेलर के गोडाउन तक थ्रू सुविधा का पालन अनिवार्य रूप से करना चाहिए। श्री सुरेश कुमार चौधरी ने इस सौजन्य भेंट में आश्वासन दिया है कि भविष्य में एसोसिएशन की बोर्ड मीटिंग में मुद्दों पर विस्तृत रूप से चर्चा करके अवगत कराएंगे । इस प्रतिनिडल में राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री संजय कुमार रघुवंशी, अशोक जी मारु निंबाहेड़ा और श्री प्रकाश जी जैन बैतूल विशेष रूप से उपस्थित थे । अवसर पर चौधरी जी को संगठन की ओर से श्री महाकाल का स्मृति चिन्ह एवं दुपट्टा भेंट किया गया ।

बूंद–बूंद पानी को परेशान हो रहे किसान

गुलाबचंद पटेल पानी नहीं है बोरिंग फेल है ग्राम बोरत 20 कि सनावद पोस्ट बिकन गांव मेंहदीवादी गोपी खोदरा मनोपुरा वह अन्य आसपास के गांव में आज तक लाइट नहीं पहुंची आप मिर्च की खेती करते हैं पानी की कमी है स्वास्थ्य केंद्र नहीं है आठवीं तक स्कूल है।

खाद के लिए परेशान हो रहे किसान !

प्रहलाद यादव दियान्तपुरा ब्लॉक पुनासा जिला खंडवा में 3 एकड़ का किसान है जो चना, गेहूं आदि की खेती करते हैं खाद के लिए परेशान है। यह सनावद से 23 किलोमीटर है लेकिन लेकिन मंडी सनावद में लगती है तो छोटे किसान को बाजार करने सनावद आना पड़ता है पर जिला दूसरा होने से खाद नहीं मिलता क्योंकि ऑनलाइन उनका रजिस्ट्रेशन खंडवा जिले में ही होता है। सरकार को किसानो के लिए आसपास के 3 जिलों की चॉइस देना चाहिए ताकि उनकी गाड़ी का भाड़ा व समय की बचत हो सके।

मॉ नर्मदा ग्रीन गोल्ड नर्सरी ऊचाई की और

सन 2020 में श्री धरम गुर्जर ने अपने पिता श्री राधे श्याम जी गुर्जर के निर्देशन में काम सीख वह नर्सरी चालू की आप मुख्य पपीता मिर्च टमाटर तरबूज करेला खीरा बैंगन गेंदा फूल आदि की नर्सरी तैयार करते हुए बड़वानी खरगोन खंडवा धार इंदौर शिवपुरी हरदा आदि जिलों में भेजते हैं

शोक संदेश

स्व. श्रीमती आशा भोसले

विगत् दिनों संगीत की दुनिया की जानी मानी **श्रीमती आशा भोसले** का निधन हो गया। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्रीमती आशा भोसले** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्री अश्विन जोनी

विगत् दिनों राजनीति के महागुरू **श्री अश्विन जोशी** का निधन हो गया। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्री अश्विन जोशी** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्री राहुल काशिव

विगत् दिनों श्रीमती मनोरमा काशिव के बेटे **श्री राहुल काशिव** का निधन हो गया। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. राहुल काशिव** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्री भगवानदास रैकवार

विगत् दिनों देली मार्शल आर्ट के प्रख्यात कलाकार **श्री भगवानदास रैकवार** का निधन हो गया। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्री भगवानदास रैकवार** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्री विजयपत सिंघानिया

विगत् दिनों रेमंड ग्रुप के चेयरमेन **श्री विजयपत सिंघानिया** का निधन हो गया। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्री विजयपत सिंघानिया** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्रीमती मीरा शर्मा

विगत् दिनों श्री संदीप शर्मा व प्रदीप शर्मा की माता जी **श्रीमती मीरा शर्मा** का निधन हो गया। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्रीमती मीरा शर्मा** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्री जी.एस. कौशल

विगत् दिनों म.प्र. को पूर्व संचालक कृषि **श्री जी. एस. कौशल** का निधन हो गया देश के प्रख्यात जैविक खेती विशेषज्ञ थे। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्री जी.एस. कौशल** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्रीमती शांतिदेवी कूलवाल

विगत् दिनों **इंदौर के कूलवाल परिवार** की **श्रीमती शांतिदेवी कूलवाल** का निधन हो गया। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्रीमती शांतिदेवी कूलवाल** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

शोक संदेश

स्व. श्री राहुल शर्मा

विगत् दिनों पं. रामप्रकाश शर्मा (प्रभुजी) के ज्येष्ठ पुत्र **श्री राहुल शर्मा** का निधन हो गया। **सोना–उगले मिट्टी परिवार** परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि **स्व. श्री राहुल शर्मा** को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करे...

|| ओम शांति ||

इन्दौर में 09 से 13 जून तक होगा ब्रिक्स कृषि कार्य समूह का अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

सम्मेलन में 21 देशों के कृषि मंत्री, विशेषज्ञ और वरिष्ठ अधिकारी होंगे शामिल

इंदौर। केन्द्र सरकार द्वारा आयोजित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन–2026 के तहत कृषि कार्य समूह का महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आगामी 9 से 13 जून तक इंदौर के ग्रैंड शेरेटन होटल में होगा। पांच दिवसीय इस उच्च स्तरीय सम्मेलन में 21 देशों के कृषि मंत्री, वरिष्ठ अधिकारी, कृषि वैज्ञानिक, नीति निर्धारक पुर्व विशेषत शामिल होंगे। सम्मेलन को लेकर मुख्यमंत्री व मोहन यादव और केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने इंदौर में बैठक कर तैयारियों की समीक्षा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देश के सबसे स्वच्छ शहर दौर में आयोजित होने वाला यह सम्मेलन प्रदेश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण अवसर है। शहर की स्वच्छता, हरियाली और सुंदरता अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों के सामने उत्कृष्ट रूप में प्रदर्शित होना चाहिए। उन्होंने नगर निगम, पुलिस प्रशासन, पर्यटन, लोक निर्माण, स्वास्थ्य विभाग सहित सभी संबंधित विभागों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करने के निर्देश दिए। केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने कहा कि सम्मेलन में ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका, यूगांडा, मिस्र, इथियोपिया, ईरान, सऊदी अरब, मलेशिया, नाइजीरिया, थाईलैंड, संयुक्त अरब अमीरात, कोलम्बिया, इंडोनेशिया सहित कुल 21 देशों के प्रतिनिधि शामिल होंगे।

अभिषेक जैन 'भारतीय कृषि एवं खाद्य परिषद' (ICFA) की कृषि नीति परिषद के लिए नामांकित

इंदौर के लिए गर्व व हर्ष का विषय है कि अरिहंत फर्टिलाइजर एंड केमिकल्स इंडिया लिमिटेड में डायरेक्टर श्री अभिषेक जैन को प्रतिष्ठित 'भारतीय कृषि एवं खाद्य परिषद' (Indian Chamber of Food and Agriculture & ICFA) द्वारा 'कृषि नीति परिषद' (Agriculture Policy Council) के लिए नामांकित किया गया है। भारतीय कृषि एवं खाद्य परिषद (ICFA) देश में कृषि नीतियों और खाद्य सुरक्षा को दिशा देने वाली एक प्रमुख संस्था है। इस महत्वपूर्ण परिषद में श्री जैन का नामांकन कृषि क्षेत्र में उनके अनुभव और उद्योग के प्रति उनके निरंतर समर्पण को रेखांकित करता है। आप एक मिलनसार एवं कर्मठ व्यक्तित्व के स्वामी हैं। **सोना उगले मिट्टी के प्रधान संपादक श्री देवराज चौधरी** ने **श्री अभिषेक जैन** से सौजन्य भेंट पर अपनी बधाई प्रेषित की।

Unisem संतोष कुमार सिंह पदोन्नत होकर जनरल मैनेजर बने

इन्दौर यूनिसेम एग्रीटेक लिमिटेड, बैंगलोर के सीनियर जोनल मैनेजर श्री संतोष कुमार सिंह को स्पेशल प्रमोशन देकर कंपनी ने जनरल मैनेजर नार्थ जोन (उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, झारखंड, छत्तीसगढ़, बिहार एवं नेपाल) का प्रभार दिया है। एग्रीकल्चर इंडस्ट्रीज के वरिष्ठजनों की ओर से उन्हें बहुत–बहुत बधाई दी गई। सोना–उगले मिट्टी की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रभावी प्लांट ग्रोथ प्रमोटर–पोषक सुपर स्टार

इन्दौर। 'पोषक सुपर स्टार' पौधों की तेज वृद्धि बेहतर विकास और अधिक उपज के लिए बनाया गया उन्नत प्लांट ग्रोथ प्रमोटर है। यह पौधों के चयापचय को सक्रिय करता है और प्रकाश संश्लेषण की क्षमता बढ़ाता है, जिससे फसल मजबूत बनती है, गुणवत्ता सुधरती है और शेल्फ लाइफ भी बढ़ती है। पोषक सुपर स्टार के मुख्य फायदे इस प्रकार हैं–पौधों की तेज वृद्धि पौधों की ऊँचाई और फैलाव में तेजी, अधिक शाखाएं निकलने में मदद, तना, पत्तियां और जड़ें मजबूत बनती है, फूल और फल में बढोत्तरी, फूलों और फलों की संख्या बढ़ती है। 'पोषक सुपर स्टार' जड़ो की संख्या और लंबाई बढ़ाता है, पोषक तत्वों के अवशोषण में सुधार, तनाव व रोग प्रतिरोध, सूखा, गर्मी और अन्य अजैविक तनाव से सुरक्षा, कीटों और रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाता है। 'पोषक सुपर स्टार' को अनाज में गेहू, धान, मक्का, दालों में मूंग, उड़द, चना, तिलहन में सोयाबीन, सरसों, सब्जियों में मिर्च, टमाटर, खीरा, लौकी तथा बागवानी फसलों में प्रयोग कर सकते है।

क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन लि. ने एफएमसी कॉर्पोरेशन के भारत के वाणिज्यिक कारोबार का किया अधिग्रहण

08 मई 2026, इंदौररू क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन लि. ने एफएमसी कॉर्पोरेशन के भारत के वाणिज्यिक कारोबार का किया अधिग्रहण दृ क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन लिमिटेड ने एफएमसी कॉर्पोरेशन के भारत स्थित संपूर्ण वाणिज्यिक कारोबार के अधिग्रहण की घोषणा की है। यह सौदा 252 मिलियन अमेरिकी डॉलर में किया गया है। इस अधिग्रहण के बाद भारत में एफएमसी के कई प्रमुख फसल सुरक्षा ब्रांडों का व्यवसाय, विपणन एवं वितरण अब क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन द्वारा संचालित किया जाएगा।

सूत्रों के अनुसार एफएमसी इंडिया का भारत में वार्षिक कारोबार लगभग 1800 करोड़ रुपये का माना जाता है। कृषि रसायन क्षेत्र में कंपनी की मजबूत उपस्थिति तथा प्रीमियम फसल सुरक्षा उत्पादों के कारण भारतीय बाजार में एफएमसी की विशेष पहचान रही है।इस समझौते के अंतर्गत एफएमसी इंडिया के फसल सुरक्षा व्यवसाय से जुड़े वाणिज्यिक परिचालन, बिक्री एवं विपणन गतिविधियां, ब्रांड लाइसेंसिंग अधिकार, भविष्य की वैश्विक पाइपलाइन तक पहुंच तथा विशेष सक्रिय अवयवों एवं उत्पादों के लिए आपूर्ति समझौते शामिल हैं।एफएमसी इंडिया के लोकप्रिय उत्पादों में कोराजन, बेनीविया, टुवेन्टा, वेरिमार्क, मार्शल, रोगोर, वेल्जो एवं लीजेंड शामिल हैं। वहीं भविष्य की उत्पाद पाइपलाइन में रेजोनेक्स, जेडेलिस, वाइटग्रिस बोला तथा राइम जैसे उत्पाद शामिल बताए जा रहे हैं। कंपनी ने बताया कि वर्ष 2018 में क्रिस्टल ने एफएमसी कॉर्पोरेशन से केवल चार ब्रांडों का अधिग्रहण किया था, जबकि वर्ष 2026 के इस नए समझौते के तहत भारत का संपूर्ण वाणिज्यिक कारोबार शामिल किया गया है।क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन के अनुसार यह अधिग्रहण भारत में कंपनी की स्थिति को और मजबूत करेगा, साथ ही किसानों को उन्नत फसल सुरक्षा समाधान एवं नई तकनीकों तक बेहतर पहुंच उपलब्ध कराने में मदद करेगा।

असम के चाय बागानों से पहले ही उठते लगी थी जीत की महक

गुवाहाटी. असम के चाय बागानों में इस जीत की महक पहले ही आने लगी थी। तिनसुकिया, जोरहाट, डिब्रूगढ़ इलाके में चाय बागानों से जुड़े हजारों परिवारों ने फिर चायवाले पर ऐतबार किया। बागान की महिलाओं ने एक सुर में कहा था, जो हमारा ख्याल रखेगा, वोट उसी को देंगे। उनका इशारा साफ था। तीसरी बार भाजपा की प्याली में जीत की चाय इन्होंने चुन-चुनकर डाल ली। परिसीमन और महिला वोटर्स के लिए योजनाओं ने जीत को आसान बनाया और असम की हरियाली पर तीसरी बार भगवा रंग चढ़ा। जीत में मुख्यमंत्री सरमा की बड़ी भूमिका इस जीत के पीछे असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा की बड़ी भूमिका रही है। सरमा 2015 में कांग्रेस छोड़कर बीजेपी में शामिल हुए थे।

हिन्दुत्व-भरोसे से बंगाल विजय, हालात में सुधार बड़ी चुनौती

विधानसभा चुनावों में असम में भाजपा की शतकीय तिकड़ी व पुदुचेरी में एनडीए की वापसी को छोड़कर अन्य राज्यों में परिवर्तन की लहर चली। पश्चिम बंगाल में हिंदुत्व, सुरक्षा का भरोसा व भयमुक्त मतदान की आंधी में ममता बनर्जी की टीएमसी का 15 साल के शासन का अंत हो गया। अपने वैचारिक प्रेरणा स्रोत विवेकानंद, बंकिम बाबू, अरविंद घोष और जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी की धरती पर भाजपा का पहली बार सरकार बनाने का बरसों पुराना सपना साकार हो गया।

उद्योग समृद्धि के केन्द्र रहे कोलकाता को अब गौरव वापसी की उम्मीद

नई दिल्ली. ब्रिटिश राज्य के समय देश की राजधानी रहे कोलकाता को बौद्धिक विरासत, कला, साहित्य और राजनीतिक चेतना के लिए जाना जाता रहा है। रविंद्रनाथ टैगोर, बंकिमचंद्र चटोपाध्याय और आजादी की मुखर आवाज नेताजी सुभाष चंद्र बोस की कर्मभूमि यह धरती रही। अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ बुलंद आवाज बन यह शहर आर्थिक दृष्टि से भी बुड़ा व्यापारिक और औद्योगिक केंद्र था। यह पूर्वी भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापार का मुख्य द्वार रहा। भाजपा की जीत से जगी उम्मीद अब पश्चिम बंगाल चुनाव में भाजपा की विजय के बाद एक नई उम्मीद जगी है। समर्थकों का मानना है कि यह बदलाव कोलकाता के गौरव की वापसी की शुरुआत हो सकता है।

सभी देशवासियों को बकरी ईद की हार्दिक शुभकामनाएँ

A TRUSTED NAME IN THE WORLD OF PAINTS

Malak PAINTS

Since 1973

MALAK PAINTS

PITAMPUR ROAD VISHAL CHAURAHA
OFF. AIRPORT ROAD, KHASRA NO. 791/5/1, VILL-DHANNAD (M.P.) - 453332

MOB. 9425063752, 9425078686
Email.: tayyabmalak@yahoo.co.in

सीएम स्टालिन हारे, टीवीके बहुमत से सिर्फ 11 सीट पीछे ब्लॉकबस्टर विजय 2 साल पहले पार्टी बनाई, अब 64 साल बाद गैर द्रविड़ पार्टी का सीएम बनना तय थलापति ने ड्राइवर के बेटे को उतारा जीत गया

तमिलनाडु चुनाव के नतीजों ने द्रविड़ राजनीति के दशकों पुराने किले को ढहा दिया है। 1967 से 2021 के चुनाव तक यहां कभी द्रमुक तो कभी अन्नाद्रमुक ही सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। मगर, 2026 के नतीजों में अभिनेता विजय थलापति की नई टीवीके पार्टी (2 फरवरी 2024 ' में बनी) ने 107 सीटें जीतकर इतिहास रच दिया है। द्रमुक बमुश्किल 60 का आंकड़ा छू पाई और अन्नाद्रमुक तो 47 पर ही सिमट गई। सबसे ज्यादा चौंकाने वाले नतीजे मुख्यमंत्री एमके स्टालिन की सीट कोलाथुर के रहे। वहां टीवीके के वीएस बसु ने स्टालिन को 8,795 वोट के भारी अंतर. से शिकस्त दी।

देश की 78 प्रतिशत आबादी और 72 प्रतिशत भूभाग पर अब भाजपा+का राज विपक्षी दल 08 राज्यों में सिमटे

विपक्ष के पावर सेंटर ध्वस्त, भाजपा एक देश-एक चुनाव पर और जोर लगाएगी।

गंगासागर से कन्याकुमारी तक पांच राज्यों के चुनावी नतीजों ने भाजपा विरोधी राजनीति के बड़े श्पॉवर सैंटर्सश को बड़ा झटका दिया है। ममता बनर्जी और एमके स्टालिन भाजपा को चुनौती देने वाले प्रमुख चेहरे थे। बंगाल (42) और तमिलनाडु (39) लोकसभा की 81 सीटें तय करते हैं। इनके ढहने से इंडिया गठबंधन पिछड़ गया।

ओटीटी पर छाया पुरानी मूवी का नया वर्जन

धुरंधर 2025 की भारत में हिंदी में बनी गुप्तचर एक्शन थ्रिलर फ़िल्म है, जिसे आदित्य धर ने लिखा, निर्देशित किया और सह-निर्माण किया है। जियो स्टूडियोज़ और B62 स्टूडियोज़ के बैनर तले ज्योति देशपांडे, आदित्य धर और लोकेश धर ने इसे प्रोड्यूस किया है। इसमें रणवीर सिंह, अक्षय खन्ना, आर. माधवन, अर्जुन रामपाल, संजय दत्त, सारा अर्जुन और राकेश बेदी हैं, और मानव गोहिल, दानिश पंडोर, सौम्या टंडन, गौरव गेरा और नवीन कौशिक सपोर्टिंग रोल में हैं।[5][6] यह फ़िल्म असल ज़िंदगी की घटनाओं से इंस्पिरेशन लेती है, जिसमें जियोपॉलिटिकल टेंशन और इंडिया की R&AW के सीक्रेट ऑपरेशन शामिल हैं, खासकर ऑपरेशन ल्यारी से जुड़े ऑपरेशन, जो पाकिस्तान सरकार की तरफ से कराची के ल्यारी इलाके में गैंग और क्रिमिनल सिंडिकेट पर की गई कार्रवाई थी।[7] 214 मिनट के रनटाइम के साथ, यह अब तक बनी सबसे लंबी भारतीय फ़िल्मों में से एक है।

दो भागों वाली श्रृंखला की पहली फिल्म, धुरंधर 5 दिसंबर 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। इसे आलोचकों से मिश्रित-से-सकारात्मक समीक्षाएं मिलीं, जिसमें कलाकारों की टुकड़ी (विशेष रूप से रणवीर सिंह और अक्षय खन्ना) के प्रदर्शन के साथ-साथ फिल्म के निर्देशन, छायांकन, वातावरण, संगीत और विश्व-निर्माण की प्रशंसा की गई, लेकिन इसके रनटाइम, पेसिंग और कथित कथात्मक विसंगतियों के लिए आलोचना की गई।[8] एक अनुवर्ती फिल्म, धुरंधर भाग 2, 19 मार्च 2026 को रिलीज होगी।

टी20 क्रिकेट वर्ल्ड कप

आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप 2026 का विजेता भारत हैए अहमदाबाद स्थित नरेंद्र मोदी स्टेडियम में 8 मार्च को हुए फाइनल मैच में टीम इंडिया ने 96 रनों से जीत दर्ज की और तीसरी बार इस खिताब पर कब्जा जमायाए यह फटाफट क्रिकेट का दसवां संस्करण थाए जिसका आयोजन 7 फरवरी से 8 मार्च 2026 तक हुआए इस टूर्नामेंट की मेजबानी भारत और श्रीलंका ने संयुक्त रूप से की और प्रतियोगिता में कुल 20 टीमों ने हिस्सा लिया।

फाइनल में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 255 रन का विशाल स्कोर बनायाए जवाब में न्यूजीलैंड की टीम 159 रन पर ऑल.आउट हो गई और भारत ने 96 रन से शानदार जीत दर्ज कीए इस जीत के साथ भारत ने इतिहास रचते हुए पहली ऐसी टीम बन गई जिसने लगातार दो बार यह ट्रॉफी जीती । यह भी पहली बार थाए जब किसी मेजबान देश ने अपने घर में टी20 विश्व कप का खिताब जीता।

पूरे टूर्नामेंट में संजू सैमसन ने शानदार प्रदर्शन किया और उन्हें प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट चुना गया। वहीं फाइनल में बेहतरीन गेंदबाजी के लिए जसप्रीत बुमराह को प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार मिला। कुल मिलाकरए टी20 विश्व कप 2026 रोमांचए रिकॉर्ड और शानदार क्रिकेट का संगम रहाए जिसने दुनिया भर के क्रिकेट प्रशंसकों को उत्साहित किया और भारतीय क्रिकेट के लिए एक ऐतिहासिक मुकाम बन गया।

डिस्प्ले क्लासिफाइड

For True Stories Kindly Visit Us On:

Forwarded by
By Dr. JAGDISH PRASAD, IFS
Retd.Additional Principal Secretary
Advisor, Medicinal Plants,Gujrat
Mob.: 09978406168, 07923255816

Forestry, the management of forested land, together with associated waters and wasteland, primarily for harvesting timber. To a large degree, modern forestry has evolved in parallel with natural resource management. As a consequence, professional foresters have increasingly become involved in activities related to the conservation of soil, water, and wildlife resources and to recreation.This article traces the history of forestry from its origin in ancient practices to its development as a scientific profession in the modern world, and it discusses the kinds and distribution of forests as well as the principal techniques and methods of modern forest management in detail.HistoryThe ancient worldIt is believed that Homo erectus used wood for fire at least 750,000 years ago. The oldest evidence of the use of wood for construction, found at the Kalambo Falls site in Tanzania, dates from some 60,000 years ago. Early organized communities were located along waterways that flowed through the arid regions of India, Pakistan, Egypt, and Mesopotamia, where scattered trees along riverbanks were used much as they are today—for fuel, construction, and handles for tools. Writers of the Hebrew Bible make frequent reference to the use of wood. Pictures in Egyptian tombs show the use of the wooden plow and other wooden tools to prepare the land for sowing. Carpenters and shipwrights fabricated wooden boats as early as 2700 bce. Theophrastus, Varro, Pliny, Cato, and Virgil wrote extensively on the subject of trees, their classification, manner of growth, and the environmental characteristics that affect them.The Romans took a keen interest in trees and imported tree seedlings throughout the Mediterranean region and Germany, establishing groves comparable to those in Carthage, Lebanon, and elsewhere. The fall of the Roman Empire signaled an end to conservation works throughout the Mediterranean and a renewal of unregulated cutting, fire, and grazing of sheep and goats, which resulted in the destruction of the forests. This, in turn, caused serious soil loss, silting of streams and harbours, and the conversion of forest to a scrubby brush cover known as maquis.

बालाघाट क्षेत्र में वन्य जीव संरक्षण का सफल मॉडल बनकर उभरा

भोपाल। डब्ल्यूडब्ल्यूएफ इंडिया और वन विभाग की नई वैज्ञानिक रिपोर्ट के अनुसार मध्यप्रदेश का बालाघाट क्षेत्र संरक्षित क्षेत्रों से बाहर वन्य जीव संरक्षण का सफल मॉडल बनकर उभरा है। उत्तर एवं दक्षिण बालाघाट वन मंडलों में बड़े मांसाहारी वन्य जीवों एवं जंगली खुरदार प्राणियों की स्थिति भोपाल में जारी की गई। इसका विमोचन पीसीसीएफ श्री शुभरंजन सेन, पीसीसीएफ (वाइल्ड लाइफ डॉ. समीता राजौरा ने किया। साथ में एपीसीसीएफ (वाइल्ड लाइफ) एल. कृष्णमूर्ति, गौरव चौधरी, रवि सिंह, संकेत भाले, दीप्ति गुप्ता थे। नवंबर 2021 से फरवरी 2022 के बीच किये गये अध्ययन में क्षेत्र में 24 स्तनधारी प्रजातियों की पहचान हुई है।

श्री सेन ने बताया कि यह रिपोर्ट केवल आँकड़ों और वितरण पैटर्न का दस्तावेज नहीं है बल्कि प्रमाण है कि निरंतर संरक्षण, वैज्ञानिक प्रबंधन और सामुदायिक भागीदारी से क्षेत्रीय वन परिदृश्यों में भी उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं। बालाघाट से मिले अनुभव यह स्पष्ट करते हैं कि मध्यप्रदेश और भारत में वन्य जीव संरक्षण केवल संरक्षित क्षेत्रोंत क ही सीमित नहीं रह सकता बल्कि पूरे वन परिदृश्य में इसे मजबूत करना होगा।

'सोना-उगले मिट्टी' एक जानकारी

MEDIA PARTICULARS

Frequency	-	Monthly	Language	-	Hindi
Page	-	52	Size	-	A4
Prize	-	25/- Per Issue			

ADVERTISEMENTS RATES

SPACE	MULTI COLOUR	With Dharti Ugle Sona COMBINED ADVT.
➤ आवरण पृष्ठ	1,00,000/-	1,40,000/-
➤ आवरण पट्टी	25,000/-	40,000/-
➤ आवरण के अन्दर	70,000/-	1,00,000/-
➤ प्रथम पृष्ठ	70,000/-	1,00,000/-
➤ अन्तिम के अंदर पृष्ठ	70,000/-	1,00,000/-
➤ अन्तिम पृष्ठ	1,00,000/-	1,40,000/-
➤ मध्य पृष्ठ	1,00,000/-	1,40,000/-
➤ पूरा पृष्ठ	50,000/-	80,000/-
➤ आधा पृष्ठ	30,000/-	50,000/-
➤ चौथाई पृष्ठ	16,000/-	25,000/-
➤ 1/8 पृष्ठ	9,000/-	16,000/-
➤ 1/16 पृष्ठ	5,000/-	8,000/-

आकार एवं प्रकार	सोना साईज (से.मी. में)
आवरण पृष्ठ	19 H × 17 W.
आवरण पट्टी	04 H × 17 W.
पूर्ण पृष्ठ	24H × 17 W.
आधा पृष्ठ (क्षितिज)	12 H × 17 W.
आधा पृष्ठ (ऊर्ध्वाधर)	24 H × 8 W.
मध्य का पृष्ठ (डबल पृष्ठ)	24 H × 34 W.
चौथाई पृष्ठ (क्षितिज)	6 H × 17 W.
चौथाई पृष्ठ (ऊर्ध्वाधर)	12H × 8 W.
1/8 पृष्ठ (क्षितिज)	3H × 17 W.
1/8 पृष्ठ (ऊर्ध्वाधर)	6 H × 8 W.
1/16	2 H × 17W.
	5 H × 4 W.

एक से ज्यादा अंकों हेतु : 20% अंकों पर 3, 25% अंकों पर 6, 35 अंकों पर 9 एवं 40% अंकों पर 12 Insertions

एजेन्सी विज्ञापन : 15% out of above discount will be passed to Advt. Agency.

OTHER ADVERTISMENTS (Display Classified)

वर्गीकृत मल्टीकलर : 5cm x 4cm = 2000/- 5cm x 8cm = 3400/- शब्दों में : अधिकतम 50 शब्द 1000/- (अतिरिक्त शब्दों पर 5/– प्रति शब्द)

नोट : डिस्प्ले विज्ञापन एक वर्ष की सदस्यता के साथ दो बार प्रकाशित किया जावेगा.

SUBSCRIPTION RATES : (Inclusive of Postage) (New Rates)

1. एक प्रति रु. 25/- 2. एक वर्ष रु. 300/- 3. दो वर्ष रु. 500/- 4. तीन वर्ष रु. 700/-
5. चार वर्ष रु. 1000/- 6. पाँच वर्ष रु. 1200/- आजीवन सदस्यता रु. 5000/-

सोना-उगले मिट्टी क्विज

क्विज प्रतियोगिता के विजेता को सोना–उगले मिट्टी की वार्षिक निःशुल्क प्रदान की जावेगी.

1. पानी का रासायनिक सूत्र क्या है?
2. DNA का पूरा नाम क्या है?
3. मानव शरीर का सबसे बड़ा अंग कौन सा है?
4. भारतीय संसद के कितने सदन होते हैं?
5. हॉकी का जादूगर किसे कहा जाता है?
6. ATM का पूरा नाम क्या है?
7. सबसे तेज़ इंटरनेट किस देश में है?

नाम _____ पिता/पति _____

ग्राम _____ पोस्ट _____

तहसील _____ जिला _____

फोन _____ मोबाइल _____

उत्तर : 1. _____ 2. _____ 3. _____

4. _____ 5. _____ 6. _____ 7. _____

हर दिन बचाईयें दो घंटे

धूम्रपान छोड़िये। सिगरेट का पैकेट खोलने बंद करने, ऐश ट्रे की सफाई, बार-बार खाँसने परिवार वालों की सुनने और फिर सिगरेट छोड़ने के बारे में सोचने पर आपका काफी समय बच जाएगा। और कुछ न हीं तो 20 मिनिट तो बच ही जाएंगे।

प्रतिदिन ड्रिंक करने वाले यदि ड्रिंक करना छोड़ते है तो मुझे पता नहीं कितना समय बचा सकते हैं।

टी.वी. पर अपनी पसंद के चुनिंदा कार्यक्रम ही देखें। सीधे 20 मिनिट बच जायेंगे। महिलाओं के लिए विशेष तौर पर आने वाले दिन का मेनू पहले ही निश्चित कर ले तो बहुत आधिक समय बचा सकती है।

रोटरी मीटिंग ठीक समय पर प्रारंभ हों और ठीक समय पर खत्म हो तो हिसाब लगाईये आप कितना समय बर्बाद होने से बचा सकते हैं।

ऐसे कई 10-10 मिनिट बचाकर दिन भर में दो घंटे भी बचा लिये तो जो प्राप्त जिंदगी है उसमें कितने घंटे आपके जीवन में जुड़ जाएंगे फिर जीयें भरपूर जीयें, काम समय परकरिये, आपको सफलता ही सफलता मिलती रही। आप विजयी होंगे।

स्व. डॉ. मन्मथ पाटनी
-डायरेक्टर, प्रेस्टीज ग्रुप

चाणक्य नीति

।। अथ अष्टमोऽध्यायः ।।
आठवां अध्याय

इक्षुरापः पयो मूलं ताम्बूलं फलमौषधम् ।
भक्षयित्वाऽपिकर्तव्याःस्नानदानादिकाःक्रियाः ।।२।।

अर्थ– ऊख, जल, दूध, पान, फल और औषधि इन वस्तुओं के भोजन करने पर भी स्नान दान आदि क्रिया कर सकते हैं।

दीपो भक्षयते ध्वान्तं कज्जलं च प्रसूयते ।
यदन्नं भक्ष्यते नित्यं जायते तादृशी प्रजा ।।३।।

अर्थ– दीपक अँधेरे का भक्षण करता है इसीलिए काला धुआ बनाता है. इसी प्रकार हम जिस प्रकार का अन्न खाते है. माने सात्विक, राजसिक, तामसिक उसी प्रकार के विचार उत्पन्न करते है.

महालक्ष्मी नगर में हनुमान जन्मोत्सव

प्रतिवर्ष की भांति इंदौर के महालक्ष्मी नगर MR-6 रेवासी संघ द्वारा नर्मदेश्वर महादेव वी दक्षिण मुखी हनुमान मंदिर पर हनुमान जन्मोत्सव इस बार बड़े जोश वह व्यस्थित ढंग से मनाया गया। क्षेत्र के रेवासियों ने अपने तन-मन-धन से इस आयोजन को सफल बनाया सुंदरकांड के पश्चात भजन संध्या एवं लजीज व्यंजनों के भंडारे का सभी ने आनंद लिया आसपास के परिवारों व गरीब लोग भी उपस्थित रहे श्री रितेश जोशी श्री विवेक बैंक श्री मूलचंद गुप्ता श्री महेश साहू श्री देवराज यी देवांशु चौधरी के अलावा सभी नियासियों ने व्यवस्था को सुचारू रूप से संभाला एवं महिलाओं की भागीदारी भी सराहनीय रही।

किसान कल्याण पत्रकार समिति
पंजीकृत रजि. नं.: 03/27/01/18185/15

श्री देवराज चौधरी
संस्थापक अध्यक्ष
09826055852
सोना-उगले मिट्टी
प्रधान संपादक

श्री राजेंद्र सिंह भदौरिया
उपाध्यक्ष
09926323857
म्हारो गाँव
प्रधान संपादक

सभी देशवासियों को बुद्ध पूर्णिमा, गंगा दशहरा व ईद की हार्दिक शुभकामनाएँ

श्री रितेश अग्रवाल
अध्यक्ष
09301177717
कृषि ताहलका
प्रधान संपादक

श्री स्वप्निल देशपांडे
सचिव
09826186084
सम्पूर्ण वार्ता
प्रधान संपादक

लू, डिहाइड्रेशन और थकान - गर्मी के तीन बड़े दुश्मन

गर्मियों के दिनों में आप सभी ने यह महसूस किया होगा कि आपको बहुत तेज प्यास लगती है लेकिन पानी पीने के बावजूद भी यह प्यास बुझती नहीं है। वास्तव में ऐसा शरीर में पानी की कमी (Dehydration) के कारण होता है. डिहाइड्रेशन या निर्जलीकरण गर्मियों के दिनों में होने वाली एक आम बीमारी है। हमारे शरीर के लगभग एक तिहाई हिस्से में पानी मौजूद होता है। गर्मियों के मौसम में पानी कम पीने से और ज्यादा पसीना निकलने से शरीर मे पानी और नमक का संतुलन बिगड़ जाता है जिससे कई तरह की समस्याएं होने लगती हैं। वैसे तो यह समस्या किसी भी उम्र के लोगों को हो सकती है लेकिन छोटे बच्चे इसकी चपेट में बहुत जल्दी आते हैं।

हमारे शरीर में मौजूद कोशिकाओं को सुचारु रुप से काम करने के लिए ऑक्सीजन की ज़रुरत पड़ती है और यह ऑक्सीजन उन्हें पानी से ही मिलती है। ऐसे में अगर शरीर में पानी की कमी होती है तो ऑक्सीजन की आपूर्ति पर बुरा असर पड़ता है और शारीरिक स्वास्थ्य बिगड़ने लगता है। अगर आप सही समय पर डिहाइड्रेशन का इलाज (Dehydration treatment) नहीं करते हैं तो आगे चलकर आपकी मुश्किलें काफी बढ़ सकती हैं।

डिहाइड्रेशन के कारण: शरीर में पानी की कमी कई कारणों की वजह से हो सकती है। आमतौर पर ज्यादा देर तक गर्मी में रहने और उस दौरान पर्याप्त मात्रा में पानी ना पीने से डिहाइड्रेशन (निर्जलीकरण) की समस्या होती है। इसके अलावा ज्यादा देर तक कसरत करने, बार-बार पेशाब करने से, तेज बुखार होने से, कई बार दस्त होने से और कुछ अन्य बीमारियों की वजह से भी शरीर में पानी की कमी हो सकती है।

डिहाइड्रेशन के लक्षण: डिहाइड्रेशन होने पर बहुत अधिक प्यास लगती है और ये प्यास पानी पीने के बावजूद भी बुझती नहीं है। इसके अलावा ब्लड प्रेशर कम होना, तेज सांसे चलना, होंठ और जीभ सूखना, कम पेशाब होना, कब्ज, मांसपेशियों में ऐंठन और दर्द होना, तेज थकान होने डिहाइड्रेशन के प्रमुख लक्षण हैं। अधिकांश लोगों में डिहाइड्रेशन के कारण तेज सिरदर्द (Dehydration headache) होने लगता है। इसीलिए अगर गर्मियों के दिनों में कभी भी तेज सिरदर्द हो तो उसे अनदेखा ना करें।

अगर बच्चों में डिहाइड्रेशन के लक्षणों (Signs of dehydration in children) की बात की जाए तो इसके कारण उनके होंठ सूखने लगते हैं और कई कई घंटो तक उन्हें पेशाब नहीं होती है। उल्टी या अधिक दस्त हो जाने के कारण शरीर में पोटैशियम, सोडियम जैसे महत्वपूर्ण खनिजों की मात्रा काफी कम हो जाती है। ऐसे में अगर इनकी भरपाई ना की जाए तो शरीर में ज्यादा कमजोरी महसूस होने लगती है। डिहाइड्रेशन के दुष्प्रभावों (Side effects of dehydration) से बचने के लिए घरेलू या आयुर्वेदिक उपाय अपनाएं या स्थिति गंभीर होने पर नजदीकी डॉक्टर से संपर्क करें।

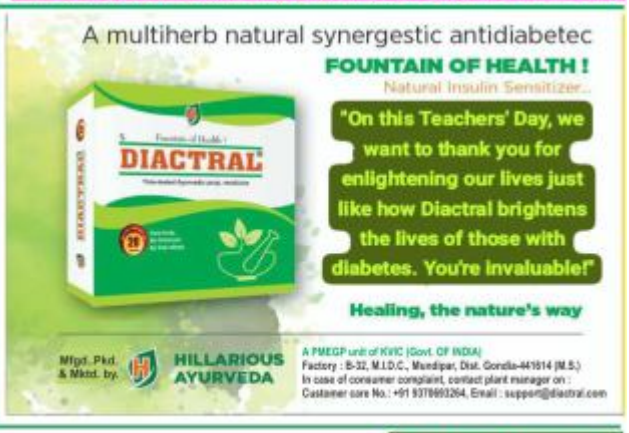

वाहेगुरु जी का खालसा, वाहेगुरु जी की फतेह
धन गुरु अमरदास जी दे गुरूपूरब दी लख लख बधाईयां जी

धन श्री गुरु अमरदास जी सिख धर्म के तीसरे गुरु के रूप में आज विश्व भर में जाने जाते है। श्री गुरु अमरदास जी सिख पंथ के ऐसे महान प्रचारक थे, जिन्होंने परम ज्योति धन गुरु नानक देव जी के जीवन दर्शन व् उनके दिखाए गए प्रकाश पथ को लोगों तक पहुंचाया तथा उनके द्वारा लगाए गए प्रेम व् भक्ति के पौधे को जन जन तक पहुंचाया। धन श्री गुरु अमरदास जी का जन्म 15वीं ईस्वी में सन 1479 को गुरनगरी अमृतसर के बासरके गांव में हुआ। इनके पिता जी का नाम भाई तेज भान भल्ला जी था जो एक मध्यवर्ग परिवार से थे। इनकी माता जी का नाम सुलखणी जी था गुरु अमरदास जी बचपन से ही बहुत बड़े आध्यात्मिक चिंतक थे। अपने परिवार का निर्वाह करने के लिए वे पूरा दिन खेती और व्यापार के काम–काजों में व्यस्त रहते और ईश्वर का हरि भजन करते थे। उनकी भगवान् की ओर ऐसी लगन देखते हुए गांव के लोग उन्हे भक्त अमरदास जी कह कर बुलाया करते थे। एक बार गुरू अमरदास साहिब जी ने गुरू अंगद देव जी की पुत्री बीबी अमरो जी से गुरू नानक साहिब के शबद सुने । उन शब्दों ने अमरदास जी पर ऐसा जादू किया कि वो गुरु अंगद साहिब से मिलने के लिए खडूर साहिब पहुँच गए। **पुरानी कहावत है कि**: शाह बिन पत नहीं, ते गुरु बिन गत नहीं। उस समय दुसरी गुरगद्दी पर विराजमान श्री गुरु अंगद देव जी के श्री मुख से बाबा नानक के शब्दों की मधुर वर्षा होती थी। धन गुरु अमरदास जी को उन शब्दों ने ऐसा प्रेरित किया कि 61 वर्ष के अमरदास जी ने अपने से लगभग 25 वर्ष छोटे और रिश्ते में समधी लगने वाले धन गुरु अंगद देव जी को अपना गुरु बनाने की ठान ली। अब वे लगातार अपने गुरु की सेवा करने में समय गुजारने लगे। वे नित्य सुबह जल्दी उठ जाते व गुरू अंगद देव जी के स्नान के लिए ब्यास नदी से जल लाते, और गुरू के लंगर लिए जंगल से लकड़ियां काट कर लाते। यह सिलसिला लगभग 11 वर्षों तक एकनिष्ठ भाव से चलता रहा। गुरु भक्ति और जीव प्रेम की भावना उनमे इस कदर थी कि धन गुरु अंगद देव जी ने उन्हें सभी प्रकार से योग्य जानकर 'गुरुगद्दी' सौंप दी। आपको बता दें कि उस समय धन गुरु अमरदास जी की उम्र लगभग 73 वर्ष की थी। 1552 में दिव्य स्वरूप धन गुरू अंगद साहिब जी ने अमरदास साहिब को तृतीय नानक के रूप में चुना। भारतीय समाज उस समय "सामंतवादी" था और बहुत सी सामाजिक बुराइयों से ग्रस्त था। जाति–प्रथा, ऊंच–नीच, कन्या–हत्या, सती–प्रथा जैसी समाजिक बुराइयां उस समय अपने चरम पर थी। देश, समाज और जनहित के लिए गुरु अमरदास जी ने इन सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ बड़ा प्रभावशाली आंदोलन चलाया। ऊंच–नीच की प्रथा पर करारा वार करते हुए गुरु साहिब जी ने लंगर प्रथा को और सशक्त किया और हर जाति के लिए भोजन की व्यस्था की। उस समय में भोजन करने के लिए जातियों के अनुसार कतारें लगा करती थीं, लेकिन गुरु अमरदास जी ने सभी के लिए एक ही कतार में बैठकर लंगर छकना यानी भोजन करना अनिवार्य कर दिया।लंगर छकाने का उनका यह नियम ऐसा बना कि उस समय गुरु–दर्शन के लिए गोइंदवाल साहिब आए मुगल बादशाह व शहंशाह ए हिन्द जलालुद्दीन अकबर ने भी उसी कतार में बैठी 'संगत' के साथ ही लंगर छका। इसके बाद गुरु साहिब जी ने छुआछूत जैसी कुप्रथा को खत्म करने के लिए 'सांझी बावली' का निर्माण भी करवाया। इसकी खास बात ये थी की हर व्यक्ति इसके जल का इस्तेमाल कर सकता था। सती–प्रथा को रोकने के लिए भी गुरु जी ने इसके विरोध में बहुत प्रचार किया। इस कुप्रथा के खिलाफ आवाज उठाने वाले गुरु अमर दास जी देश प्रथम समाज–सुधारक थे।

गुरू अंगद साहिब जी की शिक्षा का ही परिणाम था, जो गुरु प्रचार के लिए गुरु अमरदास जी ने 22 धार्मिक श्केंद्रीय मंजीयोश की स्थापना की और हर श्मंजीश पर एक प्रचारक प्रभारी को भी नियुक्त किया।

गुरु अमरदास जी ने जाति भेदभाव को खत्म करके अपने अनुयायियों के बीच सामाजिक सद्भावना के बीज बोए।

गुरु अमरदास जी ने अपने से पहले दो गुरुओं के उपदेशों, रागों, बाणी को लोगों तक पहुंचाने का काम किया।'आनन्द साहिब' जिसे श्परमानन्द का गीतश कहते हैं, का लेखन गुरु अमरदास जी ने ही किया था, जोकि सिखों की एक नितनेम की बाणी भी है। 1 सितंबर 1574 को धन गुरु अमरदास जी दिव्य ज्योति में विलीन हो गए। समाज से भेदभाव खत्म करने के प्रयासों में गुरु अमरदास जी का बड़ा योगदान है। उनका दिखाया गुरु–मार्ग आज भी लोगों को प्रकाश–पथ की ओर चलने के लिए अगर्सर कर रहा है ।

धन धन गुरु अमरदास जी

संदीप कौर खालसा
पंजाब इंजीनियरिंग इंदौर
पंजाब इंजीनियरिंग कारपोरेशन

रेकी
ग्रिड
जड़ समाधि

श्रीमती कुमुद अरोरा
मो. 098997-35355
097189-33456

मानसिक उलझनों जैसे - एंग्जायटी, निगेटिव विचार और तनाव से डील करने के लिए आजकल स्परीचुअल हीलिंग का सहारा लिया जा रहा है। यह सुरक्षित और कारगर मानी जाती है। रेकी भी इन्हीं में से एक है जिसमें रेकी हीलर अपने अंदर मौजूद ऊर्जा और ब्रह्मांड की ऊर्जा को कनेक्ट करके सामने वाले को हील करता है।

रेकी का अर्थ: इंटरनेशनल सेंटर फॉर रेकी ट्रेनिंग के अनुसार, "रेकी" शब्द दो जापानी शब्दों से मिलकर बना है, "रेई", जिसका अर्थ है "भगवान की बुद्धि," या "उच्च शक्ति," और "की", जिसका अर्थ है "जीवन शक्ति ऊर्जा"।

"की" वह जीवन शक्ति ऊर्जा है जो सभी जीवित चीजों को सजीव करती है। "रेई" और "की" को एक साथ रखें, तो इसका अर्थ "आध्यात्मिक रूप से निर्देशित जीवन शक्ति ऊर्जा" हो जाता है।

रेकी एक आध्यात्मिक प्रैक्टिस है जिसका उपयोग हीलिंग में किया जाता है। यह एक स्पर्श चिकित्सा है लेकिन आजकल इसका एडवांस वर्जन भी आ गया है जिसमें दूर से भी रेकी दी जा सकती है। आपने कई हीलर्स को देखा होगा कि वह अपने हाथों के उपयोग से कुछ ऐसी पॉजीशन्स बनाते हैं जिससे आपके आसपास एक ऊर्जा चक्र का निर्माण होता है। यह ऊर्जा चक्र आपकी एनर्जी को पॉजिटिव बनाता है और कई बार आपके शरीर को हील भी करता है।

शेष अगले अंक में.....

Learn Tarot and numerology in one day only in 5,000 Rupees
Mrs. Dr. Kumud Lata
9811461541,
9718933456

भुवनचंद्र अमर रहेंगे

श्री गोपाल नारसन

बहादुर जनरल चला गया
स्वर्णिम यादे छोड़ गया
राष्ट्रभक्ति की मिसाल बने
देश की वह शान बने
कटु वचन कभी बोले नही
ईमानदारी कभी छोड़ी नही
जन जन के लोकप्रिय रहे
उत्तराखंड के सीएम रहे
बेटी ने स्पीकर मान पाया
कभी धूप रही कभी छाया
भुवनचंद्र सदा अमर रहेंगे
खण्डूरी रूप में दिव्यमान रहेंगे।
-----श्रीगोपाल नारसन

जीवन हो सार्थक
ऐसी हो जाए सोच
राष्ट्र पर न मर मिटने का
होता रहे अफ़सोस
देश के हर शख्स की
हिफाजत का निभाये जिम्मा
तरक्की हो वतन की
ऐसे करे हम काम
देश के शहीदों को
मिलता रहे सम्मान
एकाग्रचितता के साथ
सबके भले की हो बात
सफलता जरूर मिलेगी
परमात्मा होंगे साथ।

पोस्ट बॉक्स 81, रुड़की, उत्तराखंड मो.: 9412072417

पेड़ लगायें, पेड़ उगायें,

डॉ. जगदीश प्रसाद

पेड़ लगायें, पेड़ उगायें, हरित क्रांति की ज्योति जलायें.
पेड़ लगायें, पेड़ उगायें, हरित क्रांति की ज्योति जलायें.
खेत क्यार वन गली गली, गाम शहर नगरा नगरी.
खेत खेत की मेड मेड पे, पेड़ लगायें

पेड़ उगायें ...

पेड़ लगायें...

फूल फल के पेड़ लगाये साथ में जड़ी बूटी और लताएँ.
बंजर भूमि नवसाध्य करें और दरिया में भी "चेर" उगाये ...

पेड़ लगायें...

नहर, रेल और सड़क किनारे, शमशान गृह व तलाब कांठे
संस्था, कॉलेज, विद्यालय और हर घर आँगन पेड़ लगायें ...

पेड़ लगायें...

नभचर जलचर थलचर वास्ते, लकड़ी, चारा, ईंधन वास्ते.
कागज दवा उद्योग वास्ते, आमदनी, फल, शोभा वास्ते ...

पेड़ लगायें...

इकोलोजी की सुरक्षा हेतु व पर्यावरणीय संतुलन हेतु
पोषण जाल टिकाने हेतु व प्रदुषण अटकाने हेतु ...

पेड़ लगायें...

आपकी समस्त डिजाईनिंग एवं प्रिंटिंग समस्याओं का समाधान हमारे पास है...
सभी प्रकार के विज्ञापन डिजाईन, पब्लिसिटी संबंधी कार्य हेतु जैसे -
★ कमर्शियल डिजाईनिंग ★ क्वालिटी स्क्रीन प्रिंटिंग ★ वॉल पेंटिंग ★ स्टीकर्स
★ मेटल प्लेट्स ★ पी.वी.सी. बैनर्स ★ डैंगलर्स ★ फ्लेक्स ★ बैग ★ ट्राफी ★ साइन बोर्ड
★ होर्डिंग्स ★ ऑफसेट प्रिंटिंग जाब एवं अन्य पब्लिसिटी आयटम।
नोट : कृषि आधारित कंपनी के कार्यों मे विशेष दक्षता।
राज एडवरटाइजर्स एण्ड कंसलेंटट्स
ई.ए.-155, स्कीम नं. 94, रिंग रोड़, भारत पेट्रोल पंप के सामने, इन्दौर-452010 (म.प्र.)
मो. 9826055852, 7224943188 Email : devrajchaudhary@rediffmail.com

ब्रेड उपमा

ब्रेड उपमा एक बनाने में आसान, त्वरित बन जाने वाला और स्वादिष्ट दक्षिण भारतीय व्यंजन है जो सुबह के नाश्ते में परोसने के लिये एकदम सही है। इसे बनाने के लिए जो भी सामग्री चाहिए वो आसानी से रसोई घर में मिल जायेगी और इसे बनाने की विधि भी रवा उपमा के जैसी ही है। तो आईये आज हम इस रेसिपी का पालन करके ब्रेड उपमा बनाना सीखते है।

सामग्री: 5 ब्रेड स्लाइस (सफेद या ब्राउन), 1/4 टीस्पून राई (सरसों के बीज), 1/4 टीस्पून जीरा, 1/4 टीस्पून उड़द की दाल, 1 चुटकी हींग, 5-7 करी पत्ते, 1 बड़ा प्याज, बारीक कटा हुआ (लगभग 1/2 कप), 2 मध्यम टमाटर, बारीक कटे हुए (लगभग 3/4 कप), 1 हरी मिर्च, बारीक कटी हुई, 1 टीस्पून मूंगफली के दाने, वैकल्पिक, 4-5 काजू, वैकल्पिक, एक चुटकी हल्दी पाउडर, 1½ टेबलस्पून तेल, 2 टेबलस्पून पानी, नमक स्वाद अनुसार, 2 टेबलस्पून बारीक कटा हुआ हरा धनिया, सजाने के लिए, सेव, सजाने के लिए (वैकल्पिक)

आप इस विधि में अपनी पसंद के अनुसार सफेद ब्रेड या ब्राउन ब्रेड (गेहूं की ब्रेड) का उपयोग कर सकते हैं। अगर हो सके तो इसे और भी अधिक पौष्टिक नाश्ता बनाने के लिए सफेद ब्रेड के बदले ब्राउन ब्रेड (गेहूं की ब्रेड) का उपयोग करें। ब्रेड स्लाइस को छोटे-छोटे टुकड़ों या क्यूब्स में काट लें। एक कड़ाही या पैन में मध्यम आँच पर 1½ टेबलस्पून तेल गरम करें। उसमे राई (सरसों के बीज), जीरा और उड़द दाल डालें। जब राई फूटने लगे तब हींग और करी पत्ते डालें। कटा हुआ प्याज, कटी हुई हरी मिर्च, मूंगफली के दाने और काजू डालें। प्याज हल्के गुलाबी रंग का हो जाता है तब तक भूने। कटा हुआ टमाटर, हल्दी पाउडर और नमक डालें और अच्छी तरह से मिला लें। जब तक टमाटर नरम हो जाते है तब तक भूने। 2-टेबलस्पून पानी डालें, अच्छी तरह से मिला ले और 2 मिनट के लिए पकने दें। ब्रेड के टुकड़े डालें और अच्छी तरह से मिला ले। ढक्कन से ढक कर मध्यम आंच पर 2-3 मिनट के लिए पकने दें। गैस बंद कर दें और ढक्कन हटा दें। कटे हुए हरा धनिया से सजाये और शाम के नाश्ते में चाय के साथ गरम परोसें। आप इसे सेव से भी सजा सकते हैं।

सुझाव और विविधता: बदलाव के लिए, आप स्टेप-5 में हरी मटर और शिमला मिर्च जैसी सब्जिया डाल सकते हैं। कम या ज्यादा तीखा बनाने के लिए अपने स्वाद के अनुसार हरी मिर्च डालें। स्वाद: नमकीन, मुलायम और हल्का तीखा परोसने के तरीके: ब्रेड उपमा को शाम नाश्ते में या कभी भी चाय के साथ परोसें। कई दक्षिण भारतीय घरों में इसे रात के खाने में भी परोसा जाता है।

सेब का रायता

श्रीमती मधु चौधरी

सेब का रायता, सेब के टुकड़ों को दही और मसालों के साथ मिलाकर बनाया गया एक स्वादिष्ट और मलाईदार व्यंजन है। यह हल्का मसालेदार रायता वेज बिरयानी के साथ एकदम बढ़िया लगता है और यह बूंदी रायते का एक बढ़िया विकल्प भी है। इतना ही नहीं, इसे खाने के बाद मिठा के रूप में भी परोसा जा सकता है।

सामग्री: 1 कप कटा हुआ सेब, 1½ कप गाढ़ा दही, 1/4 टीस्पून काली मिर्च पाउडर, 1/2 टीस्पून जीरा पाउडर, 1 टीस्पून चीनी (वैकल्पिक), नमक|

विधि : 1. एक कटोरे में दही लें। इसमे चीनी और जीरा पाउडर डालें और चिकना होने तक फेंटें। 2. इसमे कटा हुआ ताज़ा सेब और नमक डालें। अगर आपको सेब का । 3. छिलका पसंद नहीं है, तो काटने से पहले उसे छील लें।

4. सबको अच्छी तरह मिला ले। सेब का रायता तैयार है। 5. इसे एक सर्विंग बाउल में डालें, ऊपर से काली मिर्च पाउडर छिड़कें और ठंडा परोसें।

सुझाव और विविधता: दही को इलेक्ट्रिक ब्लेंडर से न फेंटें, वरना रायता पतला हो जाएगा। अगर हो सके तो गाढ़ा और ठंडा दही का उपयोग करे।

अगर आप इसे पहले से बनाके रखना चाहते हैं, तो सेब के टुकड़ों के साथ नमक न डालें, बस परोसने से ठीक पहले डालें और मिलाएँ। बदलाव के लिए, आप सेब-केला रायता बनाने के लिए कटा हुआ केला भी डाल सकते हैं।

बिना छिले सेब का इस्तेमाल करना वैकल्पिक है। अगर आप स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हैं, तो इसे छीलें नहीं क्योंकि सेब का छिलका पौष्टिक तत्वों से भरपूर होता है। अपनी पसंद के सेब जैसे हरा सेब, लाल सेब आदि का इस्तेमाल करें।

स्वाद: हल्का खट्टा और हल्का मीठा

परोसने के तरीके: इसे भरवां भिंडी, चपाती और उबले हुए चावल के साथ या दोपहर के भोजन में पनीर चावल के साथ परोसा जा सकता है। यह मिठाई के रूप में भी बेहद स्वादिष्ट है।

पं. राजेन्द्र प्रसाद पाठक (बावई वाले)
101, गुरुनानक मार्ग, डाक बंगला रोड़, सोनकच्छ
☎ 07270-222959, 98270-47936

मेष :

यह महीना मेष राशि के जातकों के लिए उतार–चढ़ाव से भरा रहने की संभावना है। आपको अपने जीवन में कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लेने पड़ सकते हैं जिनके लिए आपको पहले से ही तैयार होना

सिंह :

इस माह आप जितने मनोयोग के साथ किसी भी कार्य को करेंगे आपको उसमें उतनी ही सफलता प्राप्त होगी।

धनु :

धनु राशि के जातकों को मई के महीने में तमाम तरह की परेशानियों और कर्ज आदि से मुक्ति मिल सकती है। यदि आप लंबे समय से रोजी–रोजगार की तलाश में भटक रहे हैं तो आपको इस माह मनचाहा काम मिल सकता है।

वृषभ :

वृष राशि के जातकों के लिए मई का महीना मिलाजुला रहने वाला है। इस माह आपको मनचाही सफलता पाने के लिए समय और ऊर्जा का प्रबंधन करके चलना होगा।

कन्या :

कन्या राशि के जातकों के मई के महीने में कोई भी कदम आगे बढ़ाने से पहले दस बार जरूर सोच लेना चाहिए। इस माह आवेश अथवा जल्दबाजी में लिया गया निर्णय आपके लिए बड़े नुकसान का कारण बन सकता है।

मकर :

मकर राशि के लिए मई का महीना सपनों को साकार करने वाला साबित होगा। इस माह यदि अपने काम को सही समय पर सही तरीके से करने का प्रयास करते हैं तो आपको निश्चित रूप से परिश्रम और प्रयास का पूरा फल मिल सकता है।

मिथुन :

मिथुन राशि के जातकों के लिए मई का महीना तमाम तरह की उपलब्धियां और सफलताओं को समाहित किए हुए है। इस माह आपको जीवन में तरक्की करने के कई अवसर प्राप्त होंगे।

तुला :

तुला राशि के जातकों के लिए मई का महीना मिलाजुला रहने वाला है। इस माह तुला राशि वालों को पास के फायदे में दूर का नुकसान करने से बचना होगा।

कुंभ :

कुंभ राशि के लिए मई का महीना मिश्रित फल देने वाला रहेगा। करियर–कारोबार की दृष्टि से मई महीने का पूर्वार्ध आपके लिए थोड़ा चुनौती भरा रह सकता है। इस दौरान रोजी–रोजगार के लिए आपको अधिक परिश्रम और प्रयास करना पड़ सकता है।

कर्क :

कर्क राशि के लिए मई महीने की शुरुआत शुभता और लाभ लिए रहने वाली है। इस दौरान आपके जीवन में अचानक से कुछ चुनौतियों के साथ बड़े अवसर भी सामने आएंगे।

वृश्चिक :

वृश्चिक राशि वाले जातकों को मई महीने में बड़े बदलाव के लिए तैयार रहना होगा। इस माह आपको जीवन में नई रणनीति और बदलाव को अपनाते हुए आगे बढ़ना होगा।

मीन :

मई महीने की शुरुआत में मीन राशि के जातकों के शुभ साबित होगी। इस दौरान आपके सोचे हुए कार्य समय पर और अच्छी तरह से पूरे होते हुए नजर आएंगे। करियर–कारोबार के सिलसिले में की जाने वाली यात्राएं शुभ और लाभप्रद साबित होंगी।

क्या आप
सोना-उगले मिट्टी
कृषि-पत्रिका

घर बैठे पढ़ना चाहते हैं? यदि हाँ.....
तो इस फार्म को भरकर हमें शीघ्र भेजे दें

महोदय,
मैं **सोना-उगले मिट्टी** पत्रिका का सदस्य बनना चाहता हूँ मेरा विवरण निम्नानुसार हैं।

1. पूरा नाम.....
2. पूरा पता.....
3. पिन कोड नं. .....
4. सदस्यता अवधि 1 वर्ष / 2 वर्ष / 3 वर्ष / आजीवन.....
5. पे ऑर्डर / बैंक डी.डी. क्र.....

बैंक का नाम .....
राशि रु. .....

(पे आर्डर या डी.डी. सोना-उगले मिट्टी के नाम ही बनाएं)

सदस्यता शुल्क

अवधि		
एक वर्ष	300/-	धन्यवाद
दो वर्ष	500/-	
तीन वर्ष	700/-	
आजीवन	5000/-	आवेदक

डब्ल्यू.ए.–205, स्कीम नं. 94, रिंग रोड़, भारत पेट्रोल के पास,
इन्दौर–452010 (म.प्र.) फोन : 0731–4244776
मो.: 09826055852, 09826066159
Email : devrajchaudhary@rediffmail.com, sonauglemitti25@gmail.com
www.sonauglemitti.com

रजि. नं.: 03/27/01/18179/15

जय देवगुरू शक्ति सामाजिक कल्याण समिति
ई.ए.–188, स्कीम नं. 94, रिंग रोड, माल पेट्रोल पंप के सामने, इन्दौर–452010 (म.प्र.)
मो. 9826055852, 7224943188 E-mail : jaigurudevshakti@gmail.com

ईश्वर एवं आप सबके सहयोग से किसानों को जागरूक एवं शिक्षित करने के हेतु ***जय देवगुरु शक्ति सामाजिक कल्याण समिति*** एक रजिस्टर्ड एन.जी.ओ. है। हमारी इस संस्था में कई गणमान्य व्यक्ति व वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक जुडे है जिनसे हम अपने इस एन.जी.ओ के माध्यम से किसानों को हर स्तर पर स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि से जुडी नवीन तकनीक (खाद, बीज, कीटनाशक, नवीन मशीनों के प्रयोग) हेतु जागरूक कर रहे है। जैसा की आप सबको ज्ञात है की हमारे देश में किस तरह से सारे किसान कई मूलभूत समस्याओं से जूझ रहे हैं, इसके लिए हम सब को मिल कर आगे आना होगा तभी हम अपने अन्नदाताओं की स्थिति सुधार पायेंगे। हमारे इस प्रयास में हम आपका सहयोग चाहते हैं जिससे हम देश के किसानो के लिए कुछ अच्छा कर सकें।

श्रीमान से निवेदन है की अपने क्षेत्र में भी हमारे एन.जी.ओ की टीम को कार्य करने का अवसर प्रदान करें। हमारी टीम ग्रामीण क्षेत्रों में जहां 50-200 किसान एकत्रित हो सकें, कृषि वैज्ञानिक व आपकी कंपनी के व्यक्ति को साथ ले उन्हें शिक्षित करती है। अतः इस अच्छे कार्य के लिए हमारे एन.जी.ओ. को बजट आवंटित करें। हमारा खाता क्र. 881010110009622, IFS Code No. BKID0008810 ***जय देवगुरु शक्ति सामाजिक कल्याण समिति*** के नाम से ***बैंक ऑफ इण्डिया,*** विजय नगर शाखा, इन्दौर (म.प्र.) में है। कृपया देय राशि हमारे खाते में NEFT करें अथवा चैक/ड्राफ्ट उपरोक्त दिए हमारे डाक पते पर भेजने का कष्ट करें। हमारा संस्थान गरीबों, ग्रामीणो को शिक्षित करने हेतु कुछ अच्छा करने जा रहा है जिसमें आपका दिल से दिया सहयोग अपेक्षित है।

भवदीय
वास्तेः जय देवगुरु शक्ति सामाजिक कल्याण समिति
देवराज चौधरी
(देवराज चौधरी) अध्यक्ष

रायसेन से 47 देशों को बासमती निर्यात - सीएम

मुख्यमंत्री डा. यादव ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी के माध्यम से किसान गरीब, युवा और महिला चार श्रेणियां के लिए अलग-अलग वर्ग में काम हो रह है। गर्व है कि अकेला रायसेन ही 47 देशों में बासमती चावल का निर्यात कर रहा है। बासमती और शरबती के क्षेत्र में कोई कमी नहीं है । कुर्सी पर बोझ बनकर नहीं बैठना । केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह ने कहां कि किसानों की तकदीर बदलना ही उनका लक्ष्य है, अन्यथा कुर्सी पर बोझ बनकर बैठने का कोई औचित्य नहीं । कृषि वैज्ञानिकों ने म.प्र. के 4 जिलों रायसेन, विदिशा, सीहोर और देवास की मिट्टी - जलवायु का अध्ययन कर एक विशेष कृषि रोडमैप तैयार किया है। 3 हैंगरो में 300 अधिक स्टॉल 13 अप्रैल तक चलने वाले इस आयोजन में लगी प्रदर्शनीं में 300 से अधिक स्टॉल लगाए गए हैं। आयोजन स्थल को 3 बड़े हैंगरों में बांटा गया । पहले हैंगर में कृषि यंत्र, सिंचाई व नवाचार के स्टॉल हैं। दूसरे में पशुपालन, डेयरी, सहकारी संस्थाएँ शामिल है। तीसरे में मुख्य समारोह, तकनीकी सत्र आदि ।

उज्जैन कृषि मेले की चित्रमय झलकियां, एक सफल कार्यक्रम

धार कृषि मेले की चित्रमय झलकियां, एक सफल आयोजन

जय किसान – जैविक प्रधानः आज आत्मा परियोजना संचालक एवं कृषि विभाग, जिला धार द्वारा आयोजित जिला स्तरीय कृषि विज्ञान मेला व सप्ताहित जैविक हाट बाजार के समापन कार्यक्रम में सहभागिता कर क्षेत्र के किसान भाइयों एवं बहनों से आत्मीय संवाद किया। इस अवसर पर किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा जैविक खेती के महत्व के बारे में जानकारी दी। साथ ही माननीय प्रधानमंत्री श्री छंतमदकतं डवकप जी एवं प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव जी के नेतृत्व में किसानों के हितार्थ संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी साझा की। किसानों को जैविक खेती के लाभों से भी अवगत कराया, जिससे वे कम लागत में बेहतर उत्पादन प्राप्त कर अपनी आय बढ़ा सकें और पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान दे सकें। इस अवसर पर आत्मा परियोजना संचालक श्री त्रिलोकचंद जी, श्री डी.डी मोहनिया जी सहित बड़ी संख्या में क्षेत्र के किसान भाई बहन उपस्थित रहे।

Supported by
Organised by
DPIIT
AIPMA
CPMA
India's Largest Plastic Recycling Show
Powering the Plastics Transformation
Exhibit where innovation turns into real opportunity
Scan to register
GCPRS
3rd GLOBAL CONCLAVE ON PLASTIC RECYCLING AND SUSTAINABILITY
INTERNATIONAL EXHIBITION
2 - 5 JULY, 2026
Hall No. 6, Bharat Mandapam, New Delhi, INDIA
www.gcprs.org
GCPRS - Global Conclave on Pl...

India Farm-Tech
AN EXHIBITION ON FARMING TECHNOLOGY
BOOK YOUR STALL NOW
14 - 15 - 16
FEBRUARY 2027
ICAR(CIAE) GROUND
NABI BAGH, BERASIA ROAD
BHOPAL
MADHYA PRADESH
Madhya Pradesh's Most Successful Exhibition
International Exhibition on
Agriculture, Dairy & Horticulture Technology
Radeecal
Colossal
STALL BOOKING CONTACT DETAILS
M: +91 99740 29797, +91 75677 02025

Where Innovation Meets Indian Farming
भारत AgriTech
Conference Exhibition Shopping
8-9-10-11 JAN
2027
GRAND EDITION – 2027
BIGGER • BETTER • BOLDER

AGROWORLD EXPO
2026
20 21 22 23 NOV
JALGAON (MH)
26th EDITION
26th EDITION

24th Edition
AGRI INTEX 2026
(An Event of CODISSIA Intec Technology Centre)
POULTRY In Hall H
Ready to Exhibit Your
Agri-Tech & Farming Innovations?
9 10 11 12 13 July 2026
Codissia Trade Fair Complex, Coimbatore, Tamilnadu, India

A TRUSTED NAME IN FIELD OF ONION SEEDS
New
AGRI COS SEEDS
BIOCELL
WELDON SEEDS
WS
Welcome's
Trusted Seeds
: Autho. Distributor :
Deepak Enterprises
229-230, Prem Trade Centre, Maharani Road, Indore
Tel. : 0731-4083667, email : deepakenterprises229@gmail.com
Mahesh Gupta : 94253 16637
Vijay Gupta : 94254 00983
Deepak Gupta : 95222 55534

Tirupati
तिरूपति ग्रीनहॉउस नर्सरी
AN ISO 9001:2008 Certified Company
गेंदा रोप, सीजनल सीडलिंग तथा मिर्ची
टमाटर एवं बेंगन के रोप हमेशा उपलब्ध।
"विशेषता : पपीता पौधे एवं फलदार पौधे"
• 786 ताइवान पपीता पौधे • संतरा • मौसंबी • आम, • अमरूद • नींबू • चीकू
• अनार • जामुन • सुरजना • केला • सीताफल • फॉरेस्ट्री पौधे • सजावटी
पौधे • कॉरपेट लॉन एवं अन्य सभी प्रकार के पौधे उपलब्ध है।
नर्सरी :
ग्राम सिरलाय, तह. बड़वाह,
जिला खरगौन (म. प्र.) फोन : 07280-222999
मो. : 9479457731/41/51/21/62/20/32
ईमेल : tirupatinursery@gmail.com,
वेबसाईट : www.tirupatinursery.com
इन्दौर ऑफिस :
202, प्रथम तल, देवधर कॉम्पलेक्स,
नसिया रोड, पेट्रोल पम्प के पास,
इन्दौर (म. प्र.)
फोन : 0731-4293661,
मो. : 9479457742/20/51

Ellora
एलोरा नॅचरल सिड्स प्रा.लि.
From seed to market...!
DSIR
DEPARTMENT OF SCIENTIFIC & INDUSTRIAL RESEARCH, GOVT. OF INDIA
RECOGNIZED IN-HOUSE R&D
उत्कृष्ट एवंम दर्जेदार प्याज बीज, मक्का बीज व सब्जी बीज देणेवाली भारत की अग्रगण्य कंपनी...!
मध्यप्रदेश के सभी प्रमुख वितरक के पास मौसम के अनुसार उपलब्ध।
रजि. ऑफिस : प्लॉट नं. ४, गट नं. ११७, नक्षत्रवाडी, एच.डी.एफ.सी. बैंक के पास, पैठण रोड,
छत्रपती संभाजीनगर (औरंगाबाद) (महाराष्ट्र). ग्राहक सेवा केंद्र :- 7030643643
Contact :- MP : 8010906148, 8010906146, RM : 7768005383

TAKII
VNR
Ganga Kaveri
mahyco
DSPL SEEDS
अवतार सीड्स
seedco
Ankur Seeds
Ahead of Times... TEAM SEEDS
Nutech
NOBLE SEEDS
syngenta
NOVEL
सर्वोत्तम बिज
FS SUPER SEEDS
Gujarat Farm Seeds
Chandra SEEDS
PYRAMID SEEDS
Akshay SEEDS
SUNGRO SEEDS
univeg
Krishi Kalyan Seeds
BASF
JAIN BEEJ BHANDAR
AUTHORISED DISTRIBUTOR AND WHOLESALER OF HYBRID AND RESEARCH SEEDS OF VEGETABLES FLOWERS, GRAINS AND FODDER
785, Scheme No.31, Panchsheel Nagar, Loha Mandi, INDORE (M.P.) - 452001
info@jainbeej.com www.jainbeej.com fb.com/jainbeej
+91-731-2760847, 2367162 / 4036306

RNI No. MPMUL/2010/37954

सोना उगले मिट्टी

सेंट्रन

बने आपकी नई पहचान

insecticides (INDIA) LIMITED

हर क़दम, हम क़दम